जनज्ञान

हिन्दी साप्ताहिक

बोध के उद्घोषक

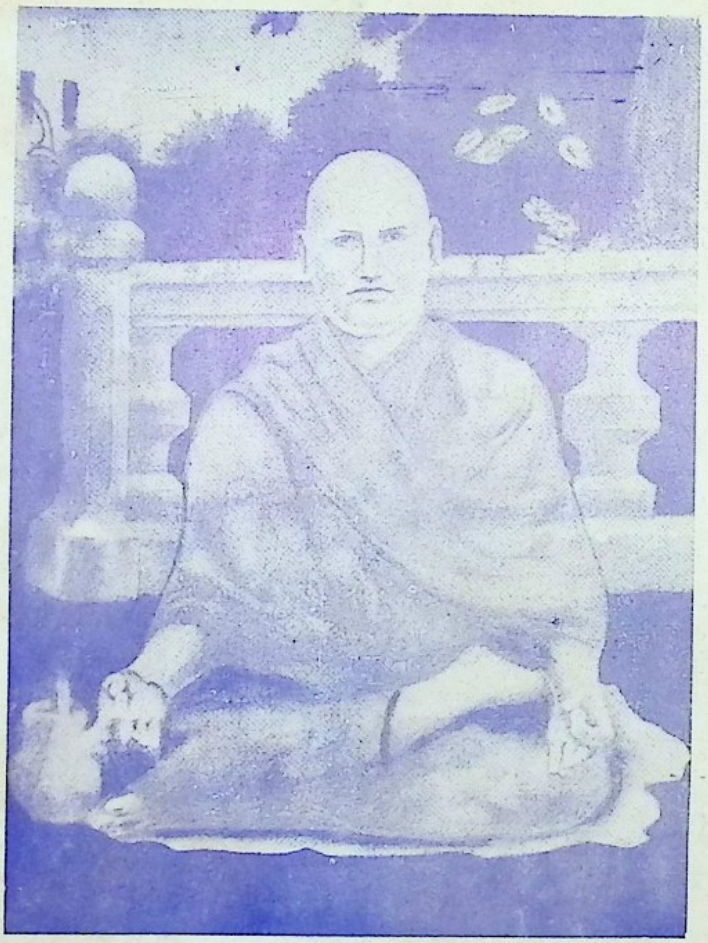

महर्षि दयानन्द सरस्वती

रविवार : २० फरवरी : शिवरात्रि १९७७

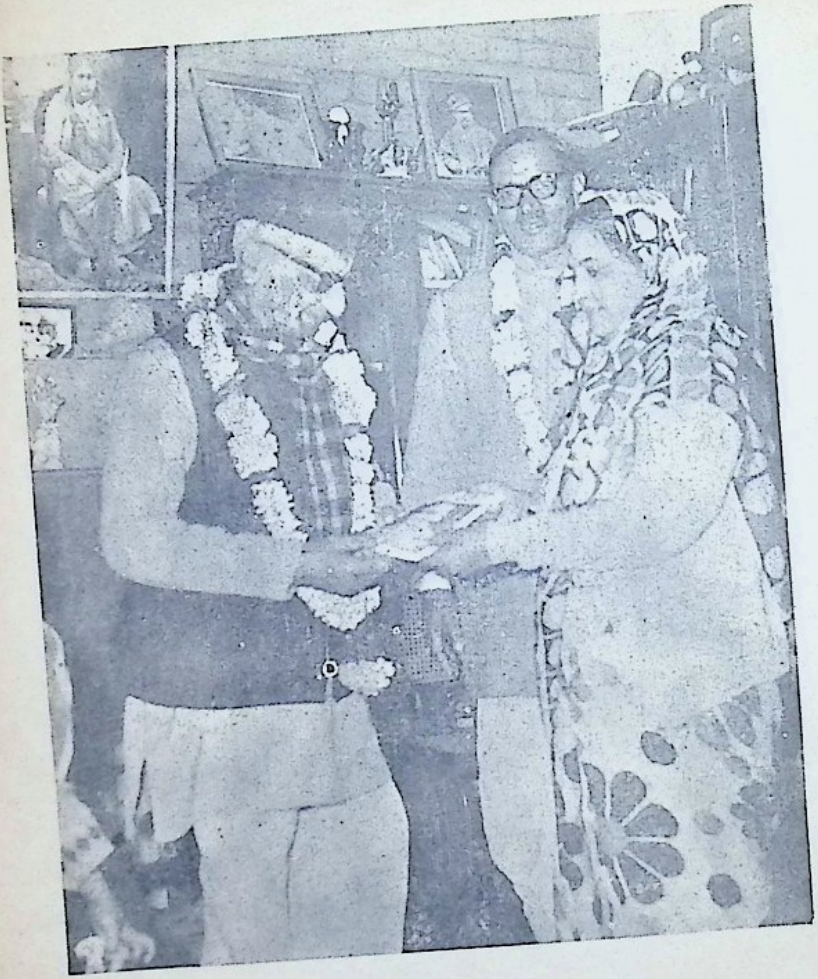

मराठी [मासिक]
का विमोचन
राष्ट्र रत्न
आचार्य उदयवीर शास्त्री
ने किया

पास में खड़े हैं
समारोह के अध्यक्ष
प्रो० रत्नसिंह दर्शनाचार्य

संस्थान की अध्यक्ष
पं० राकेश रानी ने
प्रथम प्रति
आचार्य उदयवीर जी
को भेंट की

शिव रात्रि के पर्व पर आर्य जन ११)—२५)—५१। या १०१) या अधिक
वेद प्रचार यज्ञ की सफलता के लिए भेजना अपना धर्म
समझ सहयोग दें।

ओ३म्

कृण्वन्तो-विश्वमार्य्यम्

जन-ज्ञान

वेदाः

हिन्दी साप्ताहिक — नई दिल्ली

वर्ष २ ● रविवार : शिवरात्रि १९७७ : २५ फाल्गुन २०३३ ● अंक १

सम्पादक
पंडिता राकेश रानी

दूरभाष : ५६६६३९
: २०१५८४

पता : वेद मंदिर
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१, नाईवाला]
करौल बाग, नई दिल्ली-११०००५

मूल्य एक प्रति ५० पैसे
वार्षिक मूल्य २०)
विदेश में ६ पौंड (हवाई डाक से)
४ पौंड : (समुद्री डाक से)
आजीवन ३०१ रु०

★

दयानन्दाब्द : १५१
संवत् सृष्टि : १९७०७२९७७

कौन करे निर्माण.....?

दयानन्द के दिव्य स्वप्न का कौन करे निर्माण ?
अन्धकार में चेतनता खो, व्यथित हुआ संसार !
पथ विभ्रम में विकल दीन सा, किसको रहा पुकार !
और निराशा की आँधी में, डगमग-डगमग प्राण—
सोच रहे हैं चला चलूँ मैं, कहाँ करूँ अभियान ?

कौन बताए, जग को बोलो, जीवन लक्ष्य महान् !
दयानन्द के दिव्य स्वप्न का कौन करे निर्माण ?

दूर-दूर तक एक प्रश्न है, एक राह हो कौन ?
जाति, पंथ, मत, वाद, दुर्ग को तोड़े, कैसे, कौन ?
कौन करे मानव संरक्षण, दानव का संहार ?
कौन सभी को दे पाएगा, शान्ति सुधा उपहार ?

गूँज रहे हैं मस्तिष्कों में, प्रश्न यही अविराम !
दयानन्द के दिव्य स्वप्न का कौन करे निर्माण ?

जटिल वेदना, सिसक रहे हैं मानवता के तान !
महानाश की ज्वालाओं, में, धधक रहे वरदान !
उजड़ चुकी है रम्य वाटिका, धरती है शमशान !
लाश पड़ी है मनुज पुत्र को, क्रन्दन की है तान !

टूटी वीणा गा न सकेगी, दिन पाए बलिदान !
दयानन्द के दिव्य स्वप्न का, कौन करे निर्माण ?

यही प्रश्न हैं जिनका उत्तर, माँग रही हूँ आज !
कौन बजाएगा फिर उनको, टूट चुके जो साज !
सत्य ज्ञान गौरव को भू पर, फैलाएगा कौन !
"ओ३म्" ध्वजा को लेकर, भाई ! बढ़ पाएगा कौन ?

कौन करेगा, प्राण दान दे, नूतन युग आह्वान !
दयानन्द के दिव्य स्वप्न का कौन करेगा निर्माण ?

—राकेश रानी

शिवरात्रि के पवित्र ऐतिहासिक दिन

हम संकल्प लेते हैं—कि—

१—धरती पर वैदिक विचारधारा का साम्राज्य स्थापित करेंगे।

२—मतवाद वर्ग जन्मगत पार्थक्य भावना को समूल समाप्त करेंगे।

३—अज्ञान—अन्याय—और अभाव के विरुद्ध युद्ध करते रहेंगे।

४—पाखंड—अन्धविश्वास और सत्य विरुद्ध सभी विचारधाराओं पर प्रबल प्रहार करेंगे।

५—मानव मात्र की एकता, समानता के लिए प्रयत्न करते हुए सभी की शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए हमारा अभियान जारी रहेगा।

इन संकल्पों के सभी शिवरात्रि पर व्रत धारण करें। यज्ञ वेदी पर बैठकर प्रतिज्ञा करें आगे बढ़ने की।

नए युग की आधार शिला पवित्र वैदिक विचारों की नींव पर रखना हमारा कर्त्तव्य है। धरती को स्वर्ग बनाना हमारा लक्ष्य है। मनुष्य मात्र की उन्नति और शांति हमारा कार्यक्रम है।

राज्य पद मोह के प्रलोभन ठुकराकर परमात्मा के प्रकाश से ज्योतिर्मय हो, प्यार के गीत गाते, मुस्कराते, प्रेम एकता और सौहार्द की गंगा बहाते हम अपना विजय अभियान जारी रखें।

सत्य हमारे साथ है विजय हमारी होगी। प्रेम के अस्त्र से विश्व विजय हम करेंगे, हम सब को एक बनाएंगे, एकता का मंत्र सभी गाएंगे और सारे भेद मिटा कर, द्वेष जलाकर, युद्ध घृणा को समाप्त कर मनुष्य को मनुष्य बनाएंगे।

मन को पवित्र कर वहाँ प्रियतम प्रभु को बिठाओ, देखो तुम कितने ज्योतिर्मय 'शिव' बनोगे।

शिवरात्रि के दिन 'शिव' के दर्शन मन मंदिर में हम कर सकें, यही शिवरात्रि का संदेश है।

शिवरात्रि के दिन तक

—आप २०१) भेजकर चारों वेद व १०१) का साहित्य प्राप्त कर सकते हैं।

—यदि आप साहित्य न लेना चाहें तो १५१) और कवर मूल्य १४) कुल १६५) में आप को चारों वेद मिल सकते हैं।

इन दोनों सुविधाओं के लिए जन-ज्ञान का सदस्य होना अनिवार्य है।

३०१) भेजकर आजीवन सदस्य बनिए और १५१) का साहित्य उपहार में प्राप्त कीजिए।

जन-ज्ञान (मासिक) के अधिक से अधिक सदस्य बनाएं। २०) का उपहार एक सदस्य बनाने पर दिया जा रहा है।

पुराने सदस्य तीन वर्ष का अपना शुल्क ६०) भेजकर सामवेद भाष्य मुफ्त कर प्राप्त सकते हैं।

वेद मंदिर निर्माण व वेद-प्रचार के लिए उदारतापूर्वक अधिक से अधिक दान भेजना न भूलें।

प्रत्येक आर्य कम से कम ११)
शिवरात्रि के दिन वेद-प्रचार यज्ञ की
सफलता हेतु अवश्य भेजे।

इस समय आप के सहयोग विश्वास बल पर हम आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

आलोचनात्मक लेख न भेजें

सभी लेखकों से प्रार्थना है कि वे आर्यसमाज के संगठन या व्यक्ति विशेष की आलोचना करने वाले लेख न भेजें।

इस संबंध में कोई बात कहनी हो तो मुझे व्यक्तिगत पत्र द्वारा सूचित करें क्योंकि संस्थान के किसी भी समाचार पत्र में ऐसे लेख न छापने का निर्णय घोषित कर दिया गया है।

आशा है सभी सिद्धान्त सम्बन्धी लेख भेजकर सहयोग प्रदान करेंगे। □ —राकेश रानी

राजस्थान में वैदिक विचारधारा प्रसार का संकल्प

आर्यसमाज विचार परिषद के सर्वसम्मत निर्णय

अजमेर ६ फरवरी, यहां आर्यसमाज केसर गंज में श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की अध्यक्षता में प्रातः ११ बजे आर्य समाज विचार परिषद का आरम्भ हुआ।

इससे पूर्व दयानन्द संस्थान के आचार्य, सुप्रसिद्ध विद्वान् संन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती ने अपने ४५ मिनट के उद्‌बोधन भाषण से परिषद का उद्‌घाटन हुआ।

पं० भारतेन्द्र नाथ जी ने विचार परिषद का उद्देश्य केवल यह है कि राजस्थान में वैदिक विचारधारा तेजी से फैले और आर्य समाज संगठन सुदृढ़ हो।

पश्चात् आर्य समाज विचार परिषद के संयोजक श्री पं० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित ने दिल्ली में आयोजित विचार परिषद की पृष्ठभूमि व स्वीकृत प्रस्ताव पढ़ कर सुनाए जिन की सभी ने सराहना की। सभी की यह पुनीत भावना भावना थी कि यह प्रस्ताव शीघ्र से शीघ्र व्यवहार में आएँ।

विचार परिषद की प्रथम बैठक ११ से १ तक व द्वितीय बैठक ३ से ५ बजे तक सम्पन्न हुई। दोनों बैठकों की अध्यक्षता श्री वाब्ले जी ने अत्यन्त योग्यता, कुशलता व निष्पक्ष भावना से की। उन्होंने अनेक बार अपने-अपने सूझ-बूझ भरे निर्देशन भी दिये।

बैठक में प्रदेश के विभिन्न आर्यसमाजों के ५० के लगभग प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिनमें श्री रविदत्त जी आर्य उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री भगवती प्रसाद जी प्रचार मंत्री सभा, श्री श्रीकरण जी शारदा मंत्री परोपकारिणी सभा, श्री भवानीलाल जी भारतीय, श्री प्रो० धर्मवीर, श्री आर्य रामरख पुरोहित मंत्री आर्य समाज पीपाड़ शहर, श्री रासासिंह जी, श्री रमेश चन्द्र शास्त्री, कविराज श्री धर्मसिंह कोठारी, श्री रामनिवास आर्य, नसीराबाद, सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री व लेखक डा० सूर्यदेव शर्मा, श्री बाबूराम, ब्रह्म कवि, श्री पुखाराम आर्य पाली, श्री भूदेव शास्त्री, प्रभृति के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

बैठक का समापन पं० भारतेन्द्र नाथ जी के प्रेरक संदेश के साथ हुआ, उनका आवाहन था—

निराशा छोड़कर आगे बढ़ो। विजय निश्चित है। संसार को वैदिक धर्म की शरण में लाओ और अपनी पूरी शक्ति वेद-प्रचार में ही लगाओ।

सभी को नयी प्रेरणा और स्फूर्ति का संदेश देकर परिषद सम्पन्न हुई। □

आर्य समाज चौक प्रयाग का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चौक प्रयाग का १०१वां वार्षिकोत्सव २ से ६ फरवरी तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें अनेक प्रमुख आर्य संन्यासी एवं नेता तथा धर्मोपदेशक एवं भजनोपदेशक पधारे।

कोटला फिरोजशाह दिल्ली में ऋषि मेला

आर्य युवक परिषद्, दिल्ली के तत्वावधान में १६ फरवरी के मध्यान्ह १२ बजे से कोटला फिरोजशाह नई दिल्ली में आयोजित ऋषि मेला के मुख्य मंच पर स्कूलों के छात्र-छात्राओं की राष्ट्रोद्धारक महर्षि दयानन्द विषय पर भाषण प्रतियोगिता भी सम्पन्न होगी। सर्वप्रथम आने वाली संस्था को सत्यप्रिया चल विजयोपहार एवम् प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय छात्र-छात्राओं को अलग-अलग ६ एवं दो-दो उत्साहवर्धक पारितोषिक दिए जाएँगे।

अजमेर में ६ फरवरी को आयोजित

आर्यसमाज विचार परिषद के सर्वसम्मत प्रस्ताव स्वीकृत

* * *

१—राजस्थान के सभी आर्यसमाज अपनी शक्ति भर सार्वदेशिक सभा द्वारा मान्यता प्राप्त आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को सहयोग दें व उसे आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाएँ।

२—प्रांत में जो व्यक्ति विघटन की प्रवृत्तियों को बल दे रहे हैं उन्हें किसी भी प्रकार का सहयोग न दिया जाये।

३—जो अवैदिक विचारधारा हैं उन के विरोध में सक्रिय पग उठाए जाएँ और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अवैदिक विचारधारा को समाप्त करने के लिए प्रभावशाली कार्यक्रम बनाएँ।

४—सत्यार्थ-प्रकाश की शताब्दी मनाने की सभी तैयारी करें और **प्रत्येक व्यक्ति प्रतिमास ५ सत्यार्थ प्रकाश बाँटने का यत्न करें।**

५—प्रत्येक आर्यसमाज अपने-अपने क्षेत्र में बुद्धिजीवीवर्ग को वैदिक विचारधारा से परिचित कराने के लिए योजना बना कर कार्य करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के संघटन को अधिक व्यापक और शक्तिशाली बनाने के लिए निम्नलिखित साधनोपायों को अपनाया जाए—

१—प्रत्येक जिले में वहाँ के आर्यसमाजों के पुरुषार्थ को संयुक्त करके जिला उप-सभाओं का संघटन किया जाए। प्रान्तीय सभा के मार्ग दर्शन में प्रत्येक जिले में प्रचार कार्य की व्यवस्था का भार जिला सभाओं को सौंपा जाए।

२—प्रांतीय सभा की ओर से प्रत्येक जिले के लिए एक अधिष्ठाता या मण्डलाधीश नियुक्त किया जाए।

३—प्रत्येक जिले में वर्ष भर में कम-से-कम १२ आर्य समाजों की स्थापना की जाए।

४—शिथिल आर्य समाजों को जागृत तथा मृत को पुनर्जीवित किया जाए। □

आर्य समाज जोड़ासाकूं (कलकत्ता) का चुनाव

आर्य समाज जोड़ासाकूं (कलकत्ता) के निर्वाचन में श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल प्रधान, श्री ताराचंद राठौर, श्री चन्द्रवलि गुप्त, श्री नामवर सिंह तथा श्री सुबोध कुमार वर्मा उप-प्रधान, श्री लोकनाथ चौधरी मंत्री, श्री अशोक आर्य सं० मंत्री एवम् सर्वश्री स्वतन्त्र कुमार, बालेश्वर आर्य, सहदेव शर्मा उपमंत्री तथा श्री शांकर लाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए। ★

आर्य समाज शाहपुर (अहमदाबाद) नित्य सत्यार्थप्रकाश कथा

आर्य समाज विचार परिषद् में आचार्य उदयवीर जी द्वारा प्रस्तुत एवं परिषद द्वारा पारित प्रस्ताव के अनुसार आर्यसमाज शाहपुर ने ३१ जनवरी से सत्यार्थ प्रकाश की दैनिक कथा का आयोजन किया है तथा दैनिक सत्संग की भी व्यवस्था की गई है। समाज के सामान्य व्यय को छोड़कर शेष सारी आय को आर्य साहित्य प्रचार एवं वैदिक धर्म के प्रचार पर लगाने का भी निश्चय किया गया है।

*

अन्तर्जातीय विवाह

टंकारा के विद्यार्थी रहे श्री मेघश्याम वेदालंकार एम. ए. (क्षत्रिय परिवार में जन्मे) अलीगढ़ निवासी का विवाह वैश्य परिवार की कन्या एवम् गुरुकुल हाथरस की स्नातिका गीता शास्त्री एम. ए. के साथ आर्य समाज सासनी में हुआ। इस अवसर श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री, अक्षय कुमारी जी, कमला कुमारी जी एवम् टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री रामनाथ सहगल तथा श्री चिन्तामणि आदि ने वर वधु को आशीर्वाद प्रदान किया। ★

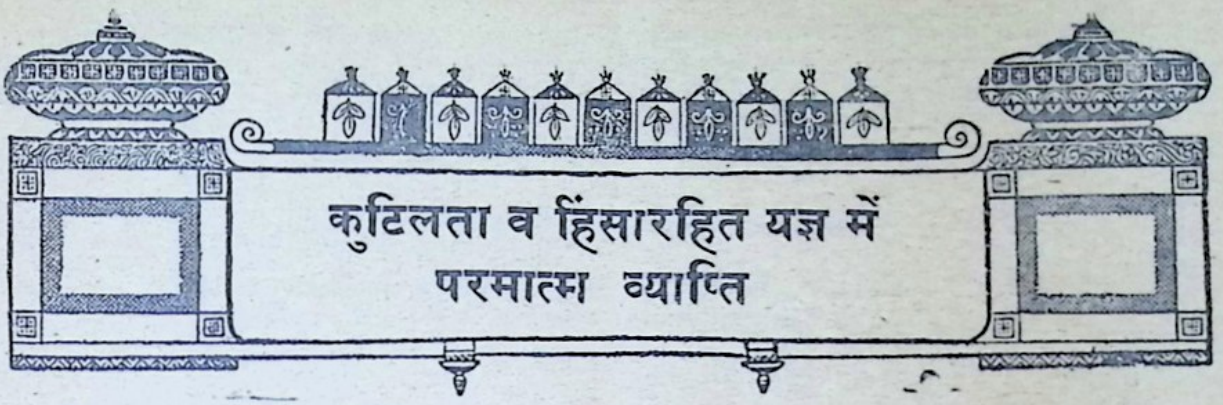

कुटिलता व हिंसारहित यज्ञ में परमात्म व्याप्ति

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि स इद् देवेषु गच्छति ॥

ऋ० १. १. ४ ॥

विनय

हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो हो जायें। परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव ! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूँकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य शक्तियों के अर्थात् देशों के द्वारा ही सब कुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वरा अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो जरूर होना चाहिए। पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ संगठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं, तभी तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता: उन्हें नहीं पहुँचता—सफल नहीं होता। हे प्रभो ! अब जब हम कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जायें तो हे प्रकाशक देव ! हमारी अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना, हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि "हे अग्ने ! जिस कुटिलता व हिंसा-रहित यज्ञ को तुम सब तरफ से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल वही यज्ञ देवों में पहुँचता है अर्थात् दिव्य फल लाता है—सफल होता है।" सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफला नहीं होगी।

शब्दार्थ

(**अग्ने**) हे परमात्मनः ! (**त्वं**) तुम (**यं**) जिस (**अध्वरं यज्ञं**) कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को (**विश्वतः परि भूः असि**) सब तरफ से व्याप लेते हो (**स इत्**) केवल वही यज्ञ (**देवेषु गच्छति**) दिव्य फल लाता है।

एक अत्यन्त खोजपूर्ण मौलिक अनुसन्धात्मक लेख

—डा० परमानन्द M.A.Ph.D.

महाभारत के महायुद्ध में आणविक अस्त्रों का प्रयोग

दिल्ली विश्वविद्यालय के फिजिक्स (भौतिकी विभाग) के प्राध्यापक श्री एस. के. त्रिखाजी ने कुरुक्षेत्र के निकटवर्ती प्रदेशों का विस्तृत सर्वेक्षण (Survey) किया है। उन्होंने अपनी रिसर्च (गवेषणा) और प्रयोगों (Experiments) के परिणामस्वरूप यह रहस्योद्घाटन किया है कि उन्हें ऐसी प्रामाणिक सामग्री तथा तथ्य उपलब्ध हुए हैं जिनके आधार पर यह सिद्ध हो जाता है कि 'परमाणु शक्ति' विद्या के विविध आयुधों का प्रयोग महाभारत-संग्राम में वस्तुतः हुआ था। यह बात उन्होंने साहित्यिक आधार पर नहीं कही प्रत्युत अपने वैज्ञानिक परीक्षणों के परिप्रेक्ष्य में स्थापना की है।

गत दिसम्बर मास में उन्होंने एक प्रारम्भिक जांच-पड़ताल के लिए जो परीक्षण किया था उसके परिणामस्वरूप उन्होंने यह घोषणा की है कि कुरुक्षेत्र मैदान के कुछ भागों में तथा निकटवर्ती क्षेत्रों में अब भी Radio-Activities (परमाणु-आयुधों के सक्रिय तरंगें) चाहे वे बहुत धीमी और निर्बल हो चुकी हैं तथापि वे 'अपेक्षाकृत' समुन्नत स्तर की हैं। इतने लम्बे सहस्रों वर्षों के समय बीतने पर ऐसा होना नैसर्गिक है। प्रोफेसर महोदय की धारणा है कि इसका कारण 'ब्रह्मास्त्र' का प्रयोग है जिस का विशद वर्णन (एवं प्रयोग) महाभारत ग्रन्थ में 'सर्वातिशय-शक्तिशाली' अस्त्र के रूप में हमें मिलता है।

उन्होंने दूसरा एक और विस्तृत पर्यवेक्षण एवं परीक्षण इस जनवरी में भी किया है जिसमें उन्होंने "जीजर-मूलर-कौण्टर" (Geiger Muller Caunter) नामक विशिष्ट यन्त्र की सहायता ली थी। उससे प्रमाणित हो गया है कि 'आमीन' (करनाल जिला), पिहोवा, कैथल, गुहाना, कलयात (जींद) आदि भू-भागों में तो ऊँचे दर्जे की रेडियो-तरंगें (Radio-Activities) हैं। महाभारत काव्य के अनुसार ये वे ही प्रदेश हैं जहाँ वास्तविक युद्धस्थली थी।

पिहोवा और कलयात के भू-खण्डों के भू गर्भों के तथा कई अन्य स्थानों पर सरोवरों के नीचे सुरंगें भी मिली हैं। इनके अतिरिक्त धरातल के नीचे अन्तरालों में "चन्देर" कूप जैसे कूप कुरुक्षेत्र, पिहोवा और कैथल में मिले हैं। प्रोफेसर त्रिखाजी की स्थापना है कि ये स्थान "शरण-स्थान" (Shelters) थे जहाँ जाकर योद्धा लोग अणु-शस्त्रों के मारक प्रभाव से बचने के लिए छिपते थे।

कुछ स्तूप (Statues), कपिल-सरोवर की खुदाई के समय कलयात के निकट उपलब्ध हुए हैं जिनमें ऊँचे स्तर की "रेडियो-सक्रियता" पाई गई है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि ये स्तूप भारत-युद्ध के समय विद्यमान रहे होंगे।

प्रो० त्रिखा जी ने दृढ़ता से घोषणा की है कि पिहोवा के धरातल के चार फुट नीचे भू-गर्भ की गहराई में "रक्त-वर्णा" मेदिनी पाई गई हैं जो भारत-समर में वर्दा" "रुधिर-नदी का ही रूपान्तर है। उनका सुझाव है कि इस "भट्टी" का रासायनिक परीक्षण (Chemical Examination) किया जाना अनिवार्य है। इससे कई तथ्य प्रकाश में आयेंगे।

प्रो० त्रिखा जी की प्रबल इच्छा है कि ये "परीक्षण-विश्लेषण" एवं "सर्वेक्षण" व्यापक रूप से होने आवश्यक हैं जिससे वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध हो सके कि महाभारत के महायुद्ध की भूमि कुरुक्षेत्र ही था और महाभारत-संग्राम की कथा एक वास्तविक ऐतिहासिक घटना थी।

प्रो० त्रिखा जी की उल्लिखित स्थापना उनके गहन "भौतिकी" विज्ञान के द्वारा किये गये विश्लेषणों के आधार पर है। अभी वे एतत्संबंधी और खुदाई और वैज्ञानिक परीक्षण कर रहे हैं—हमें आशा है कि इससे अतीत के गर्भ में छिपे बहुत से बहुमूल्य तथ्य प्रकाश में आ येंगे।

परन्तु यदि हम महाभारत को ध्यान से पढ़ें और उनके वर्णनों को कपोल-कल्पित कहने का दुस्साहस न कर के उस अनन्त ज्ञान-सागर महाग्रन्थ को समझने का प्रयत्न करें तो वास्तव में ही हमें पता चलेगा कि उस समय की लड़ाई (युद्ध) की प्रक्रिया में विस्मयजनक अणु-आयुधों का प्रयोग बहुलता से नियन्त्रित पद्धति पर हुआ था। महाभारत के युद्ध पर्व में इन शस्त्रास्त्रों की चर्चा एवं प्रयोग के प्रभाव भी वर्णित हैं—उन्हें आँखों से ओझल करना किसी भी भारतीय-देशभक्त के लिए लज्जा का कारण है।

हमें अपनी सांस्कृतिक दायित्व का ज्ञान होना चाहिए। इस लेख में इसका विस्तृत वर्णन करना तो कठिन है—केवल संकेत मात्र कुछ अस्त्रों के प्रभाव हम नीचे लिखते हैं, जैसा कि महाभारत में वर्णित है—

१. अशनि—यह प्रक्षेपणास्त्र था। आजकल के Misiles) मिजाईलस् की तरह इसे इच्छित दूरी पर फैंका जाता था। यह 'अष्टचक्र' युत भी होता था। इसके प्रयोग करने पर आँखों को चुन्धियाने वाली अति तीक्ष्ण, तीव्र, एवं सहसा भस्मसात् करने वाली बिजली निकलकर शत्रु की सेना को ऐसा विध्वंस करती थी कि जैसे आकाश की बिजली किसी पर आन पड़ती है। क्षण-मात्र में घोड़े रथों सहित शत्रुको राख का ढेर कर देती थी।

२. शतघ्नी—तोप सा महास्त्र। यहाँ 'शत' का अर्थ 'सौ' नहीं है—'सैकड़ों' है। इसके एक प्रयोग से ही सैकड़ों को 'अग्नि गोलों' से भूना जा सकता था। ऋषि दयानन्द ने अपने सत्यार्थप्रकाश में इसे 'तोप' माना था। किलों के तथा नगरों की प्राचीरों पर भी इन्हें रखा जाता था। भगवान् कृष्ण की 'द्वारवती' की प्राचीरों पर इन्हें रखा गया था।

३. ब्रह्मास्त्र—इसका प्रयोग अत्यन्त सीमित कर दिया गया था। क्योंकि यह प्रलयंकर माना जाता था। इसके प्रयोग से मानवी सृष्टि का अवसान सा वर्णित किया गया है। यह अस्त्र अन्तरिक्ष के परमाणुओं को छिन्न-भिन्न करने की उग्र क्षमता रखता था। अतः इसका प्रयोग निषिद्ध था।

४. त्वष्टास्त्र—यह शत्रु की बुद्धि-विवेक को नष्ट करके उसे व्यामुग्ध कर देता था जिससे वह अपनी सेना के सैनिकों को शत्रु समझकर आपस में मारकाट करने लग जाता था। अर्जुन ने संतप्तकों के गणों पर इसका प्रयोग किया था। वे अपनों को अर्जुन समझने लगे थे—स्वयं मारे गये थे।

५. नारायणास्त्र—द्रोणाचार्य के मरने पर अश्वत्थामा ने नारायणास्त्र चलाया था। इससे हजारों-लाखों की संख्या में प्रदीप्ताग्र तीव्र ज्वालाओं वाले प्रक्षेपणास्त्र (Misiles) शत्रुओं की सेनाओं पर व्यापक रूप से बरस कर उन्हें भस्मसात् करने की क्षमता रखते थे। वे साँपों की तरह वेगवाहिनी प्रवहमान आणविक तरंगें सी होती थीं। महाभारत में लिखा है कि इनमें से "काष्णायस" (बम्ब) के गोले से भी निकलते थे। वे नैश अन्धकार में भी तरल तारों की तरह चमककर शत्रु-स्थिति का पता भी बता देते थे। विचित्र रहस्यमय बात यह भी लिखी है कि 'न्यस्त-शस्त्र' बे-हथियार भूमि पर खड़े नम्र निहत्थे शत्रुओं को नारायणास्त्र छोड़ देता था। भगवान् कृष्ण को इसके प्रयोग और बचाव का ज्ञान था। उन्होंने उस समय इसी उपाय से पाण्डव सेना को बचाया था।

ब्रह्मास्त्र और नारायणास्त्र आयुधों का प्रयोग सर्वथा नियंत्रित एवं निषिद्ध था। क्योंकि इनसे मानवता का विध्वंस अवश्यंभावी कहा गया है। इनके अतिरिक्त 'सौपर्ण, नागपाश, ब्रह्मशिरा, आग्नेय, वारुण, ऐन्द्र आदि अनेक रहस्यमय प्रक्षेपाणास्त्र भी वर्णित हैं जिनका प्रयोगप्रायः होता भी रहा, परन्तु विशेष परिस्थितियों में ही। महाभारत के अतिरिक्त 'मातृ विलास' नामक पुस्तक में इनका विशद वर्णन है। हमारे स्वर्गीय प्रधानमन्त्री पं जवाहरलाल नेहरू जी जब अमरीका में अपने अमेरिकन मित्र के यहाँ ठहरे थे तो उस मित्र के घरेलू पुस्तकालय में 'वायुयान एवं अणु अस्त्रों' के निर्माण का मार्ग दिखलाने वाले एक संस्कृत के हस्तलिखित ग्रन्थ को (जो भूर्ज पत्रों पर लिखा था) स्वयं देखा था। पूज्य पण्डित जी जब सप्तर्षि आश्रम हरिद्वार में व्याख्यान दे रहे थे तो उन्होंने इस ओर संकेत भी किया था।

आवश्यकता है कि हमारे विज्ञानवेत्ता इन ग्रन्थों को पढ़ें और रहस्यों को जनता के सामने रखें। ✻

आप भी हंसिए

विजयचन्द्र काफी काले थे। उन्होंने सर्दी की ऋतु में एक काला ही सूट भी सिलवा लिया। उन्होंने अपने एक साथी को अपना नया सूट शान से दिखाते हुए पूछा "कहो मित्र—कुछ जँचा कि नहीं हमारा यह सूट?

मित्र ने मुस्कराते हुए कहा "विजय बाबु और तो सब ठीक ही है किन्तु यह पता नहीं लग पा रहा कि सूट कहाँ समाप्त होता है और तुम कहां शुरू होते हो?

× × ×

पिताजी मुझे माँ ने मारा है, बालक रोते-रोते बोला। पिता ने पुत्र को समझाते हुए कहा 'अच्छे बालक शिकायतें नहीं किया करते। देखो कभी हमसे भी तुमने ऐसी शिकायत सुनी है।

× ×

एक शिक्षक महोदय अपने घर के बरामदे में खड़े थे। तभी उनके एक मित्र आए और किसी बात पर शिक्षक महोदय पर बिगड़ उठे। तभी एक गधा भी उधर आ गया और बरामदे की ओर बढ़ने लगा। शिक्षक ने गधे को लात मारते हुए कहा 'मैं एक समय में एक से ही निपट सकता हूं—तू फिर कभी आना— ✻

—डा० लक्ष्मी नारायण

राष्ट्र निर्माता दयानन्द और पं० नेहरू

**

महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्रनिर्माता थे जो राष्ट्रीय आंदोलन दयानन्द के कमण्डलु से निकला, उसके ही जवाहर लाल अन्यतम सेनानी बने।

नेहरू जी का जन्म (सन् १८८९) दयानन्द जी के देहान्त (सन् १८८३) के छः वर्ष बाद हुआ था। 'आर्य-समाज' के स्वर्णकाल अर्थात् सन् १९२५ तक वे स्वामी दयानन्द तथा उनके आर्य समाज से भली-भाँति परिचित हो चुके थे। नेहरू जी की विचारधारा को आर्य समाज ने एक सीमा तक प्रभावित भी किया था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थों में नेहरू जी ने स्वामी दयानन्द और आर्य समाज की चर्चा की थी।

कतिपय दिशाओं में दयानन्द तथा जवाहर लाल के चिंतन में पर्याप्त साम्य तथा अनुकूलता दिखाई देती है। जिस प्रयाग में जवाहर लाल जी ने जन्म लिया था-उसमें स्वामी जी कई बार गये थे। पं० मोतीलाल नेहरू भी आय समाज की विचारधारा से पूर्णतया अवगत थे। मोतीलाल जी दयानन्द जी के समकालीन थे और वय में (जन्म सन् १८६१) स्वामी जी से सैंतीस वर्ष छोटे थे। जिस आगरे में मोती लाल जी का जन्म हुआ था-वहीं से ही स्वामी जी ने अपने धर्मचक्र का प्रवर्तन किया था। जिस कानपुर में मोती लाल जी पढ़े थे और जहाँ से उन्होंने सर्व प्रथम वकालत शुरू की-वह स्वामी जी तथा उनकी आर्य समाज का प्रमुख केन्द्र था। मोती लाल जी का देहान्त (सन् १९३१) स्वामी जी के स्वर्गवास के ४८ वर्ष पश्चात् हुआ था। पिता और पुत्र-दोनों का कार्य-क्षेत्र-उत्तर प्रदेश रहा है जहाँ दयानन्द अपने चिंतन को पूरे समय कार्य रूप में सफलता पूर्वक परिणत करते रहे।

जवाहर लाल नेहरू में तर्क, ज्ञान तथा वैज्ञानिकता का प्राधान्य था। यही स्थिति दयानन्द सरस्वती की भी थी। दोनों ने धर्म के आडम्बरी रूप को कभी स्वीकार नहीं किया। दोनों ने वेद तथा वैदिक साहित्य तथा संस्कृति को विशेष महत्ता प्रदान की। दोनों ने भारत की आधुनिकता के निर्माण में ऐतिहासिक योगदान दिया था। नेहरू जी ने आर्य समाज के विषय में कहा था-आर्य समाज ने लड़कों और लड़कियों की शिक्षा, स्त्रियों की दशा के सुधार और दलितों को ऊँचा उठाने की दिशा में बहुत अच्छा कार्य किया है।

नेहरू जी तथा दयानन्द जी अवैदिक बातों, अंध परम्पराओं, रूढ़ियों तथा सामाजिक कुरीतियों के परम विरोधी थे। दोनों व्यक्ति तथा समाज की सर्वतोन्मुखी प्रगति के आकांक्षी थे। दोनों ने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नैतिक आदि सभी प्रकार के सुधारों के करने का सफल प्रयास किया था। दोनों बुद्धिवाद को मान्यता देते थे। दोनों अवतारवाद, रूढ़िगत पूजा-पाठ, यंत्र-मंत्र, जादू, टोने और कृत्रिम देवी-देवताओं में आस्था नहीं रखते थे। दोनों मनुष्य मात्र की समता चाहते थे। ऋषि दयानन्द ने स्वराज्य का प्रवर्तन किया और नेहरू जी ने उसे भारत भूमि में चरितार्थ कर दिया। दोनों उच्च कोटि के राष्ट्रवादी थे।

पं० जवाहर लाल नेहरू की पुत्री प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की भी दयानन्द और आर्य-समाज के प्रति निष्ठा रही है। वे दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा का दर्शन कर चुकी हैं और आर्य समाज की जन्म शताब्दी उनके ही कार्यकाल में समारोहपूर्वक मनायी गयी। उन्होंने अपने एक संदेश में कहा है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती तेजस्वी और आध्यात्मिक तो थे ही, साथ ही वे एक युग-प्रवर्तक और समाज सुधारक भी थे। स्वामी जी का ध्यान हमेशा उन लोगों की ओर लगा रहता था, जो दुख-दारिद्रय और अंधकार से घिरे थे। उन्होंने अपने लिए मुक्ति नहीं चाही। भारत के लोगों से उनका आग्रह था कि जाति-पाँति के अभिशाप से छुटकारा पायें और अस्पृश्यता छोड़ें। कभी-कभी यह गलत समझा जाता है कि स्वामी दयानन्द ने केवल हिन्दू धर्म के बारे में सोचा। उन्होंने हिन्दू धर्म को अंध विश्वास के चुंगल से अवश्य निकालना चाहा, लेकिन किसी दूसरे धर्म के प्रति अनुदारता नहीं दिखाई।

इंदिरा जी के प्रपितामह पं० गंगाधर जी दयानन्द के समकालीन थे। गंगाधर जी को सिर्फ ३४ वर्ष की आयु ही प्राप्त हुई थी जबकि स्वामी जी की ५९ वर्ष की।

जन-ज्ञान के अधिक से अधिक सदस्य बनाएं

—सुनीता

पेट्रोल का सर्वोत्तम उपयोग

यदि कार का इंजिन ठीकठाक हो और पहियों में हवा पर्याप्त हो तथा प्लग साफ सुथरे और उनके 'गैप' ठीक रखे जाये तो थोड़ी सूझ-बूझ से चलाने पर काफी पेट्रोल की बचत की जा सकती है।

म्युनिख स्थिति ऊर्जा अनुसंधान संस्थान द्वारा की गई खोज से, जो तथ्य प्रकट हुए हैं, वे वास्तव में दुनियां भर के मोटर चालकों के लिए उपयोगी हैं।

पाया गया है कि दहन इंजिन वाली कारें, चाहे वे मर्सडीज हों या बीटल, पूरी ऊर्जा का उपयोग नहीं कर पाती हैं। पेट्रोल से प्राप्त ऊर्जा का केवल २४ प्रतिशत एक्सिल के संचालन में लगता है। दहन ऊर्जा का लगभग ७० प्रतिशत केवल वायुमंडल को गर्म और दूषित करता है।

पहले या दूसरे गियर में गाड़ी चलाने से इंजिन में अनावश्यक ईंजन का प्रवाह होता है। तेज रफ्तार से कार चलाने से भी उर्जा का अपव्यय होता है। सौ किलोमीटर या साठ मील प्रति घण्टा की रफ्तार पर औसत गाड़ियों के इंजिन की क्षमता में प्रत्यक्ष रूप से गिरावट आती है। तेज रफ्तार में हवा का दबाव और विभिन्न प्रकार के मशीनी तथा वायु गतिज प्रतिरोधों का सामना करना पड़ता है। सड़क की सतह और टायर के बीच घर्षण के कारण भी ऊर्जा का अपव्यय होता है।

७० किलोमीटर प्रति घण्टा की रफ्तार में हवा के दबाव के कारण प्राप्त ऊर्जा का ५० प्रतिशत का उपभोग होता है। सौ किलोमीटर या साठ मील प्रति घण्टा की रफ्तार से तो तिहाई से अधिक ऊर्जा बेकार होती है।

रफ्तार जितनी तेज की जाती है, हवा के दबाव में उससे तीन गुनी वृद्धि होती है। तेज रफ्तार में ब्रेक लगाने और एक्सिलेटर दबाने से भी काफी ऊर्जा नष्ट होती है।

अतः तेज रफ्तार से चलाने के कारण औसत कारें अधिक ईंधन खाने लगती हैं। फर्ज कीजिए आपको ४०० किलोमीटर दूरी तय करनी है। यदि आप सौ किलोमीटर की रफ्तार से जायेंगे तब ३२ लीटर पेट्रोल लगेगा।

दूसरे शब्दों में यदि ४०० किलोमीटर या २५० मील की दूरी प्रति घण्टा १०० किलोमीटर या ६० मील की सामान्य गति से तय की जाय तब ३५ मील प्रति ब्रिटिश गैलन या ३१ मील प्रति अमरीकी गैलन लगाना चाहिए।

यदि आप इसी दूरी को तीन घण्टे में तय करना चाहें तब आपको गाड़ी की रफ्तार प्रति घण्टा १३० किलो मीटर या ८० मील से थोड़ा अधिक रखनी होगी।

सड़क पर अधिक भीड़ भाड़ होने से भी ईंधन के खर्च में किफायत बरतना नामुमकिन है। ऐसी दशा में ईंधन की खपत ५२ लीटर प्रति घण्टा तक पहुँच जायेगा।

तेज रफ्तार में एक गैलन पेट्रोल से २० मील की दूरी तय करने से जितने घण्टे समय की बचत होगी। वह २० लीटर पेट्रोल के एवज में होगी। इस प्रकार २५० मील की दूरी तय करने पर पाँच गैलन पेट्रोल अधिक लगेगा।

प्रश्न है, ईंधन की खपत कम करने के लिए क्या करना चाहिए? अमेरिका में रफ्तार ५५ किलोमीटर प्रति घण्टा सीमित कर दी गई है। इससे वहाँ ईंधन की खपत में १२ प्रतिशत की कमी हुई है। हर हालत में रफ्तार सीमित रखने से ईंधन की बचत हो सकती है।

नये टायरों से तथा इंजिन की सही तरह से देख-भाल करने से और कार्बुरेटर को ठीक रखने से ईंधन की बचत होती है। इसी प्रकार प्लग और वायु छानना को साफ रखने से तथा वाल्व ठीक होने से और इंजिन में सही तेल डालने से तथा तेलवाहिका नली के लीक प्रूफ होने से भी ईंधन की बचत होती है। खोज से पता चला है कि इन सभी चीजों के परीक्षण के लिए नियमित सफाई से पाँच प्रतिशत ईंधन की बचत हो सकती है।

इस प्रकार औसत मोटर चालक एक वर्ष में ७५ लीटर तेल की बचत कर सकेगा। लेकिन गाड़ी की सर्विसिंग आदि पर जो खर्च आयेगा वह इससे अधिक होगा, हालांकि गाड़ी की सुरक्षा की दृष्टि से सर्विसिंग जरूरी है।

तेल की खपत कम करने की दृष्टि से गाड़ी, खास तौर से बड़ी गाड़ियों का डिजाइन ऐसा होना चाहिये जिसमें प्रतिशोध कम से कम हो। संस्थान की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि यह तक सही नहीं है कि गाड़ियों का ऐसा डिजाइन बनाने मे ज्यादा खर्च आता है। सुधार के लिए और भी बहुत गुंजाइश है। गियरबाक्स में भी और सुधार किया जा सकता है।

(शेष पृष्ठ १४पर)

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

मेरी तीन प्रचार यात्राएँ

व्याख्यानों के लिए प्रतिदिन उत्सवों में घूमने से साहित्य साधना में बाधा आती है। अतः मैं प्रायः उत्सवों में नहीं जाता। जो व्यक्ति लेखन का विशेष कार्य नहीं करते, वे ही उत्सवों में जा सकते हैं। उत्सवों में जाना बुरा नहीं है, वह भी आवश्यक है परन्तु अपनी-अपनी रुचि और प्रवृत्ति है। व्याख्यानों के लिए घूमने में जो तांता टूटता है फिर कठिनता से जुड़ता है।

उत्सवों की अपेक्षाकथाओं का प्रचार जहाँ अधिक स्थायी होता है। वहाँ व्याख्याता को भी पढ़ने-लिखने का समय मिल जाता है। अतः मैं वेद-प्रवचन, रामायण आदि की कथाएँ कहने के लिए निकल पड़ता हूँ। मैं छोटे-छोटे ग्रामों में भी पहुँच जाता हूं और बड़े-बड़े नगरों में भी। यहाँ मेरी तीन यात्राओं की चर्चा प्रस्तुत है।

आर्य समाज कनवरी गंज, अलीगढ़—से आर्यसमाज मन्दिर में बाल्मीकि रामायण की कथा की। सात दिन में बालकाण्ड, थोड़ा-सा अयोध्याकाण्ड ही कह पाया। अन्तिम मैंने रामायण सम्बन्धी शंकाएँ उठाकर उनका समाधान किया।

प्रतिदिन प्रातः दैनिक यज्ञ के पश्चात् आधा घण्टा यज्ञ के विषय में व्याख्यान होता रहा। रविवार को प्रातः अचल मार्ग आर्यसमाज के साप्ताहिक संत्संग में व्याख्यान हुआ।

कनवरी गंज में एक शास्त्री जी (नाम जान बूझकर नहीं दे रहा हूँ) कह गये कि अंग स्पश बाएँ से दाहिनी ओर करना चाहिए। मैंने यह सब बन्द कराया। मैंने संस्कार विधि से प्रमाण प्रस्तुत किया जिसमें महर्षि ने दाहिनी ओर से बाईं ओर स्पर्श करने के लिए लिखा है। साथ ही मैंने यह भी कहा—जो भी व्यक्ति कोई नई बात कहे, उससे प्रमाण माँगो, यदि वह कोई प्रमाण दे दे तो ठीक, मान लो, अन्यथा ऋषि की विधि में परिवर्तन मत करो। एक दिन प्रातः 'ओम् का महत्व' विषय पर व्याख्यान दिया। प्रधानजी ने कहा—"ओम् की ऐसी नई, और मनोरम व्याख्या पहले कभी नहीं सुनी।"

यहाँ एक घटना बड़ी रोचक हुई। यहाँ भजनोपदेश के लिए वीरकवि रामसिंह जी आये हुए थे। एक दिन दोपहर में मैं, प्रधानजी, एवं वीर कवि जी बैठे हुए थे। मेरे द्वारा सम्पादित एवं अनुदित रामायण वहाँ रखी हुई थी। कविजी उसे देखने लगे। उस में विद्यमान पुराने दाढ़ी और जटाओं वाले चित्र को देखकर वे प्रधान जी से बोले—कभी अपने इन विद्यार्थी जी को भी बुलाया है, बहुत अच्छा बोलते हैं।" प्रधान जी ने कवि जी की ओर फिर मेरी ओर देखकर बोले—"ये कौन हैं? ये विद्यार्थी जी नये रूप में विद्यमान हैं।" फिर तो एक जोरदार ठहाका लगा।

इस समाज में श्रद्धा का उमड़ता हुआ सागर देखा। सात दिन में चौदह परिवारों में भोजन किया फिर भी अनेक व्यक्तियों का नम्बर नहीं आया। यू. पी. का भोजन प्रसिद्ध है। मना करने भी प्रातः अथवा सायं किसी न किसी परिवार में पूरियां बन ही जाती थीं। श्री किशारी लाल जी सर्राफ ने चार कपड़ों के लिए वस्त्र एवं उनकी सिलाई भेंट की।

आर्यसमाज कोटद्वार—आर्यसमाज कोटद्वार में मेरे प्रवचन हुए। ६ दिन वेद प्रवचन और अन्तिम दिन योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान।

प्रातः यजुर्वेद के चुने हुए मन्त्रों एवं अध्यायों से यज्ञ होता रहा।

यहाँ भी आर्यों की श्रद्धा देखने योग्य थी। १७ और १८ को यहाँ दिन और रात वर्षा होती रही। परन्तु १८ प्रातः पूर्ण आहुति के समय सभी यजमान सपत्नीक उपस्थित थे। सभी यजमान आहुति देना चाहते थे। एक कुण्ड पर सबका बैठना असम्भव नहीं था, अतः एक यज्ञ-कुण्ड की और व्यवस्था की गई। अति श्रद्धोपेत वातावरण में पूणहुति का कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

यहाँ इस यज्ञ से पूर्व दो बार दो महात्माओं ने यज्ञ कराये (मैं उनके नाम नहीं दे रहा हूँ) दोनों ने छलनी बाँधकर "पवित्रमसि शतधारम्" मन्त्र से पूर्ण आहुति कराई। परिणामतः आग बुझ गई। महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र का विनियोग यज्ञ कर्म में नहीं किया, प्राचीन ग्रन्थों में भी नहीं मिलता। सार्वदेशिक सभा ने भी अपने निर्णय में इसे अमान्य ठहराया है फिर पता नहीं ये महातम्: (?) लोग ऐसा नहीं करते हैं।

आर्य कन्या विद्यालय और आर्य समाज का कार्यक्रम मिलकर हुआ। सवप्रथम मेरे द्वारा

ध्वजोत्तोलन कराया गया, बच्चों को थोड़ा-सा उपदेश दिया। पुनः यज्ञ का कार्य प्रारम्भ हुआ। मैंने आर्यों के सप्त-सूत्री कार्यक्रम विषय पर व्याख्यान दिया। मैंने कहा कि हमारे ऋषि-मुनियों ने जो सप्त-सूत्री कार्यक्रम दिया है, सारे कार्यक्रम इसके अन्तर्गत आ जाएँगे। राष्ट्र के कल्याण की कोई भी बात यहाँ छोड़ी नहीं गई है।

रात्रि में श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। निरन्तर वर्षा होने पर भी और दिनों की भाँति भरपूर थी। श्रीकृष्ण के जीवन सम्बन्ध में कई नये तथ्यों पर प्रकाश डाला।

एक दिन एक सनातनी परिवार ने श्रद्धापूर्वक भोजन कराया। ये प्रायः उपदेशों में भी आते रहे। एक दिन इन्हें यज्ञ पर बैठने के लिए कहा गया। कहने लगे—"मेरे पास यज्ञोपवीत नहीं है।" मैंने कहा—'आप बैठिए, मैं दे दूँगा।" उस दिन तो ये नहीं बैठे परन्तु बाद में इन की यज्ञोपवीत लेने की इच्छा हो गई। परन्तु इस अवसर पर उन्हें यज्ञोपवीत नहीं दिया जा सका। आपके दो सुपुत्रों ने जो सिनेमा बहुत देखते थे, सिनेमा न देखने की और एक ने दो मास में तीन बार देखने की प्रतिज्ञा ली।

यहाँ से ६-७ किलोमीटर की दूरी पर एक गुरुकुल है जिसका संचालन ब्रह्मचारी विश्वपाल जी करते हैं। लगभग ३० विद्यार्थी यहाँ शिक्षा पा रहे हैं। एक दिन विश्वपाल जी गुरुकुल की जीप में हमें वहाँ ले गये। यह गुरुकुल अत्यन्त सुरम्य वातावरण में बना हुआ है। चारों ओर हरियाली है। सभी विद्यार्थियों को व्यायाम और कुश्ती का भी अभ्यास कराया जाता है।

यहाँ मामचन्द जी अपनी भजन मण्डली के साथ उपस्थित थे। प्रातः सायं उनके भजन होते रहे, जिन्हें लोगों ने बड़े चाव से सुना।

गढवा (पलामू, बिहार)

यहाँ मेरा निवास एवं कार्यक्रम श्री लक्ष्मी प्रसाद के गृह पर रहा। जिस समय मैंने संन्यास लिया था तब श्री लक्ष्मी प्रसाद एवं गौरीशंकर जी सपत्नीक उस समारोह में भाग लेने के लिए आये थे। उस समय उन्होंने गढ़वा के लिए एक मास का समय माँगा था। मैंने स्वीकृति दे दी थी। परन्तु विदेश जाने के कारण, वहाँ न जा सका। वह एक मास इस समय वहाँ दिया।

मेरे वहाँ पहुँचते ही आर्यसमाज के प्रधान जी आये और यह प्रार्थना की कि यहाँ कुछ कार्यक्रम होना चाहिए। मैंने कहा—"रख लीजिए। कुछ दिन का इस मास में रख लें, यज्ञ के अवसर पर प्रातः सायं दोनों समय का कार्यक्रम रहेगा ही।" परन्तु कार्यक्रम रखा नहीं जा सका। ११ से १८ तक भयंकर वृष्टि सारे बिहार में हुई। ऐसी भयंकर वृष्टि कि बिहार के अनेक स्थानों में एक मीटर से २ मीटर तक पानी भर गया। हैलीकोपटरों से खाना गिराया गया।

एक दिन गढवा से ९ किलोमीटर दूर कोयल नदी की बाढ़ को देखने में भी गृहस्वामी के साथ गया था। ७०-८० वर्ष के वृद्धों का कहना था कि इतनी भयंकर बाढ़ हमने अपने जीवन में नहीं देखी। अनेक मकान गिर गये। डालटन गंज के पास अमानत का पुल है। पानी की तेज धारा ने पुल को तो कम हानि पहुँचाई परन्तु पुल के पास लगभग बीस फुट सड़क काट दी। परिणाम बहुत भयंकर हुआ। ट्रक बहकर कोई दस किलोमीटर तक चला गया। इसी प्रकार दो और ट्रक गिरे। गिरने वाले अन्तिम ट्रक के पीछे एक बस जा रही थी। जब बस ड्राइवर ने देखा कि अचानक ट्रक कहाँ लुप्त हो गया, तब उसने अपनी गाड़ी को ब्रेक लगाया।

जिस परिवार में मैं ठहरा हुआ था, इसी परिवार के श्री विनोद कुमार जी ने एक दर्दनाक घटना सुनाई। श्री विनोद जी राँची से पटना जा रहे थे। वर्षा भयंकर हो रही थी। रात्रि का समय था। एक पुल पार कर ड्राइवर ने कहा, "भयंकर वर्षा है सड़क भी दिखाई नहीं देती है, आगे जाने में खतरा है।" यात्रियों ने कहा तो आप हमें राँची छोड़ दें। ड्राइवर ने गाड़ी मोड़ी और पुल पार किया। यात्रियों ने कहा—"जरा ५-७ मिनट ठहरो, हम बाढ़ का दृश्य देख लें।" ये लोग दृश्य देख रहे थे। इतनी देर में दूसरी ओर से सम्भवतः टाटा जाना वाली बस पुल के परले पार आकर रुकी। ड्राइवर बस से उतर कर इस पार आया और इस ड्राइवर से पूछा—"पुल ठीक है?" उसने कहा—"ठीक ही है, मैंने तो अभी दो बार गाड़ी पार की है।" ड्राइवर बस में बठा और बस स्टार्ट कर जैसे ही वह पुल के बीच में आया २४-२५ यात्रियों सहित सारी बस नदी की भेंट हो गई।

गढ़वा का भी डालटन गंज आदि से सम्बन्ध कट गया। पेट्रोल आना भी बन्द हो गया। अनेक मकान गिर पड़े। फसल को भी हानि हुई। ऐसी भयंकर स्थिति में क्या कथा और व्याख्यान होते?

कुछ दिन प्रतीक्षा के पश्चात् २७ सितम्बर से "बाल्मीकि रामायण" की कथा की घोषणा की गई। उस दिन फिर वृष्टि हो गई। २८ सितम्बर से ११ अक्तूबर तक बाल्मीकि रामायण की कथा हुई। चौदह दिन में

अरण्यकाण्ड तक आधी कथा समाप्त की। शेष कथा फिर किसी अवसर पर करूंगा।

पं० वीरसन जी वेदश्रमी के आचार्यत्व में श्रीयज्ञ समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ में भी प्रातःकाल गायत्री पर प्रवचन होते रहे।

श्री अरुण कुमार का टीका समारोह (विवाह से पूर्व का एक लोकाचार) सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम यज्ञ स्थल पर ही रखा गया था। लगभग ७००-८०० स्त्री-पुरुषों की उपस्थिति रही होगी। श्री अरुण जी यज्ञ की वेशभूषा धोती धारण कर यज्ञ पर बैठे।

श्री विनोद कुमार का टीका समारोह इससे पूर्व २४ सितम्बर को ही हो चुका था। उपस्थिति वहां इतनी थी कि घर छोटा पड़ गया। अनेक व्यक्तियों की व्यवस्था बाहर करनी पड़ी। इसीलिए यह कार्यक्रम यज्ञशाला में रखा गया।

२६ सितम्बर को श्री विजय कुमार जी के जोड़ले बच्चों का नामकरण संस्कार कराया गया। पुत्र का नाम ज्योति प्रकाश और पुत्री का नाम सुमेधा रखा गया।

संस्कार के महत्व पर प्रकाश डालकर मैंने स्वलिखित परन्तु अप्रकाशित "सत्यनारायण की कथा" की। यह कथा मैंने पं० वीरसेन जी वेदश्रमी को भी सुनाई। एक दृष्टान्त तो इसमें बहुत ही नवीन डाला है, सभी को रुचिकर लगा।

कार्यक्रम इतने हुए। शेष दिनों में मैं परिवार के एक सदस्य की भांति वहां रहा। वायु और भविष्य—दो पुराण वहां पढ़े। इनके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ पढ़ा।। अपनी मंजूषा में कुछ लिखा भी। "सत्यनारायण कथा" यहां दोबारा लिखी।

परिवार के कुछ सदस्यों ने मन्त्रों के उच्चारण को भी शुद्ध किया। विशेष रूप से चि० ज्ञानप्रकाश और पुत्री रंजना ने।

जिस दिन मैं गढ़वा पहुंचा था, उसके दो-चार दिन बाद एक दिन प्रातः गृहपति श्री लक्ष्मी प्रसाद जी ने कहा "पिछली बार आप हमारे परिवार के सदस्यों को प्रतिदिन प्रातः बड़ों एवं वृद्धों को चरणस्पर्शपूर्वक नमस्ते करने की शिक्षा दे गये थे। इस बार कौन सी कमी को दूर करें।" मैंने कहा कोई कमी होगी तो बताऊँगा।

पारिवारिक गोष्ठी मध्याह्न में रखी गई। परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्य उपस्थित थे। सभी ने अधिक से अधिक पांच बजे तक उठने की प्रतिज्ञा की।

मैंने दो बातों की ओर संकेत किया। जो ५-७ वर्ष के बच्चे हैं, वे प्रतिदिन नमस्ते करना भूल जाते हैं, माता-पिता इधर ध्यान दें। दूसरी बात प्याज और लहसन का सेवन बन्द करें। ये दोनों पदार्थ तामसिक हैं, उत्तेजक हैं और बुद्धि तन्तुओं को क्षीण करते हैं। प्रायः सभी ने इनके सेवन न करने का व्रत लिया।

इस गोष्ठी में श्री लक्ष्मीप्रसाद जी की बहन जो अपनी दो पुत्रियों मंजु और आशा के साथ लाहौरडगा से भाग लेने आई थी, वे भी सम्मिलित थीं। इनके माता और पुत्रियों ने भी इन अभक्ष्य पदार्थों के सेवन न करने का व्रत लिया।

प्रभु से प्रार्थना है कि वह परिवार के सभी सदस्यों को अपने व्रतों पर दृढ़ रहने की शक्ति प्रदान करें।

हमारा कार्यक्रम ११ को समाप्त हो गया परन्तु उस दिन देहली के लिए कोई ट्रेन नहीं थी अतः १२ को मैं और श्री पन्ना लाल जी पीयूष देहली लौटे।

एक बात रह गई। यज्ञ के अवसर पर श्री पन्नालाल पीयूष भी वहां उपस्थित थे। पीयूष जी के भजनों का खूब रंग जमा। प्रातः एवं सायं पीयूष जी सचमुच पीयूष बरसाते रहे।

दो वर्ष पूर्व महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज और मेरी प्रेरणा से यहां आर्य स्त्री समाज की स्थापना हुई थी। तभी से उसके सत्संग निरन्तर एवं नियमित रूप से चल रहे हैं। यह सत्संग मंगलवार को लगता है। १२ को मंगलवार था अतः उस दिन महिला सत्संग में भी पीयूष जी के भजन और मेरा उपदेश हुआ।

(शेष पृष्ठ ११ का)

गाड़ी चलाने के तरीकों में भी सुधार की गुंजाइश है लेकिन, डिजाइन भले ही बदल दी जाये, आदमी की आदतें ठीक करना मुश्किल है।

लालबत्ती से तेजी से बच निकलने, रेस लगाने, मोड़ पर ओवर टेक करने, ट्राफिक जाम के समय बार-बार एक्सिलेटर दबाने या इंजिन चालू रखे हुए गाड़ी खड़ी रखने आदि की प्रवृत्तियों से काफी ईंधन बरबाद होता है। इन आदतों के कारण केवल जर्मनी में लगभग पांच लाख लीटर पेट्रोल प्रतिवर्ष बरबाद होता है।

इस प्रकार होने वाली ईंधन की बरबादी को अपनी आदतें ठीक करके रोक सकते हैं और इससे होने वाले वायु दूषण से भी बच सकते हैं। □

—पं० वीरसेन वेदश्रमी

मूलशंकर की बोध रात्रि

त्र्यम्बकं यजामहे (यजु० ३।६०)

आज से १३९ वर्ष पूर्व की वह महा शिवरात्रि थी। बालक मूलशंकर १४ वर्ष के थे। उनके मन में त्र्यम्बकं यजामहे भगवान शिव की आराधना करके उन्हें प्रसन्न करने की इच्छा जागृत हुई। अपने शरीर को आराधना की वेदी बनाई। अपने हृदयरूपी यज्ञ कुण्ड में श्रद्धा की अग्नि प्रज्वलित की (व्रत उपवासादि की समिधाओं से उस अग्नि को प्रदीप्त किया। साधना तथा अनुष्ठान रूपी घृत से उस अग्नि को प्रचण्ड किया। जागरण रूपी जीवन हवि उसमें प्रदान कर अक्षुण्ण उसे बनाये रखा।

ओं नमः शिवाय (यजु० १६।४९)

शिव की आराधना का मन्त्र ओं नमः शिवाय, ओं नमः शिवाय, ओं नमः शिवाय—का नाद अन्तर्हृदय में अखण्ड गुंजायमान होने लगा। मूलशंकर का रोम-रोम पुलकित होने लगा। अविरल प्रेमाश्रुधारा से शरीर सिक्त हो रहा था। भक्तिभाव में गद्गद होने से चित्त वृत्तियाँ अन्तर्मुख हो रही थीं। मंत्र ध्वनि से शरीर की समस्त सूक्ष्म से सूक्ष्म केशिकायें झंकृत हो रही थी। तल्लीनता तथा ध्यान से आनन्द ही आनन्द शरीर, मन तथा आत्मा में व्याप्त हो रहा था।

चेतन्ती सुमतीनाम् (ऋग्वेद १।५।११)

वेद मंत्र सुमति को चैतन्यता प्रदान करते हैं। अतः मूल शंकर के अन्दर उस ध्यान की स्थिति में ज्ञान की एक किरण प्रस्फुटित हुई। बोध हुआ कि यह सम्मुख स्थित मूर्ति शिव नहीं है शंकर नहीं है- अतः इससे शिवतर और शिवतम की प्राप्ति नहीं हो सकती है। बालक मूल शंकर को स्मरण आया कि मैं तो मन्त्र का एक अंश ही बोल रहा हूँ। मन्त्र के अवशेष भाग को बोलूँ।

—नमः शिवाय च शिवतराय च (यजुः १६।४१)

विचार आया कि—नमः शिवाय—के बाद—च—पद भी है जिससे अगले पद—शिवतराय—की भी साथ ही साधना करनी है और -- शिवतराय—के बाद भी—च पद है अतः इस दूसरे चक्कर का सम्बन्ध अवश्य किसी से है। शिवतर के बाद शिवतम ही पद हो सकता है अतः इस शिवतम पद का अध्याहार करना होगा। अतः समझ गया—मुझे तो शिव से शिवतर और शिवतम की भी प्राप्ति करनी चाहिये। यहाँ तो केवल—नमः शिवाय—की ही साधना है। जिसका उद्देश्य केवल अपनी भौतिक कामनाओं की पूर्ति मात्र ही है।

तवैव वाहास्तव नृत्यगीते (कठोपनिषत् १।१।२६)

मैंने नचिकेत उपाख्यान सुना है। मुझे इन भौतिक कामनाओं में नहीं फँसना है। ये भौतिक प्रलोभन मुझे लुभा नहीं सकते हैं। मुझे तो इनका त्याग ही करना है। मुझे तो कोई भौतिक कामना नहीं है। मैं क्यों भौतिक कामनाओं के पंक में पड़ूँ। पिता जी! आपकी यह बड़ी जमींदारी, आपका यह वैभव पूर्ण गृह आपका यह ऐश्वर्य आप अपने के पास रखिये। मुझे इन सबकी किंचित् भी इच्छा नहीं हैं। मैं तो अप्राप्त की प्राप्ति करूँगा। उसके लिए गृह त्याग करूँगा। माता-पिता, बहिन कुटुम्बीजन सभी को छोड़ूँगा। सुदूर जाऊँगा। साधु संग में रहूँगा। शिव के समान शरीर पर भस्म रमाऊँगा। वन-वन भटकूँगा। नदियों के तट पर विचरण करूँगा। पर्वतों पर जाऊँगा। योगियों की शरण में रहूँगा। कोई प्रयत्न अवशिष्ट नहीं रखूँगा। सर्वात्मना प्रयत्न कर सच्चे शिव को अवश्य प्राप्त करुँगा।

—अथेदं भस्मान्तं शरीरम्—(यजु. ४०।१५)

इस शरीर की अन्तिम स्थिति भस्म है। श्मशान की भस्म—उसमें हे शिव! तुम रमण करते हो। श्मशान में रहते हो। तुम रुद्र हो। तुम मृत्यु हो! तुम यम हो। मैं तुम्हारे दर्शन करना चाहता हूँ। अपना दर्शन दो। मृत्यु आई और प्रिय बहिन को ले गई। यह सब मृत्यु का दृश्य साक्षात् देखा। सोचा—विचारा—बहिन की यह देह तो पड़ी हुई है। निश्चेष्ट हो गई है। कहाँ गई वह चेतना? कहाँ गया इसका रूप लावण्य? कहाँ गई इसकी वाक् शक्ति? कहाँ गई इसकी श्रवण शक्ति? कहाँ गई इसकी अवबोधन शक्ति? ये सब एक साथ इस देह को छोड़ कर चले गये! जो छोड़ कर गये वे जाते हुए दीखे भी नहीं- परन्तु गये अवश्य हैं। अतः इस स्थूल देह में सूक्ष्म शरीर का वास था। वह प्राणमय था—वह मनोमय था—वह विज्ञानमय था वह आनन्दमय था। इसके इस देह से जाते ही इन्द्रियाँ, प्राण, अनुभूति सभी की समाप्ति इस देह में से गई।

—तमेव विदित्वाति मृत्युमेति—(यजुः ३१।१८)

यह देह नश्वर है। इसमें वास करने वाले सूक्ष्म शरीर की साधना के द्वारा मृत्यु को जीतूँगा। प्राणों को वश में करूँगा।—ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत—यह मार्ग वेद ने बताया है। अतः विवाह बन्धन में न

पढ़कर आजन्म ब्रह्मचारी ही रहूँगा। तप करूँगा और मृत्युंजयी अवश्य बनूँगा। यमराज पुनः पर पर आये। बोले—मूलशंकर ! तेरा मोह चाचा में है। उसे ले जाता हूँ जिससे गृह त्याग करने में अनुकूलता हो जाये। —मूल शंकर को बहुत दुःख हुआ। यम की दारुण पीड़ा से बड़ा आघात लगा। चित्तशक्ति मृत्यु को जीतने के लिए, मृत्युंजयी बनने के लिए तीव्र हो गई—यह देह सभी का यहीं पड़ा रह गया। एक दिन मुझे भी मृत्यु ले जायेगी। ये मृत्यु जिसकी आज्ञा से कार्य करती है—यस्य छायामृतं यस्य मृत्यु :—यह जो वेद ने कहा है, उसका ही मैं आश्रय प्राप्त करने का प्रयत्न करूँगा।

—न तस्य प्रतिमा अस्ति—(यजु. ३२।३)

अहा ! कितना पवित्र यह तीर्थ स्थान है। पवित्र नर्मदा प्रवाहित हो रही है। साधु, सन्त, तपस्वी चारों ओर विद्यमान हैं। १० वर्ष बीत गये। २४ वर्ष की अवस्था हो गयी। अभी तक सच्चे शिव की प्राप्ति नहीं हुई। यहाँ अवश्य कोई गुरू मिलेगा। यहाँ आये हुए साधु, सन्त, योगी, महात्माओं से साधन पूछूंगा। इनके संग रहूँगा। इनकी सेवा करूँगा। —शिव के दर्शन कराइये, परमात्मा के दर्शन कराइये—यह सब साधु सन्तों से कहा। सबने नाना प्रकार की मूर्तियों के दर्शन कराये। —ये तो जड़ हैं। इनकी उपासना से तो बुद्धि जड़ ही होती है। ये तो मनुष्यों द्वारा बनाये गये हैं इनमें प्राण प्रतिष्ठा का बहुत प्रयत्न किया गया था—ये तो फिर भी प्राणहीन ही बनी रहीं। ये तो मृत ही हैं। लोग जैसे मरे हुए को लाद कर ले जाते हैं वैसे ही इनको भी लाद कर ले जाना पड़ता है। ये भगवान् नहीं हैं—कदापि भगवान् नहीं हैं।

—यो नः पिता जनिता यो विधाता— (यजुः १७।२७)

मुझे तो ऐसे भगवान् की प्राप्ति की इच्छा है। जिसे हम नहीं बनाते हैं—अपितु जो हमें बनाता व उत्पन्न करता है। मुझे तो ऐसे प्रभु के दर्शन की इच्छा है जिसमें हमें प्राण प्रतिष्ठा न करनी पड़े—अपितु—येन प्राणः प्रणीयते—जो हममें तथा समस्त विश्व में प्राण निरन्तर प्रवाहित करता रहता है। मुझे ऐसे परमात्मा के दर्शन कराइये जिसे मुझे स्नान कराना, भोग लगाना, वस्त्र पहनाना न पड़े—अपितु जो समस्त वृक्ष, वनस्पति, पर्वत, पृथ्वी एवं प्राणियों को मेघ द्वारा वर्षा करा कर दिव्य जल से स्नान करा देता है, पृथ्वी पर हमारे लिये अनेक प्रकार के भोग्य भोज्य उत्पन्न करता रहता है तथा जो हमें भी वस्त्राच्छादन प्रदान करता है। मुझे ऐसे भगवान् के दर्शन कराइये जिसकी दीप द्वारा आरती न करनी पड़े अपितु जो स्वयं प्रकाशमय हो और सर्व प्रकाशक हो। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र जिसकी अहर्निश आरती करते हैं ऐसे प्रभु के दर्शन कराइये जिसे वेद ने—आदित्य वर्णं तमसः परस्तात्—कहा है।

—नान्यः पन्था विद्यते—(यजुः ३१।१८)

हाँ समझ गये। तू शुद्ध चैतन्य है—तू मूलशंकर है—अतः तू—अकायं—अव्रणं—अस्नाविरं—शुद्धं—अपापविद्धं—कविः—मनीषी—परिभूः—स्वयं भूः-शुद्ध, चैतन्य ब्रह्म जो सबका आदि मूल शंकर है—उसे जानना चाहता है। तो हमारे ब्रह्म तो जड़ शरीर वाले हैं, प्राणहीन हैं, अपवित्र हो जाते हैं। इन्हें स्नानादि से शुद्ध करते हैं। देख नर्मदा के पवित्र तट पर वह वट वृक्ष है। उसके नीचे एक योगी विराजमान है। पूर्ण योगी है। ब्रह्म के आनन्द से वह आनन्दी है। पूर्ण योगी होने से, ब्रह्मानन्द में लीन रहने से, वह ज्ञानी पूर्णानन्द सरस्वती है।

तद्विज्ञानार्थं गुरुमेवाभि गच्छते-श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्—(मुण्कोपनिषत् १।२।१२)

उसकी शरण में पहुँचो। उसके अन्तेवासी बनो। उससे दीक्षा प्राप्त करो। वह दयालु है। —उसकी अपार दया से तुम भी ब्रह्म को प्राप्त कर आनन्दी हो जाओगे, ज्ञानी हो जाओगे। इस पूर्णानन्द सरस्वती के सान्निध्य से तुम दयानन्द सरस्वती बन जाओगे। वे तुम्हें योग का अभ्यास करा देंगे। निहाल कर देंगे। पूर्ण योगी बना देंगे। योग के गुप्त रहस्यों को प्रकट करेंगे। हम तो वेद शास्त्र, योग साधनादि से शून्य हैं। परम अज्ञानी हैं ! तुम सदृश ज्ञानदान् के दर्शन से आज हम धन्य हुए हैं। तू योग की साधना कर, वेदों का सत्य ज्ञान प्राप्त कर तथा समस्त संसार को अविद्यान्धकार से निकालकर सत्य का प्रकाश करके प्राणिमात्र का कल्याण कर। ✳

वेद मंदिर निर्माण के लिए उदारतापूर्वक दान दीजिए

आवश्यक जानकारी

१—वेद मंदिर ६००० वर्ग गज भूमि में निर्माणाधीन है।

२—यह पक्की सड़क के किनारे, यमुना नदी के समीप उस ऐतिहासिक स्थल पर बन रहा है, जहां दिल्ली आने से पूर्व महर्षि ने पड़ाव किया था। (ऐसा हमें वृद्ध जनों ने बताया है)

३—सारे स्थान पर चारों ओर पक्की दीवार बन चुकी है।

४—ट्यूब वैल भी लग चुका है।

५—५ कमरे भी छोटे-बड़े बन चुके हैं।

६—लगभग २०० पेड़ भी स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं।

अब इस वेद मंदिर को पूर्ण करना वेद भक्त जनता के हाथ में है—

अविलंब आवश्यकताएं

१—मुख्य द्वार	अनुमानित लागत ५०००)
२—यज्ञ शाला	अनुमानित व्यय १,००००)
३—कार्यालय के लिए	अनुमानित व्यय १५०००)
४—कार्य कर्त्ताओं के निवास के लिए स्थान	अनुमानित व्यय ३०,०००)
५—वेदमंदिर की पहली मंजिल के लिये व्यय	५०,०००)
६—भोजनशाला आदि के लिये	१०,००:)

एक लाख रु० यदि शिवरात्रि तक मिल जाएं तो संस्थान का सारा काय अप्रैल १९७७ से यहां स्थानान्तरित किया जा सकता है।

वेद मंदिर में—

वेद विद्यापीठ—वैदिक अनुसंधान विभाग—प्रकाशन विभाग—प्रचार विभाग—उपदेशक विद्यालय—विदेश विभाग आदि प्रमुख विभाग होंगे।

कार्य हो रहा है। जितना सहयोग मिलेगा, उतनी तीव्र गति से हम बढ़ेंगे।

वेद मंदिर से वेद की ज्योति संसार में फैलाने का संकल्प

अपना संकल्प बनाइए

अपना कर्त्तव्य स्वयं सोचिये और अपनी सहायता तुरन्त भेजिये—

जगदीश्वरा नन्द सरस्वती
आचार्य

राकेश रानी पंडित
अध्यक्ष

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

शिवरात्रि के पावन पर्व पर अधिक-से-अधिक दान भेजिए

आप निम्न ढंग से सहायता कर सकते हैं।

१—सभी कार्यों के लिए अधिक से अधिक दान भेजकर। १००१) देने वालों का नाम वेद मंदिर में अंकित किया जायेगा या **वेद भाष्य में चित्र छापा जायेगा।**

२—एक कमरा अपने नाम से बनवाकर। कमरे पर दानी का नाम अंकित रहेगा।

३—वेद भाष्य का कम से कम एक नया सदस्य बनाकर। इसके लिए २०१) में चारों वेदों का भाष्य और १०१) व २५) का साहित्य उपहार में हम दे रहे हैं। १७ फरवरी तक (पूरा विवरण नीचे है)

४—जन-ज्ञान के नये सदस्य बनाकर।

आप कुछ भी करें, कैसे भी करें, पर आपका संस्थान जो भी कार्य कर रहा है उन्हें सफलतापूर्वक चलाने के लिए तुरन्त ही अधिक से अधिक सहयोग करें। —प्रतीक्षा में

विनीत :

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
आचार्य

राकेश रानी पंडित
अध्यक्ष

शिवरात्रि पर 'वेद' को घर-घर में पहुँचाने का आंदोलन आरम्भ करें

जनता को वेद प्रचार का आवाहन

विश्व में वैदिक धर्म का घोष गुंजाने का संकल्प लेकर चलने वाले भक्तजनों से हमारा आग्रह है कि वे नारे मात्र ही न लगाकर इस शिवरात्रि पर वेद को अधिक से अधिक परिवारों में पहुँचाने का व्रत लें।

वेद के चारों खंडों का मूल्य २८४) है किन्तु **शिवरात्रि १७ फरवरी तक** हम प्रचार के लिए भारी रियायत की घोषणा करते हैं।

आप कम से कम एक परिवार में वेद भाष्य पहुँचाने का निश्चय करें। हम चारों वेदों का पूर्ण भाष्य केवल २०१) में भेज देंगे।

साथ में १०१) का उपहार भी लेने वाले व्यक्ति को देंगे और आप के लिये भी २५) का उपहार "साहित्य" भेजेंगे।

इस तरह २०१) में आपको मिलेगा--

२८४) का वेद भाष्य

१०१) का उपहार साहित्य

२५) का उपहार आपके लिये

४१०) चार सौ दस रु० का साहित्य आपको केवल २०१) में मिलेगा।

जो प्लास्टिक कवर भी मंगाना चाहें वे १४) अधिक भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

मुझे विश्वास है कि आर्यजन उत्साहपूर्वक घर-घर में वेद पहुँचाने का व्रत लेकर काम में लगेंगे।

प्राचीन भारतीय विमान

आज इस बात पर अनेकों को विश्वास नहीं हो पाता कि वैदिक युग में भी नागरिक और सैनिक विमानों का निर्माण भारत में होता था। किन्तु यह एक तथ्य है कि आज के समान ही उस काल में भी विमान भारतीय सशस्त्र सेना के चार प्रमुख विभागों में से एक था। यह विडम्बना ही है कि हम स्वयं ही विश्वास नहीं करते कि हमारे पूर्वज विज्ञान के इस विशिष्ट एवं आश्चर्यजनक कार्य को करने में भी नितांत दक्ष और सक्षम थे।

प्राचीन ग्रन्थों में विमानों का उल्लेख

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल की ११६वीं ऋचा में उपमा देकर गया है—'हे अश्विद्वय! जिस प्रकार मृत मानव अपने सारे वैभव और गरिमा को इस पृथ्वी पर ही छोड़ देता है, उसी प्रकार तुग्रा ने भुज्यु को जल में फेंक दिया। लेकिन तुम पर उसके उद्धार का दायित्व था। तुम उसको वैमानिक सुरक्षा पेटिका द्वारा पुनः ले आए। यह विमान उड़ सका और पानी पर भी तैर सका।

पुराणों में भी शांति तथा युद्ध के समय नियमित कहा रूप से विमानों के प्रचलन के अनेक उदाहरण मिलते हैं। सम्राट रावण के पास भी उसका अपना पुष्पक विमान था। यह ब्राह्मण सम्राट भारत में आकाश मार्ग से ही आया था। जब उसने सीता के अपहरण का प्रयत्न किया तब राम के मित्र जटायु द्वारा रावण के विमान को नष्ट करने का भी प्रयास किया। बाल्मीकि रामायण में इस पूरे प्रसंग को अभी भी पढ़ा जा सकता है।

रावण को उसी के देश में पराजित करने के बाद मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने रावण के राज्य पर अधिकार करने के बाद भी उसे रावण के ही भाई विभीषण को सौंप दिया और वे पुष्पक विमान द्वारा अपनी राजधानी अयोध्या वापस लौट आये। रामायण महाकाव्य में आदि कवि बाल्मीकि ने इस विमान के मार्ग का सविस्तार वर्णन भी किया है।

गणित की चरम सीमा

वैदिक युग में गणित की दृष्टि से भी भारत चरम सीमा पर पहुँच गया था और हाल ही में हम उस समय के गणित का कुछ अंशों में वर्णन करने में सफल हो सके हैं। संस्कृत के कई श्लोकों के अर्थ भी बड़े विचित्र हैं। विदित है कि सामान्य अर्थों में राम से तात्पर्य अयोध्या के राजा से है। क्या आप मुझ पर विश्वास करेंगे, यदि मैं आप से कहूँ कि राम से कई स्थानों पर तात्पर्य न ईश्वर से है, न सम्राट से वरन् इसका अर्थ है अंक तीन।

जब मुझे इस चमत्कार को राकेट वैज्ञानिक विभाग के एक उच्च पदाधिकारी को बताने का मौका मिला तो वे उसकी सटीकता, शीघ्रता सादगी और कूटार्थ को देख कर अभिभूत रह गए। उन्होंने स्वीकार किया कि निसंदेह उस समय सर्वश्रेष्ठ प्रगतिशील सभ्यता अस्तित्व में थी परन्तु दुर्भाग्य से उसे अनियन्त्रित नैसर्गिक प्रकोप का भाजन बनना पड़ा होगा। परन्तु इस महान् विज्ञान को सुरक्षित रखने का श्रेय वास्तव में ब्राह्मणों को देना चाहिए, जिन्होंने इस वंशानुक्रम से बिना किसी परिवर्तन के इसे जीवित रखने हेतु कठिन परिश्रम किया।

यह प्रमाणित ही है कि विज्ञान किसी एक विभाग में ही उन्नत नहीं होता है, उसका तो सर्वांगीण विकास में विश्वास है।

सर्वांगीण विकास : कई प्रकार के विमान

प्राचीन काल में केवल शस्त्र विज्ञान में ही विकास नहीं हुआ था, अपितु गणित में भी और विशेष रूप से गोलीय त्रिकोणमिति में भी विकास हुआ था। राजा भोज ने अपने द्वारा लिखित ग्रन्थ 'समरांगण सूत्र धार' में भी विमानों की महत्ता पर विशेष बल दिया है। इस ग्रन्थ में विमानों के कई प्रकार वर्णित हैं तथा उनके संचालन और कार्य प्रणाली का भी वर्णन किया है। इसमें कहा गया है कि अकेला विमान चालक एक ही समय में कई मशीनों को नियन्त्रित कर सकता है और कई मनुष्य एक ही जटिलतम मशीन को नियन्त्रित करने में सक्षम होते हैं।

आगे उसी ग्रन्थ में लिखा है कि मशीन के कार्य क्या हैं? वे कई प्रकार के हैं। यद्यपि उसका मुख्य कार्य पदार्थ के तत्वों में परिवर्तन लाना होता है। यन्त्रों में परिवर्तन लाना होता है। यन्त्रों की उचित सहायता से कोई भी वस्तु बनाना सम्भव है। पृथ्वी पर रहने वाले लोग सरलता से आकाश में ले जाये जा सकते हैं और बाद में उन्हें पृथ्वी

पर भी उतारा जा सकता है। जो भी कुछ दुष्कर और असंभव दिखाई देता है, मशीनों की सहायता से उस तक पहुँचा जा सकता है।

विमान के ढांचे का वर्णन

इस ग्रन्थ में कुछ शब्द हैं जो विमान की पेचीदगियों से सम्बन्धित हैं। उसमें लिखा है कि विमान के लिए हल्के किस्म की लकड़ी का चयन किया जाए। उसके ढाँचे को इस प्रकार बनाया जाए कि वह पेचीदगीपूर्ण न दिखे। उसका इंजिन पारे से चलने वाला होना चाहिए। अग्नि-यंत्र को मुख्य इंजिन के नीचे होना चाहिए ताकि, इंजिन को गरम किया जा सके। एक बार चालक-चक्र तेजी से कार्य करना आरम्भ कर दे तो पदार्थ की शक्ति आगे का कार्य अपने आप कर लेगी। वह विमान को तैरने तथा गतिमान होने देगी।

आगे वर्णन किया गया है कि हल्का काष्ठ एक विमान निर्माण में सहायक हो सकता है। इसका आकार-प्रकार एक मन्दिर के जैसा होना चाहिए। उसमें पारे से अतिरिक्त कुम्भ (घट) होना चाहिए। एक बार पारा ठीक ढंग से गरम हो जाए तो विमान तेज आवाज करते हुए ठीक ढंग से चलने लगेगा। लकड़ी और ढले हुए इस्पात के हिस्सों से बना विमान आकाश में ऊपर तक जाता है और सिंह के समान गर्जना करता है।

निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि विमान निर्माण विज्ञान भारत में कब लुप्त हो गया। ऐसा लगता है कि कवि कालिदास के पास भी विमान था। मध्य प्रदेश से कन्याकुमारी तक हू-ब-हू वस्तुस्थिति का वर्णन उक्त तथ्य को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। यह सत्य है कि भारतीय वैज्ञानिक अर्थात् ऋषि लोग विज्ञान में हर ओर प्रगति कर सकते थे। 'समरांगण सूत्रधार' के लेखक ने लिखा है कि इस स्थान पर विमानों के विषय में हर बात को विस्तार से बताना बहुत खतरनाक है। कारण एक बार विज्ञान शत्रु के खेमे तक पहुँच जाए तो वह हमारे लिए हानिकारक होगा और सुदर्शन चक्र के समान हम पर ही प्रहार करेगा।

गोपनीयता भारतीय विज्ञान का प्रमुख आधार

गोपनीयता भारतीय विज्ञान का प्रमुख आधार रही है। विज्ञान की समस्त शाखाओं में यह बात स्पष्ट दिखाई देती है जैसे वैद्यक, गणित और वैज्ञानिक विद्या कौटिल्य के अर्थशास्त्र से भी सर्वसाधारण को अनभिज्ञ ही रखा गया था। क्योंकि इस बात का भय था कि यदि शत्रु के हाथों में एक बार इस प्रकार की वैज्ञानिक चमत्कृत चली जाएगी तो वह नष्ट कर दी जाएगी। महाभारत के युद्ध में सेनानायकों द्वारा ले जाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के राकेटों के वर्णन से यह ज्ञात होता है कि उस समय शीघ्र उड़ने वाले राकेट अस्तित्व में थे।

यह सत्य है कि साम्राज्यवादी अंग्रेजों ने भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों को इस झूठे वितण्डावाद द्वारा कि भारतीय अत्यधिक पिछड़े हुए लोग हैं, दबाने की चेष्टा की। उन्हें विशाल साम्राज्य पर शासन करना था और जब तक वे शासितों से अपने आपको विज्ञान में श्रेष्ठ सिद्ध न करते, उनका शासन करना भी असंभव था। इस के अलावा उन्हें इंग्लैंड की अंग्रेजी फर्मों को बढ़ावा देना था और तैयार माल का निर्यात करके अपने लिए एक अच्छा जीवन व्यतीत करना था।

अतएव जान-बूझकर ही पूरी कोशिशें की गईं कि इस देश में वैज्ञानिक प्रतिभाएँ पैदा न हों। बड़ौदा के विचार वान नरेश श्री सयाजीराव गायकवाड तृतीय ने अपने स्थानीय इन्जीनियरिंग महाविद्यालय, कला भवन में एक वाष्प चालित इन्जिन का निर्माण कराया था। सौभाग्य से उन्हें अपने राजमहल प्रासाद क्षेत्र में ही तेल एवं प्राकृतिक गैस भी मिल गई। अंग्रेजों ने पूरे प्रयत्न किए, जिससे उस युवक नरेश ने इस प्रकार के वैज्ञानिक साहस के कार्यक्रमों में भाग लेना कम कर दिया। बम्बई के एक प्रसिद्ध दैनिक में यह प्रकाशित हुआ था कि एक पंडित ने १८९६ में बम्बई की चौपाटी पर एक वैदिक विमान का प्रदर्शन किया था। यह विमान ऊपर आकाश में गया था। अंग्रेज शासकों ने इस आधार पर और विकास को निरुत्साहित किया कि लोकमान्य तिलक इस प्रदर्शन के समय उपस्थित थे। यह विस्तृत रूप से बताने की आवश्यकता नहीं कि लोग कैसे और क्यों भयभीत हो गए और सारा प्रदर्शन समाप्त कर दिया गया।

आज विभिन्न राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं में एक झलक लेने से अनभिज्ञ व्यक्ति को वास्तविक आवश्यकताएँ क्या हैं यह समझ जाएगा। यही वह अनमोल अवसर है, जब कि हम अपनी शक्तियों को गैर-वैज्ञानिक मामलों में नष्ट होने से रोकें और अपने कार्य तक ही अपने को सीमित रखें। ※

शिवरात्रि पर

सत्यार्थ प्रकाश बाँटिए

—स्वामी आत्मानन्द जी महाराज का अमर गीत

आज फिर आवाहन तेरा

(१)

फिर वही छाया अंधेरा, आज फिर आह्वान तेरा ।
सो गये फिर तान चादर, था जिन्हें ऋषि ने जगाया।
भटकते फिरते पथिक जो था आपने जिनको दिखाया ॥
भूल ही सबको गया वह, दान तेरा, ज्ञान तेरा ।
फिर वही छाया अन्धेरा — आज फिर आह्वान तेरा ॥

(२)

गुरुकुलों के राग गाते, जो फिरे डफली बजाते ।
आज कालिज के तराने, गा रहे वे ही पुराने ॥
पश्चिमी घन ने प्रभो ! फिर प्राच्य रवि को आन घेरा।
फिर वही छाया अंधेरा — आज फिर आह्वान तेरा ॥

(३)

कन्या कुमारों के विनय—नय—शील हित का ध्यान कर।
पृथक शिक्षा योजना दी, आर्य-मत का मान कर ॥
आज सह शिक्षा कुनय का स्थान में उसके वसेरा ।
फिर वही छाया अंधेरा, आज फिर आह्वान तेरा ॥

(४)

धर्म हित में प्राण देना, आपने जिनको सिखाया ॥
कथन से केवल नहीं, बलिदान देकर भी सिखाया ॥
खेद पद की भूख ने, लाया उन्हीं के द्वार डेरा ।
फिर वही छाया अंधेरा — आज फिर आह्वान तेरा ॥

(५)

वेद के मृदु गान को आचार के शुभ आन को ।
फंस रेडियो के जाल में भूले सुपथ के मान को ॥
छिप ब्रह्मचर्य प्रभा गई, आया न यौवन का सवेरा ।
फिर वही छाया अंधेरा — आज फिर आह्वान तेरा ॥

(६)

हे दया के पुण्य आकर ! हे ऋषि ! आनन्द रस धर।
वेद की वंशी सुना कर, फिर न आये आप जाकर ॥
देख लो फिर आप आकर, छिप रहा वैदिक प्रभाकर ।
जो गये थे तम हटा कर, मिट रहा वह राज मेरा ।
फिर वही छाया अंधेरा — आज फिर आह्वान तेरा ॥

क्या आप जानते हैं ?

—हथिनी के थन उसकी अगली टांगों के बीच में होते हैं, जबकि अन्य पशुओं के थन उनकी पिछली टांगों के मध्य होते हैं।

—थार भारतीय हिमालय का बकरा है, जिसकी मादा के चार थन होते हैं, जबकि अन्य बकरियों के दो थन होते हैं।

—बड़े अजगर का वजन ३ मन तक होता है।

—भालू पेड़ पर उल्टा नहीं अपितु सीधा चढ़ता और उतरता है।

—सियार की लार में पागल करने के कीटाणु होते हैं।

—काले सांप के बच्चों में जन्म से ही विष होता है।

—सांप के कान नहीं होते हैं, वह अपनी जीभ से सुनता है।

—असली कस्तूरी एक चावल भर, दूध या चाय में खाने से भयंकर जाड़े में भी पसीना आ जाता है।

—मगर के पेट में समय पाकर हड्डियां और लोहा भी गल जाता है।

—भारत में रीवां (मध्य प्रदेश) में सफेद शेर पाया जाता है।

—संसार का सबसे खतरनाक भालू उत्तरी ध्रुव का सफेद भालू है।

—भारत में गैंडा हाथी अब केवल आसाम में पाया जाता है।

—ह्वेल मछली अण्डा नहीं बच्चा देती है।

—जन्तुओं में जिराफ की गर्दन सबसे अधिक लम्बी होती है।

—"इलैक्ट्रिक रे" नामक मछली को छूने पर करेंट मारती है।

—कु० पुष्पारानी

—लेखराज

करूणा के अवतार महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था। शाक्य वंश में उत्पन्न होने के कारण उन्हें शाक्य मुनि भी कहा जाता है। जब उन्हें पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त हो गया तो वह महात्मा बुद्ध के नाम से पहचाने जाने लगे। उनके पिता का नाम शुद्धोधन था और माता का नाम प्रजावती-बचपन से ही महात्मा बुद्ध सोच विचार में डूबे रहते थे। जब वह किसी निरीह और असहाय प्राणी को तड़पते देखते तो उन्हें असीम वेदना और पीड़ा होती थी और वह मूक प्राणी का दुःख दर्द दूर करने को सदैव तत्पर हो जाते थे। उनमें पशुओं के प्रति अत्यधिक करुणा का भाव था। वह सचमुच करुणा के अवतार थे। वह अहिंसा को परम धर्म मानते थे और अपने अनुयायियों को उपदेश देते थे कि वे किसी जीव पर स्वप्न में भी हिंसा न करें। उनकी करुणा की कहानियां लोक कथाओं में बहुत प्रसिद्ध हैं। एक दिन वह भ्रमण के लिए एक मनोरम उपवन में गये। वह पक्षियों के मधुर कलरव को सुनकर तल्लीन हो गए। इतने में ही सहसा उन्हें किसी पक्षी की चीख पुकार की आवाज सुनाई दी। उनका ध्यान भंग हो गया। उन्होंने देखा कि एक पक्षी तीर से बिंधा हुआ घायल अवस्था में पड़ा छटपटा रहा है। महात्मा बुद्ध उस पक्षी की ओर बढ़े। उन्होंने घायल पक्षी को अपने हाथों में उठा लिया और उसे सहलाने लगे। इतने में ही उनका चचेरा भाई देवदत्त भी वहाँ आन पहुँचा और अपना शिकार महात्मा बुद्ध से माँगने लगा। महात्मा बुद्ध ने उत्तर दिया कि इस पक्षी को मैंने बचाया है, इसलिए और यह मेरी शरण में आ गया है इसलिए भी मैं इसे कदापि वापस नहीं दूँगा। वे दोनों झगड़ने लगे और अन्त में झगड़ते झगड़ते राज दरबार में पहुँचे। महाराजा शुद्धोधन ने दोनों की बातें ध्यानपूर्वक सुनी और अन्त में महात्मा बुद्ध के पक्ष में यह निर्णय दिया। कि "मारने वाले से बचाने वाले का अधिकार अधिक होता है।" यह निर्णय देते हुए उन्होंने घायल पक्षी महात्मा बुद्ध के हाथों में सौंप दिया। महात्मा बुद्ध ने इस घायल पक्षी की विधिवत् दवा-दारू की और जब वह स्वस्थ और निरोग हो गया तो उसे स्वतन्त्र करके आकाश में उड़ा दिया।

हमें इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को जीवहिंसा से बचना चाहिए और घायल पशु पक्षियों की देखभाल करनी चाहिए। ◆

—विनोद विभाकर

मैं नकल नहीं करूँगा

बात उस समय की है, जब गाँधी जी बारह साल के थे। वे हाईस्कूल में पढ़ते थे। एक बार उनके स्कूल का निरीक्षण करने इंस्पेक्टर साहब आने वाले थे। इसलिए निरीक्षण से पहले स्कूल की खूब सफाई कीगयी।

निश्चित दिन इंस्पेक्टर साहब स्कूल का निरीक्षण करने आये। इंस्पेक्टर साहब ने गाँधी जी की कक्षा में सभी लड़कों को अंग्रेजी के पाँच शब्द बोलकर लिखाये। कक्षा के अध्यापक घूमकर यह देख रहे थे कि कोई लड़का नकल तो नहीं कर रहा घूमते-घूमते अध्यापक की दृष्टि गाँधी जी की कापी पर पड़ी। उनके और सब शब्द तो ठीक थे, लेकिन एक शब्द की स्पेलिंग गलत थी। वे उनके पास पहुँचे। इंस्पेक्टर साहब की दृष्टि बचाकर जूते की ठोकर से उन्होंने संकेत किया कि वह अपने आगे वाले लड़के की नकल करके गलत शब्द को ठीक कर ले। संकेत के बाद भी गाँधी जी ने नकल नहीं की।

इंस्पेक्टर साहब के चले जाने पर अध्यापक ने गाँधी जी को अपने पास बुलाया। लाल पीले होते हुए कहा—"तुमने सब किये-कराये पर पानी फेर दिया। मेरे संकेत करने पर भी तुमने आगे वाले विद्यार्थी की नकल करके शब्द ठीक क्यों नहीं किया ?"

इसपरगाँधीजी नम्रता पूर्वक बोले—"गुरुजी, एकतो मैं नकल करना उचित नहीं समझता। यह ठीक है कि इंस्पेक्टर मुझे नहीं देख रहे थे, पर भगवान् तो सब कुछ देख रहे थे।" गाँधी जी के इस विलक्षण उत्तर को सुनकर अध्यापक दंग रह गये।

हमारा संकल्प

वेद-धर्म की अमर पताका, धरती पर लहरायेंगे।
मानवता की अमृतवाणी, सब तक हम पहुँचायेंगे॥
दयानन्द के सैनिक हैं हम, आगे बढ़ते जायेंगे।
पाखण्डों के गढ़ दुर्गम सब, चूर-चूर कर आयेंगे॥

युग बदला है, बदल रही है, आज मनुज की तरुणाई।
सत्य काँपता खड़ा द्वार पर, पशुता की है बन आई॥
वीरों ने अंगड़ाई ली है, ध्वजा न झुकने पायेगी।
धर्म-न्याय की विजय पताका, लहर-लहर लहरायेगी॥

यह दयानन्द के दिव्यस्वप्न, साकार बनाने की वेला।
अमर शहीदों की बलि का है, मोल चुकाने की वेला॥
एक ओर है पाप, एक ओर है पुण्य, पुण्य की लाज बचाओ।
बलि जाकर भी "वेद ध्वजा" का गौरव, उठो ! गुंजाओ॥

—राकेशरानी—

महाराष्ट्र में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी

—महाराष्ट्र के प्रमुख नगरों शोलापुर, बम्बई, खामगांव, अमरावती कराड़ तथा बम्बई इत्यादि में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी समारोह पर सभाओं, गोष्ठियों तथा कारखानों का आयोजन किया गया ! शोलापुर में तीन दिन तक विभिन्न कार्यक्रम हुए। जिनमें भारी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों में स्वामी श्रद्धानन्द. पर भूतपूर्व विधायक श्री वि० रा० पाटिल, उपमहापौर श्रीमती नसीमा पठान एवम् कई अन्य कार्यकर्त्ताओं के भाषण हुए।

खामगांव की सभा में सर्व श्री नारायण लाल आर्य, एडवोकेट श्री ज० ना० आणेकर, श्री पु० शि० शंशेदार तथा श्री विप्रदास विनायकराव वेनोड़ेकर आदि के भाषण हुए।

बम्बई की एक सभा में सुप्रसिद्ध हिन्दुत्व निष्ठ कार्यकर्ता श्री बालाराव जेरे का स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर विद्वतापूर्ण प्रवचन हुआ।

अमरावती में एक सभा वैद्यराज की वा० कृ० दाणी की अध्यक्षता में एक सभा हुई। जिसमें सर्व श्री रामशास्त्री मराठे, प्रभावती बाई सामदेकर आदि के भाषण हुए।

हिन्दू मिशन कराड की ओर से हुई सभा में ब्रह्मचारी विश्वनाथ जी का भी भाषण हुआ।

महर्षि की प्रतिष्ठा कम न कीजिए

गुरुकुल घरोंडा के आचार्य पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने अपने एक लेख में यह लिखा है कि सन् ५७ की क्रांति के जनक स्वामी दयानन्द नहीं थे। यह लेख प० जगन्नाथ विद्यालंकार जी के एक लेख के उत्तर में लिखा गया था। जिसमें उन्होंने स्वामी जी को १८५७ की क्रांति का जनक सिद्ध करने का प्रयास किया था। हमारा मत है कि हमें स्वामी जी की प्रतिष्ठा को बढ़ाना ही चाहिए कम नहीं करना चाहिए। हमें उन्हें १८५७ की क्रांति का सूत्रधार सिद्ध करके उनकी गरिमा बढ़ाएंगे ही। और यह सत्य भी है क्योंकि स्वामी जी आर्याभिविनय एवम् सत्यार्थ प्रकाश में स्थान-स्थान पर स्वराज्य स्थापना को ही प्रोत्साहन दिया था। वस्तुतः १८५७ की क्रांति के सूत्रधार उनसे हरिद्वार मिले थे। योगी का आत्मचरित्र नामक ग्रन्थ में इस विषय का विशद विवरण प्राप्य है।

शाहपुरा (भीलवाड़ा) —मोहनलाल शारदा

वेद मंदिर के लिए ११) भेजने वालों की सूची

११) रु० की आहुति देने वाले दानी

१. श्री गोस्वामी, नागौर २. श्री वजीर चन्द, नई-दिल्ली ३. श्रीमती रक्षा रानीधवन, शिमला ४. श्री प्रेमदेव भूषण, भरतपुर ५. श्री दयाशंकर,खजुहा ६. श्री जी. सी. सिंह, राजपुरम ७. श्री ओमप्रकाश, वदीदरा ८. श्री सुरेश चन्द, दिल्ली ९ श्री सी. राय, गौहाटी १०. श्री जगदीश सिंह, बिजनौर ११. श्रीरोहतास c/o ५६ ए. पी. ओ. १२. श्रीमती दुर्गारानी, करनाल १३ श्री गंगाराम, पूना १४. श्री ई. सत्यनारायण, मलगोडा १५. श्री बूलचन्द, बिजनौर १६. श्री नक्कू सिंह, मिर्जापुर १७. श्रीमती विमला राम, पटना १८. श्री गोपाल, उदयपुर १९ श्री रोशन लाल बंगाल २०. श्री गिरवर सिंह, नैनीताल २१. श्री मुरलीधर, न. ग्राम २२. श्री भंवरलाल, राजस्थान २३. श्री रमेशचन्द, आगरा २४. श्री प्रेमप्रकाश, मुजफ्फर नगर २५. श्री चमन लाल, सहारनपुर २६. श्री भीमराव, निजामाबाद २७. श्री पी. एन. आर्य, बंगलौर २८. श्री ब्रह्मदत्त, गोरखपुर २९. श्री योगेन्द्र पाल, देहली ३०. श्रीमती सरोज भल्ला, तरन-तारन ३१. श्री आर्य समाज, लक्सर ३२. श्री बालकृष्ण, गुना ३३. श्री गौरी शंकर, रायगढ़ ३४. श्री तिलक राज, कानपुर ३५. श्री धर्म दयाल, दिल्ली ३६. श्री वेद प्रकाश, फर्रुखाबाद ३७. श्री चौ. कृपा राम, हरियाणा ३८. श्री दिकोमल, अहमदाबाद ३९. श्री बी. एस. शाह, मेहसाना ४०. श्री डा. प्रवीन, उड़ीसा ४१. श्री कनकलता शुक्ला, फतेहगढ़ ४२. श्री भीमसिंह, जोधपुर ४३. श्री बिहारीलाल, लखीमपुर ४४. श्री पूरन चन्द, आगरा ४५. श्री जगदीश, राजस्थान ४६. श्रीलक्ष्मीचन्द, सहारनपुर ४७. श्री नागेश्वर, बांदा ४८. श्री पृथ्वीराज, गुजरात ४९. श्री हरीश चन्द्र, कानपुर ५०. श्री ओमप्रकाश, जयपुर ५१. श्री भंवर सिंह, मुजफ्फर नगर ५२. श्री जगमल सिंह, मिर्जापुर ५३. श्री चन्दनसिंह, पौड़ी गढ़वाल ५४. श्री रविन्द्र, गुजरात ५५. श्री धर्मचन्द, खरड़ ५६. श्रीमती शकुन्तला, उन्नाव ५७. श्री सन्त गोरख यादव, मुजफ्फर नगर ५८. श्रीमती अशोक साहनी, दिल्ली ५९. श्री विशनचन्द, हसनपुर ६०. श्री बाबू राम, राजखरखवाब ६१. श्री भारत सुगन्धी, मैसूर ६२. श्री ओम ट्रेडर, चित्रादुर्गा रोड ६३. श्री रमेश चन्द, हल-द्वानी ६४. श्री उमरावसिंह, पीलीभीत ६५. श्री कालूराम, देहरादून ६६. श्री जयकृष्ण, मुरादाबाद ३७. श्री सूरज-प्रकाश, अलीगढ़ ६८ श्री नैशनल सुगर, मेरठ ६९. श्री रामकुमार, मुजफ्फर नगर ७०. श्री राम समाज, फैजाबाद ७१. श्री बी. जी. देसाई, रामपुर ७२. श्री मानसिंह C/o ए. पी. ओ. ७३. श्री सन्तोषअग्रवाल, जी०टी० रोड ७४. श्री द्वारका प्रसाद, रानीगंज ७५. श्री केवलराम, महाराष्ट्र ७६. श्री नरबहादुर, दार्जिलिंग ७७. श्री रुकम चन्द, आगरा ७८. श्री पं. जर्नादन, परूलिया ७९. श्रीमती अहिल्या, मध्यप्रदेश ८०. मती लक्ष्मी देवी, कानपुर ८१. हरी सिंह भगत, हिसार ८२. रतनलाल, नासिक ८३. वेदी लाल, मोदीनगर ८४. बी. आर. गुलाटी दिल्ली ८४. जगन्नाथ सिंह, अलीगढ़ ८५. द्वारका प्रसाद, वर्दवाण ८७. एस. आर. कपूर, तिलक बाजार ८८. बालमुकन्द, मुजफ्फर नगर ८९. मती दयावती ग्रोवर, जंगपुरा ९०. दामोदर, दिल्ली ९१. मिट्ठन लाल, किनारी बाजार ९२. बी. दयाल, बंगलौर ९३. श्री एम० आर० गर्ग सक्सेना ९४. सुरेशचन्द, फिरोजाबाद ९५. विद्याधर, सम्भल ९६. राम-दत्त गर्ग, दिल्ली ९७. लटूरी सिंह, गाजियाबाद ९८. श्याम सुन्दर, लखनऊ ९९. सत्य गुप्त, कानपुर १००. इन्द्रदत्त' अमृतसर १०१. श्यामलाल, परभनी १०२. दामोदर लाल, दिल्ली १०३. तीर्थ राम, शिलांग १९४. ज्ञानचन्द, निजामाबाद १०५. मांगी लाल, जयपुर १०६. प्रकाश लाल, कोटा १०७. मती पदमावती, दिल्ली १०८. लक्ष्मन, दिल्ली १०९. वी. नी. बगरिया, अहमदाबाद ११०. सुखदेव, उन्नाव १११. मुरीनालाल, मुजफ्फर नगर ११२. केवलराम रामेश्वर, शेगाँव ११३. सीताराम आर्य, सिकन्दराबाद ११४. जगदीश भारद्वाज, भरतपुर ११५. वीरेन्द्रसिंह आर्य, लखनऊ ११६. मा० छोटेराम, नई दिल्ली ११७. दामोदर राय, देवरिया ११८. नाथ प्रसाद गुप्ता, वाराणसी ११९. के. के. अग्रवाल, झाकोण १२०. रामेश्वर नाथ अग्रवाल, सहारनपुर १२१. पी.एन. कपूर, रुड़की १२२. सीनियर मार-केटिंग मिल्स, मु० नगर १२३. गणेश प्रसाद चौधरी, पटना १२४. यशपालसिंह शास्त्री,सहारनपुर १२५. गोपालकृष्ण गुप्ता, अम्बाला १२६. शैलेन्द्र कुमार c/o यदुनाथ प्रसाद, नवादा १२७. एन. आर. निगम, शिकोहाबाद १२८. ओम प्रकाश c/o मोतीलाल पोद्दार, शुजालपुर १२९ रामकिशन कासट, दिल्ली १३०. ईश्वर भाई फूला भाई पटेल c/o छोटा भाई जेठा भाई पटेल, सागर १३१. साधुयोग, फरीदकोट १३२. राम सागर आर्य, फतेहपुर १३३. राजेन्द्रलाल सोनी,

मुरादाबाद १३४. बंशीलाल दोड़े, कर्नाटक १३५. सत्यपाल शर्मा, रामपुर बुशहरा १३६. आदित्य सिंह, हजारी बाग १३७. भुवनेश्वर बख्श कनौजिया, उन्नाव १३८. एन. जी. रवीन्द्र नाथ, सकलासपुर १३९. बी. के. जोशी, भोपाल १४०. शव अवतार गुप्ता, शाहजहाँपुर १४१. चिरौंजी लाल, विदिशा १४२. सुरेन्द्रप्रतापश्रीवास्तवा, पीलीभीत १४३. प्रभाअग्रवाल, कानपुर १४४. युवराज जयकिशन सिंह, बिहार १४५. बद्री शाहमुम्द्रिकाराव, धनवाद १४६. डा० देवेन्द्र प्रताप कुलश्रेष्ठ, टुन्डला १४७. सुन्दरलाल गुप्ता, हमीरपुर १४८. बालकृष्ण गुप्त, ग्वालियर १४९. m/s लच्छूराय विनोद कुमार, सहारनपुर १५०. वी. के. चाऊबाय, झाँसी १५१ वसंत लाल slo मदारीलाल, शाहजहाँपुर १५२. सूरजभान वंसल c\o वंसल ब्रदर्स, दिल्ली-६ १५३. हथुमान प्रसाद अग्रवाल, धनवाद १५४.

अनिरुद्ध शर्मा, मांडवी १५५. दयालसिंह विष्ठ, गढ़वाल १५६. वृजानन्दन, मुड़कावली १५७. देव कृष्णाचार्य, खोरासा १५८. परशुराम प्रसाद डिब्रूगढ़ १५९. भगवान दास गुप्ता, इलाहावाद १६०. सलेकचन्द्र जयप्रकाश, खातोली १६१. ज्ञानचन्द, धनवाद १६२. रतनाकर, पसहेड़ा १६३. रघुवरदत्त खुल्वे, अलमोड़ा १६४. रस वैद्य भास्कर ली, गोडल १६५. रघुवीरसिंह, निरपुड़ा १६६. एस. के. सहगल, थाना १६७. रामवृक्ष सिंह आर्य, चेरो १६८. डा० शिवराम गुप्त, वाराणसी १६९. डा. हरेन्द्र, डीसर १७०. भूपसिंह, रहमतपुर १७१. रामलखन, सोलीयापार १७२. हजारीनाथ, ढकपुरा १७३. भगवत प्रसाद, पटना १७४. वेदप्रकाश, कानपुर १७५. बाँकेलाल, नैनीताल १७६. जयनारायण खण्डेलवाल, प्रतापगढ़ १७७. ओमप्रकाश अग्रवाल, सीलीकुडो १७८

लक्ष्मणदास चौधरी, छपरा १७९. रातदयाल, बंगलूर १८०. कृष्णाचरण जायसवाल, शाहगंज १८१. राजस्थान ट्रेडिंग कं०, अहमदावाद १९२. नन्दलाल-शर्मा, धरमागतपुर वथुआ १८३. श्यामलाल अग्रवाल, बम्बई १८४. अश्वनी कुमार, लखनऊ १८५. मक्खन लाल, टिहरी १८६. बद्रीनाथ लद्रगी, सिनगसन १८७. एच. के. वर्मा, प्रतापपुर १८८ रामबहादुर सिंह, ५६ ए. पी. ओ. १८९. मन्त्री आर्य समाज, बदौर १९०

मदनगोपाल तिवारी, मंदिर कसौद १९१. डा. के. सत्य गुप्ता, कानपुर १९२. ओमप्रकाश आर्य, मद्रास १९३. मन्त्री आर्य समाज, जामनगर १९५. आर० डी० उपाध्यय, फैजाबाद १९५. लालजीप्रसाद, हिरसापुर १९६. नन्दलाल सोनी, दिल्ली-५ १९७. डा० यशपाल, रतनगढ़ १९८. मन्त्री आर्य समाज, कोसीकला १९९. वैद्य हनुमान प्रसाद, रलावता २००. बलदेव सिंह, उदयपुरा २०१. सत्य प्रकाश, लखनऊ २०२. बलवीर सिंह, उदयपुर २०३. डा. हेमराज जयपुर २०४. रत्नलाल, परमसि २०५. एम. एल. गर्ग, जगरलपुर २०६. मुलकराज गुप्ता, जम्मू २०७. जगदीश सिंह, शिमला २०८. मुंशीलाल, बंगलूर २०९.

रामगोपाल गोरीशंकर, सिरसा २१०. डा. अमरचन्द खण्डेलवाल, अकबरपुर २११. भीमसिंह, बड़ौदा ११२. महावीर इन्डस्ट्रीज, रुपैडिहा ✻

शिवरात्रि पर

१. महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र भारी संख्या में बाँटिए मूल्य २) । १००) सैकड़ा

२. छोटी जीवनी १५) सैकड़ा

३. दयानन्द चित्र दर्शन मूल्य २०)

४. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश—सजिल्द मूल्य ८)

मंगाइए : बाँटिए : वेद संदेश फैलाएं

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

★
विचारों के लिए संपादक उत्तरदायी नहीं
★

आर्यसमाज का सर्वोच्च न्यायालय बनाया जाए

आयसमाज के विवाद कोर्ट में नहीं जाने चाहिएँ। उनके निपटारे का प्रकार न्याय सभाएं हैं, वे सक्रिय हों, प्रभावी हों, यह आवश्यक है। पर अभी तक दुर्भाग्य वश उन्हें निष्पक्ष ढंग से न गठित किया गया, न वे सक्रिय ही हुयीं।

अतः १, २ जनवरी को देश के चुने हुए विद्वानों ने आर्य विचार परिषद् के तत्वावधान में निर्णय लिया है कि सभी विवादों को शीघ्र निपटाने के लिए एक ५ संन्यासियों की सर्वोच्च समिति बनाई जाए। वस्तुतः ऋषि दयानन्द के निर्देशानुसार संन्यासी ही सर्वोच्च होता है। इसी संदर्भ में मेरा सुझाव है कि—

इन पाँच संन्यासियों में से किन्हीं भी ३ संन्यासियों की पीठ आवेदन के एक मास के भीतर निर्णय करे। तीन संन्यासियों के उपस्थित न रहने पर एक संन्यासी भी निर्णय करे।

यदि किसी को उस निर्णय से सन्तोष न हो तो उसकी अपील पुनः की जा सके। ऐसी स्थिति में कम से कम ३ संन्यासी एक साथ उस विवाद पर निर्णय करें। जो सबको धार्मिक दृष्टि से मान्य होना चाहिए।

धर्म के क्षेत्र में शक्ति धर्म ही है। अतः सभी आर्य जन धर्म के बल से—इस व्यवस्था का सम्मान करेंगे तो आर्यसमाज का गौरव बढ़ेगा।

सर्वोच्च समिति के संन्यासी महानुभावों के कुछ नाम—

१. श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब)

२. महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज
आर्यसमाज मंदिर मार्ग नई दिल्ली

३. स्वामी धर्मानन्द जी महाराज
आनन्द कुटीर ज्वालापुर (सहारनपुर)

४. स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती
कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली)

५. स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती
आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली

क्या मैं आशा करूँ कि सार्वदेशिक सभा या दयानन्द-संस्थान विचार कर इस प्रकार के सर्वोच्च न्यायालय का गठन कर सभी विवाद समाप्त कर आर्य सामाज का गौरव बढ़ायेंगे।

नागपुर —रमेश कुमार

आर्य वानप्रस्थ या संन्यासी ध्यान दें

महोदय

बिहार राज्य के चम्पारण्य जिले में नेपाल की सीमा पर स्थित प्राचीन वाल्मीकि आश्रम के स्थान पर वाल्मीकि नगर है जहाँ उस पर जाने के लिये बैरेज है। यहाँ हजारों अन्य सरकारी कर्मचारी रहते हैं पर वैदिक धर्म का प्रचार प्रायः नहीं के बराबर है। यहां कुछ सज्जनों के प्रयास से ८ सैटवेद तथा अन्य साहित्य का प्रचार हो गया है। कुछ पत्र पत्रिकायें भी आने लगी हैं। यह स्थान बगहा रेलवे स्टेशन से ३० मील दूर है यहाँ रहकर कोई संन्यासी यहां तथा नेपाल में सुविधा से प्रचार कर सकता है। संन्यासी को अंग्रेजी साहित्य का भी ज्ञाता और पूर्ण विद्वान होना चाहिए ताकि उसका प्रभाव यहां की जनता पर पड़े। क्या कोई वानप्रस्थ या संन्यासी इधर आकर प्रचार करेंगे?

—रामावतार शर्मा

—प्रो० धर्मवीर

स्वाधीन भारत में पराधीनता की विजय

कभी-किसी पुस्तक में पढ़ा था जापानियों जैसी अद्-भुत जाति भी दुनिया में और कोई नहीं है, उसने पहले पहल दृष्टि में ही गोरी चमड़ी के रहस्य को पहचान लिया था, और आज ढाई तीन सौ वर्ष पहले यह नियम बना दिया था जब तक चन्द्र सूर्य का आस्तित्व है तब तक ईसाई हमारे राज्य में न घुसने पावें यदि घुसने की धृष्टता करें तो चरम दण्ड के भागी हों।

पता नहीं इस सन्दर्भ का क्या अर्थ है परन्तु इतना तो सत्य है जो तब सत्य था वह आज भी सत्य है किसी को शक्ति हीन करने का बड़ा मधुर उपाय वणिक अस्त्र है यह जितना ही बुद्धिपूर्वक काम में लाया जायेगा उतना ही मधुर होगा और जितना मधुर होगा उतना ही अधिक घातक इसको समझा और विदेशी मिश्नरी ईसाई लोगों ने इसका प्रयोग भी प्रचुर किया, आज भी कर रहे हैं। वे जहाँ भी जाते हैं सेवक होकर जाते हैं और स्वामी बनकर रहते हैं। ये असभ्य लोगों को सभ्यता सिखाने आते हैं, आते हैं अशिक्षितों को शिक्षित करने परन्तु इनकी सभ्यता का जहाँ जहां भी प्रयोग किया गया है वह प्रत्येक घटना आज भी साक्षी हैं देवत्व की।

जहाँ-जहां भी इनकी सभ्यता और संस्कृति जंगलियों को मनुष्य बनाने पहुँची है, वहाँ-वहां के मनुष्यों की कला नष्ट हो गई, व्यापार समाप्त हो गया, धर्म मिट गया और ज्ञान का लोप हो गया, हरियाली मरुस्थल बन गई, स्वस्थ्य प्राणी कंकाल रह गये, साहसी हृदयों में भीरुता ही शेष रह गई और मस्तिष्क में आजन्म पीढी दर पीढी उनकी सभ्यता, संस्कृति और श्रेष्ठता को स्वीकार कर लेने वाली दासता मात्र बच गई। इनके अधिकार में आने के बाद जो अपना स्वरूप दिखाई दिया, वह श्रेष्ठशिल्प शास्त्रियों को उनका मजदूर, अन्न-जल-हीन बुभिक्षित निरीह मानव, उनकी संस्कृति के परिणाम स्वरूप सद् गृहस्थ सम्पदा गोधन का सर्वनाश और बच्चों का दूध के अभाव में नाना व्याधियों से ग्रस्त होकर सूख-सूखकर मर जाना।

पाश्चात्य सभ्यता और सस्कृति मूल मन्त्र है लज्जा हीन, नग्न स्वार्थ एवं पाशविक बल की प्रधानता। ये सभ्यता के नाम निर्बल, असमर्थ, असहाय लोगों का घातक कर उनका सर्वस्व छीनने के लिए सदा सचेष्ट रहते हैं। शक्तिहीन और निर्बल जातियों की रक्षा करने उन देशों में जाकर वहां के लोगों को उनकी सम्पत्ति से वंचित कर देते हैं, और शाश्वत धर्म का पालन प्रारम्भ कर देते है। जो निर्बल का समग्रता से अकल्याण कर सके ऐसे नियमों की बेड़ियाँ पैरों में डालकर उन पंगुओं के उत्तरदायित्वका निर्वाह करना इनका परम कर्त्तव्य है उसे ये पूरा करते हैं। पंगुओं के उत्तर दायित्व के वहन को ये अपने लेख भाषण धर्म प्रचार और पाठ्य पुस्तको में प्रचारित करते हैं। ये लोग जिस धरती पर भी कदम रखते हैं वहां की छोटी-छोटी बुराईयों को बड़ा करके बतलाते हैं और मुख्य बात से लोगों ध्यान हटाकर उनके हित चिन्तक कहलाते हैं। यह सब उसी प्रकार चलता रहता है जैसे आँखें फोड़ कर ब्रेल लिपि सिखाना होता है। उनके उपदेशक उनके छात्र उनकी संस्थाओं में काम करने वाले लोगों को अपने पेट पालने के लोभ में उस देश के रहने वाले होकर भी इस असत्य को स्मरण करना पड़ता है और प्रचारित करना पड़ता है। ये लोग जिस देश में जाते हैं पहले व्यापार और धर्म प्रचार की सुविधायें मांगते हैं लोगों की भावनाओं को भड़काते हैं कलह के अवसर उपस्थित करते हैं और षड्यन्त्र से जीत लेते हैं। इनको बलवान लगता है तब तक ये उसके प्रति नम्र और शिष्ट लगते हैं परन्तु अवसर मिलने पर ये गहरा डंक मारने से कभी नहीं चूकते इतिहास के पृष्ठ इस बात के साक्षी हैं। ये भारत में फैले विदेशी धर्म प्रचारक केवल उपकार करने के लिए आये हैं, इनकी भावनायें इतनी धर्म प्रचार की होती तो असम नागालैंड में ये परिस्थितियाँ कभी नहीं होती वहां गरीब किसानों ईसाईयत के लोभ से ऋण देने के षडयन्त्र की आवश्यकता नहीं होती, स्कूलों में पढ़ने वालों को केवल ईसाई होने पर सुविधा नहीं दी जाती, सरकार की सहायताओं का उपयोग करके ईसाई बनाने के लिए अनि-वार्य नहीं होता रामकृष्ण की लोहे की और ईसा की लकड़ी की मूर्ति बनाकर पानी पर तैराने की और राम कृष्ण की लकड़ी की और ईसा की लोहे की मूर्ति का भाग में डालकर नष्ट न हो सो सत्य जैसा नारकीय पाखण्ड करने की आवश्यकता कभी न पड़ती। भूखे पेट की भूख बुझाने के लिए अन्न का उपयोग ही पर्याप्त होता है। इसके साथ ईसाईयत को गले ठूँसने की आवश्यकता न पड़ती यदि सच में स्वार्थ बुद्धि और षडयन्त्र की योजना न होती तो ईसाई से हिन्दू बने लोगों को तंग करना,पीटना, मार डालने की चेष्टा करना और अवसर मिलने पर मार डालना साधु धर्म प्रचारकों के लिए कभी अनिवार्य नहीं

होता। बड़े चिकित्सालय खोलकर ईसाईयत के प्रसार की इच्छा न होने पर भी धर्म की गोली बलात् ठूँसने की जरूरत नहीं पड़ती।

नेपाल जैसे देशों में भाषा अनुसंधान संस्थान के नाम अड्डे बने ईसाईयत का षड्यन्त्र ज्ञात होने पर उनको वहाँ संस्थान बन्द कर चले जाने का आदेश भी देने की आवश्यकता न पड़ती यदि इन विदेशी ईसाई मिशनरी प्रचारकों में यदि सत्य, शान्ति और धर्म के प्रचार की वास्तविक भावना होती तो इन प्रचारकों दूसरे साहित्य के पढ़ने से घृणा न होती और न ही उनके ईमान भ्रष्ट होने का खतरा होता जब इनके प्रचारकों से चर्चा होती है तो ये ईसा पर ईमान लाओ सब काम सिद्ध होंगे परन्तु इनसे कहो तुम ईमान भले ही मत लाओ अमुक पुस्तक पढ़कर केवल बतलाओ तुम्हें कैसी लगी तो ये कहते हैं हमारा ईमान नष्ट हो जायेगा। ऐसे धूर्तों का जाल आज सारे देश में अड्डे बनाकर बैठा है।

वास्तव में ईसा और ईसाईयत में इतना जादू होता तो वे बिना दवा के ही सब ईसाइयों का रोग दूर कर देते, चिकित्सालय में जा कर ईसा का नाम लो और रोग मुक्त हो जाओ, जैसा पाखण्ड भी आवश्यक नहीं था सरकार की और जनता की करोड़ों रुपये की सम्पत्ति से चलने वाले चिकित्सालय न खोने बाइबिल के पन्ने ही रोगियों को घर बैठे रोग मुक्त कर देते कितना बड़ा आविष्कार होता। बच्चों को स्कूलों में जाकर पास होने के लिए पुस्तक के स्थान पर रुपये पढ़ने की प्रेरणा नहीं देनी पड़ती, ऐसे अवैज्ञानिक भ्रष्ट तन्त्र का प्रसार आज समस्त भारत में और विश्व के विभिन्न देशों में चल रहा है।

भारत सरकार ने भी उन्हें सभी प्राप्य सुविधायें देना स्वीकार किया है, यह ईसाईयत एक बड़ी जीत है, जो कालान्तर विष का परिणाम प्रस्तुत करेगी। जो लोग कभी इन जब मिशनरियों में रहे हैं उन को इस इतिहास की सारी जानकारी अवश्य होगी, मध्य भारत, उड़ीसा बंगाल असम और पूर्वोत्तर क्षेत्र में ईसाई प्रचारकों के सामने पिछले वर्षों से बड़ी कठिनाई सामने आ रही थी वहाँ के लोग जो अधिकांश में पिछड़ी जातियों के हैं वे सरकारी सुविधाओं को त्याग कर ईसाई बनने के लिए तैयार नहीं इस समस्या के समाधान के ईसाई लिए मिशनरियों का एक बड़ा तन्त्र भारत सरकार में कार्य कर रहा था आज उसकी साध पूरी हुई, उसे सफलता मिली अब ईसाईयों के धर्म प्रचार में प्रलोभन देने के अवसर दुगने हो गये, इसलिए सहज होगा कि उनके लक्ष्य में इससे पर्याप्त सुगमता से सफलता प्राप्त होगी।

हमारा विधान पवित्र है अवश्य ही अच्छे फल मिलेंगे जो सदा ही स्मरणीय होंगे।

हम इतिहास को उसकी उदारता के लिए सदा ही स्मरण करते आये हैं भारत में जहाँगीर की उदारता सदा ही याद रखी जायेगी चीन के मञ्चू नरेश का चीन सदा ही कृतज्ञ रहेगा, चीन का इतिहास बनाने में उनका उदार हृदय बहुत बड़ा स्थान रखता है।

अंग्रेजों ने चीनियों को अफीम का उपहार दिया। फ्रांसीसी सभ्यता ने अफीम न देकर युद्ध देकर उपकृत किया जर्मन मिशनरियों ईसा के सुन्दर न्याय धर्म शान्ति के उपदेशों से चीन को इतना उपकृत किया कि अब उसे धर्म अफीम ही लगने लगी है। न जाने आज के लिए इतिहास सरकार और भविष्य के लोग किसको याद कर अपनी श्रद्धा और आदर के पुष्प अर्पित करेंगे इस विजय के लिए ये तो भविष्य ही जाने। □

—: जागरण गीत :—

जागरण के गीत गाओ।
जागरण गति का संदेशा, आज भूतल को सुनाओ ॥१॥
जागरण ऊषा सुहागिनि का सदा शृंगार करता,
माँग में सिन्दूर सौष्ठव कर्म का साभार भरता।
कर्म की धारा धरातल में बहाकर फिर दिखाओ ॥२॥
जागती हैं, सूर्य किरणें भाग जाता है अंधेरा,
ताम सी रजनी, शयन की चिन्ह है कृति का सवेरा।
मान-सरोवर में मनोहर पुण्य पद्मों को खिलाओ ॥३॥
कलि सुषुप्ती, बोद्धद्वापर, उठ खड़े तो तरुणवेला
कार्य कौशल में लगे तो सत्य युग लाये सचेता।
विबुध व्याख्या केतु को निर्भीकता से यों उठाओ ॥४॥
मूलशंकर ने स्वयं जग सुप्त जगती को जगाया,
सत्य जीवन ध्येय जो था खोजने पर ईश पाया।
उस व्रती को प्रेरणा में, क्यों न अपने को चलाओ ॥५॥
आज धरणी आर्यपुत्रों को सतृष्ण सी बुलायें
'बोध' की चित्रावली का रंग फीका न पड़ जासे।
रंगशालायें रंगीले रंग अपना ही जमाओ।
'प्रणव' कवि की काव्य कड़ियाँ विश्व में तुम गुनगुनाओ।

—कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम० ए०

—डा० योगेश्वर देव

आर्यसमाज की पानीपत को देन

भारत के इतिहास में आर्यसमाज का आगमन एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना है। आर्यसमाज ने देश को मानसिक दासता से मुक्त करने का जो अमूल्य कार्य किया है वह अन्य किसी भी संस्था द्वारा संभव न हो सका। उस ने रुग्ण देश की बीमारी को पूर्णतया समझा और उसे दूर करने का प्रयत्न किया। आर्यसमाज एक सांस्कृतिक क्रांति है। यही कारण है कि आर्य समाज ने हिन्दू धर्म पर पड़ी हुई गर्द को झाड़कर दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, शूद्रशिक्षा, विधवा-विवाह, अस्पृश्यतोद्धार जैसे कार्यों को तर्क की शक्ति से वेदों द्वारा प्रमाणित करते हुए पुनः प्रतिष्ठित करने का जो अमूल्य कार्य किया है वह किसी अन्य ने नहीं किया।

पानीपत में आर्य समाज का इतिहास उस काल से आरम्भ होता है जब इसकी कुल आबादी ३५-४० हजार के लगभग थी और उनमें हिन्दू २५ प्रतिशत से अधिक नहीं थे। यह वह समय था जब झगड़े हो जाना मामूली बात थी। आर्यसमाज-पानीपत की गणना उस समय भारत की उच्च कोटि की आर्य समाजों में की जाती थी। यह स्थानीय हिन्दुओं की रीढ़ था; न वह कभी झुका, न उसने कभी हिंदुओं को झुकने दिया।

आर्यसमाज ने समाज का सुधार शिक्षा के माध्यम से किया है, मुख्यतः स्त्रियों की शिक्षा के माध्यम से। पानीपत में लड़कों के शिक्षण के लिए यद्यपि म्यूनिसिपैलिटी द्वारा चालित मिडिल स्कूल, जैनियों का जैन स्कूल तथा मुस्लिम स्कूल आदि की गणना की जा सकती है लेकिन लड़कियों के शिक्षण के लिए कोई प्रबन्ध नहीं था। यह एक बड़ी कमी थी जिसे आर्यसमाज बड़ा बाजार ने पूरा किया और सन् १९१९ में लड़कियों के लिये कन्या पाठशाला खोल दी। उसके पश्चात् सन् १९४६ में बाबा गुरुमुखसिंह जी के सहयोग से आर्य गर्ल्स हाई स्कूल खोल दिया।

इसके पश्चात् सन् १९४७ का वर्ष आया जो अपने साथ बँटवारे का पैगाम लाया। आबादियाँ बदलीं और उनके साथ सामाजिक ढाँचा भी हिला। पानीपत इतिहास नये सिरे से बनना प्रारम्भ हुआ। पानीपत उनका अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बना, घर-घर में खड्डियाँ चलने लगीं, नये-नये कारखाने स्थापित हो गये और लक्ष्मी की कृपा दृष्टि होने लगी। सब-कुछ होने लगा लेकिन सरस्वती के क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिये अब भी पानीपत को करनाल का मुख देखना पड़ता था।

अगला कदम रखने से पूर्व पानीपत की आर्यसमाज ने ३१ मार्च १९४८ को आर्य हाईस्कूल की स्थापना की। और यथाशीघ्र कालेज बनाने का निर्णय कर लिया। स्थानीय आर्यसमाज के अनुरोध पर सन् १९५३ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन पानीपत में रखा गया। यही वह अधिवेशन था जिसने पानीपत में आर्य कालेज खोलने का तथा सहायता देने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। शिक्षण के इतिहास में पानीपत की आर्यसमाज का यह कदम बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण था जिसने पानीपत के शैक्षणिक जगत् को एक नया जीवन दिया। यही वह कालेज है जिसने सबसे पूर्व कुटिया से लेकर महल तक सरस्वती का वरदान बाँटा है। अब तो आर्य समाज मॉडल टाउन तथा खैल बाजार की आर्यसमाज ने भी शिक्षा के क्षेत्र में अपने कदम बढ़ाये हैं तथा लड़कियों के लिए स्कूल व हाई स्कूल खोले हैं।

आर्य कालेज की स्थापना की घोषणा के पश्चात् आर्य समाज के कर्मठ व्यक्ति इस कार्य में जुट गये जिनमें प्रमुख थे पं० कुन्दनलाल जी, श्री रामगोपाल जी वकील, श्री धर्मसिंह जी वकील, श्री सोहन लाल जी, श्री जगदीश मित्र जी, श्री ठाकुरदास जी बत्रा, श्री मेघराज जी बत्रा, श्री नारायण दत्त जी वैद्य आदि। श्री रामगोपाल वकील ने तो प्रबन्धकर्त्री सभा के सेक्रेटरी के रूप में वर्षों तक अपने उत्तरदायित्व को बड़ी खूबी के साथ निभाया।

इनके अतिरिक्त आर्य कालेज को कुछ परिवारों की विशेष देन है। श्री ला० दिलीपसिंह जी का परिवार तथा शिंगला-परिवार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जो प्रारम्भ से लेकर अब तक आर्य कालेज के साथ सम्बन्धित हैं।

श्री जयभगवान दास जी और ला० दिलीपसिंह जी दो भाई हैं। दोनों ही आर्यसमाज के मूक कार्यकर्त्ता हैं। आर्य समाज के लिये ला० दिलीपसिंह जी का आगमन एक शुभसूचना थी। उनकी दूरदर्शिता ने उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के प्रधान पद पर ला आसीन किया। लक्ष्मी उन पर मुग्ध हैं, वे सरस्वती पर मुग्ध हैं और उनके उदार विचारों को सरिता में मात्र आर्य समाज ने स्नान किया हो, ऐसी बात नहीं। यद्यपि वे स्वयं आर्य समाजी हैं, पर दरवाजे सबके लिए खुले हैं।

दूसरा परिवार है शिंगला-परिवार। सपाटू से वर्षों पूर्व यह परिवार पानीपत आया था। उत्तरी भारत में वे किंग-आफ-कन्डयूट पाइप्स के नाम से जाने जाते हैं। भाई तीन हैं। पर, आर्य कालेज के साथ सम्बद्ध दो भाई हैं—श्री रामानन्द जी तथा श्री ओम प्रकाश जी।

श्री रामानन्द जी की विशेषता उनकी मूकता है। कॉलेज की किसी इमारत की कोई ईंट ऐसी नहीं जिसने उन्हें न देखा हो। कॉलेज को भव्य बनाने का बहुत अधिक श्रेय उन्हीं को है।

दूसरे भाई हैं श्री ओमप्रकाश जी, जिन पर सरस्वती ने अपना पूर्ण वरद् हस्त रखा है। वे श्रोता भी हैं और वक्ता भी। वे व्यवहार में अत्यधिक सुसंस्कृत हैं। उनके पास धन है, पर अभिमान नहीं, न बोलने में, न कार्यों में। आजकल आप आर्यकालेज के अध्यक्ष हैं।

आर्य-कॉलेज के उत्थान की कहानी अधूरी रह जायेगी यदि इसकी विशेषता का उल्लेख न किया जाये जो आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य था और जिसे प्राप्त करने में सम्बन्धित प्रिंसिपलों ने सहयोग दिया—

प्रिंसिपल सुन्दरदास जी मल्होत्रा

आर्य कॉलेज के प्रथम प्रिंसिपल थे श्री सुन्दरदास जी मल्होत्रा। प्राचीन संस्कारों में सराबोर शरीर से वृद्ध होते भी प्रिंसिपल मल्होत्रा मन से वृद्ध नहीं थे। एक हाथ में पंखा और दूसरे हाथ में कलम पकड़े, सिर पर पगड़ी धारण किये छोटे से कमरे से उन्होंने कालेज के संचालन का जो अद्भुत कार्य किया है वह हमेशा कालेज के इतिहास में स्मरणीय रहेगा। उनका नाम कालेज के संस्थापकों में है। वे रिटायर्ड प्रिंसिपल थे। अपने अनुभवों से उन्होंने कॉलेज की गाड़ी को बड़ी योजनापूर्वक खींचा और आगे बढ़ाया। उनका कार्यकाल कुल तीन-चार वर्षों रहा।

प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित

श्री मल्होत्रा जी के पश्चात् श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित का आगमन एक नये युग का सूत्रपात था। प्रथम ने अनुभव का सहारा लिया, दूसरे ने उत्साह का। गेहुंआ रंग, शुकाय नासिका, बालों से झांकती दिव्यभाल, खादी के वस्त्रों में लिपटे, धरती पर संभल के बोझा देने वाले शरीर से दुर्बल दीक्षित जी भीड़ में बड़ी सुगमता से पहचाने जा सकते हैं और यदि कदाचित् बातचीत का अवसर मिल जाय तो कोई प्रभावित हुए बिना रह जाये, ऐसा सम्भव नहीं। उत्तर प्रदेश में जन्मे, पंजाब में पले, जीवन के नाना झंझावातों को सहते, परन्तु दाएं भाग में प्राप्त पैतृक सम्पत्ति—भारतीय संस्कृति की रक्षा करते इस व्यक्ति ने जीवन की कितनी ही उत्थान और पतन की घाटियों से गुजरते जिस ऊँचाई का स्पर्श किया है, वह कम स्पृहणीय नहीं है। उन्होंने जीवन की गाड़ी को नाना परिस्थितियों में से खींचा है। कहां दिल्ली इन्जीनियरिंग कॉलेज में नियुक्ति और वहां होशियारपुर का अध्ययन कार्य; कहां भारत बैंक के सांख्यकीय विभाग में कलम घिसाई और कहां आर्य कॉलेज का आचार्य पद। यह बात यहीं तक सीमित नहीं है, अपितु जीवन का आगे बढ़ता प्रत्येक कदम उपलब्धियों से भरा हुआ है। एक तरफ जहां गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्या-सभा के सदस्य रहे, पंजाब यूनिवर्सिटी के फैलो नियुक्त हुए, हरियाणा प्रान्त के लगभग १०० कॉलेजों की प्रबन्ध समितियों की मैनेजमैंट्स एसोसिएशन के मंत्री रहे, भूतपूर्व न्यायधीश मेहरचन्द महाजन द्वारा स्थापित आर्य शिक्षण संस्था परिषद् के संयुक्त सचिव नियुक्त हुए तो दूसरी तरफ आर्यसमाज की गतिविधियों में जीवन को रमाये रखा। यहां तक कि हैदराबाद में आर्य समाज द्वारा चलाये जाने वाले सत्याग्रह में ६५ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर सम्मिलित हुए फिर जेल भी गए।

दीक्षित जी जीवन में किसी भी सीढ़ी पर क्यों न रहे हों, एक बात निश्चित है कि उनके अन्दर का आर्यतत्व हमेशा जागता रहा है और इसकी छाप प्रत्येक पर पड़ी। और यह सम्भवतः उन्हें पितृ-पक्ष और श्वसुर-पक्ष दोनों से ही प्राप्त हुई। पिता थे स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज व देवीचन्द जी के सहयोगी पं० केदारनाथ और श्वसुर थे आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान श्री पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री। यह वही परिवार है जिसने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम पद को सुशोभित किया। सार्वदेशिक सभा के प्रथम प्रधान थे पं० वंशीधर जी वकील।

आर्यसमाज, हिन्दीभाषा और देश—ये तीन ही हैं जो दीक्षित जी के जीवन में दृष्टिगोचर होते हैं। वैसे 'आर्य समाज' इस अकेले शब्द में ही शेष दोनों आ जाते हैं। स्वामी दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने भारत की सोई हुई आत्मा को जगाने का प्रयत्न किया। वे ही थे जिन्होंने सबसे पूर्व स्वतन्त्रता का नारा बुलन्द किया और हिन्दी भाषा का सहारा लिया। यही कारण है कि आर्य समाज और आर्य समाज की संस्थाएँ इन दोनों का प्रतीक बन गईं। गुरुकुल कांगड़ी जैसी संस्थाएं इसकी प्रत्यक्ष उदाहरण हैं और जहां किसी आर्य संस्था का दीक्षित जी जैसा व्यक्ति ही आचार्य रहा वहां और भी अधिक निखार आया

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

"यहाँ भी समय की मार ही है कि हमने जो कुछ समझा था—उसका ठीक उल्टा ही हो गया। कुछ भाग्य रेखाएँ ही ऐसी हैं हमारी। हजारों प्रयत्न करते हैं किन्तु बात नहीं जाती है संभाली।"

'क्या मामला है भइया सदानन्द—आज क्यों इस प्रकार दुखी मन से बोल रहे हो। क्या ऐसी बात हो गई है कि हृदय में पड़ हुए अपने छाले अनायास छील रहे हो। किस बात ने है आपका दिल दुखाया—हमारी तो कुछ भी समझ में नहीं आया।"

क्या बताएँ भाई जिज्ञासानन्द! बात ही कुछ ऐसी है कि मन को हजार तरह समझा रहे हैं परन्तु समझ नहीं पाता। मन का दुखड़ा ही ऐसा है कि बताना चाहते हैं पर बताया भी नहीं जाता।"

"क्या हो गया है, कुछ तो बताओ—शायद हमें भी कोई उपाय सूझ जाए। हम ही अपनी बुद्धि पर डालें जोर—कुछ करेंगे विचार—शायद हो जाए आकी समस्या का निदान।"

तो सुनो भाई—हमारे लाड़ले हैं न सुख चैन लाल—उन्होंने हमारा सुख और चन सभी छीन लिया है। हमने उनको पढ़ाने लिखाने पर १६ साल में पूरा १६ हजार खर्च किया है। हमें थी यह आशा कि जब करेंगे उसका विवाह तो पूरी हो जाएगी हमारी चाह। क्योंकि हमने था हिसाब फैलाया—ब्याज वह समेत कुल योग था मिलाया जो २० हजार ७०० रुपए था आया। किन्तु अब वह है कि बिना दहेज शादी पर अड़ गया है। हम चलाते हैं बात तो कह देता है कि मुझे तो एक पैसा भी नहीं लेना। लाला छदम्मी लाल को तो आप जानते ही हैं।"

क्यों नहीं। भली भाँति जानते हैं। उनके मामले में में तो नाम बड़े और दर्शन छोटे की कहावत उलट कर फिट करनी पड़ती है। क्यों कि वह नाम के है छदम्मी लाल किन्तु हैं तो लखपति।"

"तो भाई हमने उन्हीं की कन्या से अपने सुखचैन लाल के ब्याह की बात चलाई थी। अपनी जाति वाले भी हैं और हैं भी खाते पीते। उन्हीं की कन्या है सबसे बड़ी—वो भी है सातवीं तक पढ़ी।"

किन्तु भाई सदानन्द—आपके सुपुत्र ने तो एम० ए० पास किया है। लड़की की शिक्षा तो आपके पुत्र के मुकाबले में बहुत कम है ही साथ ही उसके एक पैर में भी कुछ कमी है। आपने क्या सोचकर किया है यह विचार।

'भाई एक पैर में दोष ही सही किन्तु वह देने को तैयार है पचास हजार—किन्तु हमारे तो भाग्य देवता ही रूठ गए हैं, लड़का है कि तैयार ही नहीं होता। दहेज के बिना विवाह की बात ही करता है जागता सोता।"

।भाई आप तो हैं समाज सुधारक, स्वयं भी तो आपने भाषणों में करते हैं यही प्रचार। अब यदि आपका फजन्द नहीं हो रहा है तैयार तो इसमें है क्या बुराई—हमें तो आपकी ही बात कुछ समझ में नहीं आई। इतने सुन्दर सुशील, सुशिक्षित पुत्र के लिए क्या और कोई कन्या आपकी समझ में नहीं आई।"

"भाई भाषण का राशन तो हम दूसरों को बाँटते हैं। यह यज्ञ की अग्नि तो हम समाज के लिए सुलगाते हैं—किन्तु यह तो हमारे ही घर में सुलग उठी है आग। इसीलिए तो हम कह रहे हैं कि हमारे फूट—गये हैं भाग्य।"

'हमें तो लगता है कि समाज का करने को बटांधार ही आप सरीखे बन रहे हैं श्रेष्ठजन समाज के कर्णधार। आपका सुपुत्र तो सही मार्ग ही अपना रहा है। आप अपने भाग्य को सराहिए। बेटा मनसा—वाचा—कर्मणा एक रूपता का उपासक है—यह तो दुर्भाग्य नहीं आपका सौभाग्य ही है।"

'जिज्ञासानन्द जी। आप भी उल्टा सीधा बोल रहे हैं। हम तो आए थे आपसे यह कहने के लिए आप हमारे साहबजादे को समझाइए—किन्तु आप तो उसी की भाषा बोल रहे हैं। वरन अब चुप हो जाइए। हमारे जख्मों पर नमक न छिड़कवाइए। हम तो आगे ही दुःख पा रहे हैं। आप है कि हमें और अधिक तड़पा रहे हैं। आप हमारे सामने से तुरन्त हट जाइए।'

सदानन्द जी—हम तो चले। आपको एक ही बात कहे देते हैं कि आप भाषणों के स्थान पर अपनी कृति में आदर्शों को उतारेंगे तो स्वयं भी सुख पाएँगे समाज को भी कुछ न कुछ दे जाएँगे। अन्यथा श्रेष्ठजन समाज को बदनाम ही करायेंगे।

—दिग्दर्शनानन्द

उच्चतम न्यायालय का निर्णय

धर्म परिवर्तन कराने का बुनियादी अधिकार नहीं

नई दिल्ली, उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया है कि संविधान ने किसी नागरिक को किसी अन्य व्यक्ति को अपने धर्म में दीक्षित करने का बुनियादी अधिकार नहीं दिया है।

न्यायालय ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति अपने धर्म के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के अलावा जान-बूझकर किसी अन्य व्यक्ति को अपने धर्म में दीक्षत करता है तो यह कार्य संविधान के अनुच्छेद २५ के अंतर्गत देश के सभी नागरिकों को दी गई स्वविवेक की स्वतन्त्रता का हनन होगा।

मुख्य न्यायाधीश श्री ए० एन० रे० की अध्यक्षता में न्यायालय की ५-सदस्यीय संविधान पीठ ने मध्यप्रदेश धर्म-स्वतन्त्रता अधिनियम १९६७ और उड़ीसा धर्म-स्वतन्त्रता अधिनियम-१९६७ की सांविधानिक वैधता को उचित ठहराते हुए यह निर्णय दिया। दोनों अवैधनियमों में बल प्रयोग अथवा प्रलोभन अथवा प्रपचपूर्ण तरीकों से किसी व्यक्ति को दूसरे धर्म में दीक्षत करने पर रोक है तथा जबरन धर्म में दीक्षत करने पर रोक है तथा जबरन धर्म-परिवर्तन पर दंड की व्यवस्था है।

उच्चतम न्यायालय की संविधान पीठ में मुख्य न्यायाधीश के अलावा न्यायाधीश श्री एम० एच० बेग, न्यायाधीश श्री आर० एस० सरकारिया न्यायाधीश श्री पी. एन. सिंघल और न्यायाधीश श्री जसवन्त सिंह भी शामिल थे।

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने निर्णय दिया था कि मध्य प्रदेश अधिनियम की धारा ३-४ और ५ से जिनमें जबरन धर्म-परिवर्तन पर रोक की व्यवस्था है, संविधान के अनुच्छेद २५ (१) का उल्लंघन नहीं होता है।

लेकिन उड़ीसा उच्च न्यायालय ने उड़ीसा अधिनियम को संविधान के प्रतिकूल बताते हुए राज्य सरकार को निर्देश दिया था कि वह इस अधिनियम को लागू न करें।

उड़ीसा उच्चन्यायालय के इस निर्णय के खिलाफ उड़ीसा सरकार ने उच्चतम न्यायालय में अपील की। मध्य प्रदेश अधिनियम की वैधता को चुनौती बालोदस बाजार के पादरी रटैसलौस ने दी थी जिन्हें धारा ३,४ और ५ का उल्लंघन करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया था। ✻

मरघट में शैतान नहीं जागेगा ?

सच तो यह है जीवन हँसता रोता बीत रहा है,
सब के सपने टूट-टूट कर बिखर रहे हैं,
लगता मन की ज्वाला जला रही है मुझको,
मेरे मन की पशुता धीरे-धीरे सिसक रही है,

भूल चुका है अंतर अपना ठौर ठिकाना,
धरती पर यूं ही रहना है हमने माना,
इसीलिए हम करते रहते हैं मनमानी
जाना भी होगा, यह बात नहीं है जानी,

जान बूझ कर पीते रहते हैं विष प्याला,
धधक रही है मानस में बस स्वार्थ भावना,
सब कुछ मेरा, मैं ही मैं हूँ, चिंतन मेरा,
और नहीं कुछ भी है सोचा-समझा-जाना

जीवन का हर क्षण प्रबल वासना का प्रतीक है,
लक्ष्य कामना जीवन धन की भूल चुके हैं,
मेरा रूप अन्धकार में लुप्त हुआ है,
शून्य गगन का आरोहण भी स्मरण नहीं है।

कोई मत मेरीचिन्तन धारा को मोड़ नहीं दे पाया,
मुझ को अपना बोध कराने कौन यहाँ पर आया,
आज सभी हैं व्यर्थ भटक रहे हैं
दानवता के अंगारों पर थिरक रहे हैं।

अंतिम बेला, पता नहीं कैसे आ पहुंची,
पहुंचा मैं उस ठौर जहाँ मानव जलता था,
प्यारा, राज दुलारा अग्नि चिता पर चढ़ा हुआ था,
मैंने देखा, बोध हुआ तब, अब कहता हूँ,
मरघट ही है तीर्थ, वही ज्योतिर्मय है,
वहाँ चलो ओ दुनिया वालो—चलकर देखो,
मरघट में शैतान नहीं जागेगा !

—भारतेन्द्र नाथ

—प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर

महर्षि का बलिदान और ऋषि के घातक

श्री आचार्य विश्वश्रवा जी का एतद्विषयक एक लेख 'जन ज्ञान' साप्ताहिक में प्रकाशित हुआ है। आचार्य जी का लेख पठनीय व उपयोगी है। आचार्य जी से थोड़ा सा मत भेद रखते हुए भी इस विषय पर उनके विचार से हम पूर्णतया सहमत हैं। महर्षि का बलिदान विषपान से ही हुआ, यह तो एक निर्विवाद ऐतिहासिक तथ्य है जिसको कोई झुठला नहीं सकता। आचार्य जी ने जोधपुर के एक उत्सव का वृत्तान्त दिया है। हमें भी यह वृत्तान्त पढ़कर दुःख व आश्चर्य हुआ। हमें भी कुछ वर्ष पूर्व आर्य समाज गुलाब सागर जोधपुर ने बुलाया था। महर्षि के बलिदान पर डेढ़ घण्टा हमारा व्याख्यान भरी सभा में एक चौक में हुआ था। हमारी एतद्विषयक खोज के कारण हमें बहुत नये पुराने लोग मिलने आये। एक भी ऐसा न मिला जिसने यह कहा हो कि हमारे बड़ों ने कभी यह कहा कि ऋषि यहाँ रुग्ण हुए थे। परम्परा से ही सबको पता है कि षड्यन्त्र से ऋषि की हत्या की गई।

हमें भी उस महानुभाव की सूझ पर हँसी ही आई थी जिसने यह लिखा था कि राज्य की बहियों में तो ऋषि को विष दिये जाने की चर्चा ही नहीं। तब कई बाबुओं ने हमसे इसके बारे में पूछा था, हमारा उत्तर भी वही था जो आचार्य जी ने 'जनज्ञान' में लिखा है। ऐसे लोगों को यह भी पता नहीं कि राज्य की बहियों में तो ऋषि के प्रचार का भी कुछ विवरण नहीं है। आचार्य जी ने लिखा है कि महाराज जसवन्त सिंह ने ऋषि को बुलाया था। यह स्मरण रहे कि जसवन्त सिंह या प्रतापसिंह किसी ने भी ऋषि को स्वयं पत्र न लिखा था। सब कुछ एक योजना बद्ध ढंग से वहां हुआ। यह भी स्मरण रहे कि मियाँ फैजउल्ला तब राज्य का मुख्य मंत्री न था।

एक बात और स्मरण रहे कि प्रतापसिंह जिसे ऋषि भक्त समझा जाता रहा है और ऋषि भी जिसे सज्जन पुरुष समझते थे, बड़ा चतुर, कूटनीतिज्ञ व अंग्रेज भक्त था। इसी व्यक्ति से आर्यों ने प्रथम डी० ए० वी० कालेज की नींव रखवाई थी। यह ऋषि भक्त तो था नहीं और चाहे कुछ भी इसे समझ लो। इस महाराजा ने अपनी आत्म कथा लिखी थी। श्री राम जी शर्मा ने इस आत्म कथा की चर्चा करने पर डा० भारतीय जी का उपहास उड़ाया था और डंके की चोट से एक प्रकार से लिखा था कि प्रतापसिंह ने आत्म कथा नहीं लिखी थी। हम भी डंके की चोट से लिखते हैं और तब भी लिखा था कि आत्मकथा लिखी थी। इस आत्मकथा पर कभी पृथक एक लेख देंगे। इस आत्मकथा का भी 'मुण्डन संस्कार' अंग्रेज के हाथों हुआ। जो जो अंग्रेज को न भाया सब कुछ निकाला गया। यही आत्मकथा आज इस बात का प्रमाण है कि ऋषि के विषपान के पीछे एक बहुत बड़ा षड्यन्त्र था।

महर्षि के बोध पर्व के अवसर पर हम ऋषि के बलिदान पर अपनी कुछ नई खोज का सारांश देते हैं। कुछ लिखने से पूर्व एक घटना का उल्लेख कर दें। डा० जार्डन्स जी से हमारी उपस्थिति में एक सुयोग्य उपाधिधारी बंधु ने पूछा कि क्या अँग्रेजी समाचार पत्रों में ऋषि के विषपान पर कुछ छपा था? हमें यह प्रश्न अच्छा नहीं लगा। हमने तब उस भाई से कह भी दिया कि इस विषय पर वह हमसे बात करें। डा० जार्डन्स जी इस विषय के विशेषज्ञ नहीं। स्वयं डा० जार्डन्स जी ने तो हमसे कहकर हमारी लिखी पुस्तिका 'महर्षि का बलिदान अमर विषपान' भेंट में ली।

प्रश्न यह है कि क्या यदि कोई अंग्रेजी पढ़ा लिखा, या अंग्रेजी पत्रिका या अंग्रेज किसी तथ्य पर मौन रहे तो तथ्य को स्वीकार ही न किया जावे? वैसे तो हमने विदेशी, स्वदेशी व विधर्मी एवं विरोधी विद्वानों लेखकों के भी प्रमाण इस तथ्य की पुष्टि में अपनी पुस्तक में दिये हैं।

आर्य गण! आज इस तथ्य को नोट कर लें कि जोधपुर राज्य के एक मुसलमान Military Secretary श्री अहमद थे। वह सेवा निवृत्त होकर लन्दन में रहते थे। जब ऋषि जोधपुर पधारे तो श्री अहमद वहीं थे। जब विष दिया गया तब भी वह जोधपुर ही थे।

श्री अहमद ने महर्षि के बलिदान के कुछ वर्ष पश्चात् स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया था कि ऋषि को जोधपुर में विष दिया गया था यद्यपि वह महाराजा व उसके भाई को इसमें दोषी न मानते थे तथापि उनको यह तथ्य मान्य था कि भयंकर षड्यन्त्र करके ऋषि को विष दिया गया था। सत्य का प्रचार व प्यार ही ऋषि के बलिदान का

कारण था। श्री अहमद का यह वक्तव्य पत्रों में छपा था। गुजरात के हमारे आर्य युवक मित्र व आर्य इतिहास के प्रेमी, ऋषि भक्त पं० रमेश मेहता जी की कृपा से हमें वह वक्तव्य मिल गया है।

जिन लोगों को अंग्रेज की ही साक्षी चाहिए उन सज्जनों की सेवा में हमारा नम्र निवेदन है कि पूज्यनीय महात्मा आनन्द स्वामी जी की आज्ञा से अपनी पुस्तक छपने के बाद भी हम इस विषय पर और खोज में जुट गये। इसका ही यह फल है कि पंजाब के एक अंग्रेज अधिकारी का एक बहुत पुराना लेख हमें मिल गया। उसने इसमें स्पष्ट लिखा है कि ऋषि दयानन्द को जोधपुर में विष दिया गया।

उ० प्र० के एक उच्च अंग्रेज अधिकारी का भी हमें एक लेख मिला है। इस लेख में भी उसने ऋषि को विष दिया जाना स्वीकार किया है। यह लेख सरकार की रिपोर्टें हैं ऋषि के बलिदान के कुछ वर्ष उपरान्त आर्य समाज के बढ़ते हुए प्रभाव की चर्चा के प्रसंग में रिपोर्टें छपी थीं। दोनों रिपोर्टें हमारे पुस्तकालय में हैं।

यह तथ्य भी सुनिश्चित है कि मुख्य हत्यारा शाहपुरा का ही था। शाहपुरा के महाराजा नाहर सिंह तो ऋषि के भक्त थे परन्तु उनके भेजे सेवक तो नौकर ही थे। वे नौकर तो ऋषि भक्त न थे। जो लोग नाहरसिंह जी का यह वचन उद्धृत करते हैं कि 'मेरे नौकर मेरे विश्वास पात्र थे, वे यह कुकर्म, यह घृणित पाप कैसे कर सकते थे।' ऐसे भाई यह जान लें कि नाहरसिंह जी ने यह वाक्य केवल शाहपुरा की लाज रखने के लिए कहा। जोधपुर पर तो धब्बा लगा ही, शाहपुरा भी एक रसोई बनाने वाले के कारण क्यों अपयश का भागी बने।

कुछ भी हो नौकर नाहर सिंह जी के अपने विश्वास पात्र हों, सो हों वे ऋषि के लिए तो धूर्त ही निकले। हम यह अनुभव प्रमाण से नहीं लिख रहे। ऋषि दयानन्द जी ने शाहपुर से भेजे गये, इन विश्वास घातियों के सम्बन्ध में स्वयं लिखा है।

हम पुनः आज दुहराते हैं कि ऋषि की हत्या में किस किस का कितना दोष है और कौन कौन इस पाप कर्म में भागीदार था, यह एक पृथक प्रश्न है परन्तु यह षड्यन्त्र किसी एक के मस्तिष्क की उपज न था। ऋषि जी ईश्वर को सर्वस्व समर्पण करके लोकोपकार के लिए वेद प्रचार देश सुधार में अहर्निश लगे तो थे। प्राणों के निर्मोही ऋषि को वैसे पूरा-पूरा पता था कि किसी भी क्षण शरीर छूट सकता है। वह जानते थे कि दुष्ट जन इसे शरीर को देर तक चलने न देंगे। महर्षि के एक विरोधी ने इस विषय पर जो कुछ लिखा वह फिर कभी पाठकों के सामने रखेंगे। ✻

—प्रकाशचन्द्र अजमेर

शुभ कामना

आयमुनि के संन्यासाश्रम दीक्षा पर श्री त्रिलोकचन्द जी राघव २६ दिसम्बर को स्वामी जगदीश्वरानन्द जी से संन्यास ग्रहण कर स्वरूपानन्द बने। उस अवसर पर सुप्रसिद्ध कवि प्रकाश जी की हार्दिक शुभ कामना।

निज कर्त्तव्य कर्म के पालन करने के ही कारण।
बन्धु! आर्यमुनि तुम सहर्ष संन्यास कर रहे धारण।
जगदीश्वरानंद स्वामी जी प्रबुद्ध प्रकाण्ड पण्डित।
वेद धर्म अनुरागी त्यागी मनीषि महिमा मण्डित।
हर्ष मुझे है उनसे संन्यास आश्रय दीक्षा लेंगे।
वे श्रद्धेय सत्य शिव सुन्दर तुम को शिक्षा देंगे।
बन्धु! आर्यमुनि धन्य तुम्हें है, धन्य विचार तुम्हारा।
अति सीमित परिजन से यद्यपि पाओगे छुटकारा।
अब परिवार तुम्हारा हो जायेगा जग सारा।
पर यह संन्यासाश्रम पथ है तीव्र छुरे की धारा।
होकर द्वन्द्वातीत सुख दुखादिक सहर्ष हो सहिये।
वैदिक धर्म प्रचार प्रेम से चहुँ दिश करते रहिये।
आज हर्ष के साथ हृदय मेरे यह ईर्ष्या भारी।
मैं रह गया आपने की निःश्रेयस की तैयारी।
है अधिकार न मुझे किन्तु मम स्नेही आप रहे हैं।
भद्र भावना से प्रेरित हो कतिपय शब्द कहे हैं।
अखिल विश्व कल्याण हेतु शत वर्ष जगत् में जीवो।
हो स्वाध्याय निमग्न सर्वदा प्रभु प्रेमामृत पीवो।

—महाविद्वान पं० युधिष्ठर मीमांसक

वेद वाणी का संपादकीय

श्रद्धानन्द अर्धशताब्दी न मनाते तो अच्छा था

प्रातः स्मरणीय महात्मा परम तेजस्वी स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान अर्धशताब्दी दिल्ली प्रशासन और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में मनाई। यह चार दिनों का समारोह था। इसकी सम्पन्नता यदि जलूस से आंकी जाये तो इसे लौकिक दृष्टि से अच्छी सम्पन्न हुई यह कहा जा सकता है। परन्तु प्रतिदिन की उपस्थिति को ध्यान में रखकर देखा जाये, तो अन्तिम दिन २६ दिसम्बर रविवार के दिन को छोड़कर पण्डाल में उपस्थिति इतनी नागण्य थी कि इसे मुहावरे में कहा जाए तो कहना पड़ेगा—पण्डाल में दिन में भी उल्लू बोलते थे। हमारीदृष्टि में श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी न मनाई जाती, तो अच्छा था। इससे तो एक प्रकार से उनके बलिदान का तिरस्कार ही हुआ। साथ ही यह भी प्रकट हो गया कि निष्पक्ष=किसी पार्टी से सम्बन्ध न रखने वाला, वाला चाहे कितना ही तेजस्वी व्यक्ति क्यों न हो, उसका बलिदान कितना भी महान् क्यों न हो, हम भारतीय उसे अल्प काल में ही भूल जाते हैं, अथवा भुला दिये जाते हैं। हम समझते हैं कि इसका एकमात्र कारण यह था कि जब महात्मा गाँधी जी ने महर्षि दयानन्द की किन्ही कारणों से असत्य आलोचना की, तो भारतवर्ष में एक आग सी लग गई थी। और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे तेजस्वी, महात्मा गाँधी से कन्धे से कन्धा मिलाकर कांग्रेस के कार्यक्रम में भाग लेने वाले व्यक्ति ने कांग्रेस से किनारा काट लिया था।

स्वामी श्रद्धानन्द महर्षि दयानन्द के उपदेश के कारण पहले भारतीय थे, पीछे दयानन्द के अनुयायी और उसके पीछे कांग्रेसी। वे आजकल के मौकापरस्त आर्यसमाजियों के समान निस्तेज नहीं थेकि वे राजनीति में प्रतिष्ठा पाने के लिए दयानन्द और उसके आदर्शों का अपमान सहन करते। फिर 'जले पर नमक छिड़कने' वाली कहावत के अनुसार उनकी हत्या एक मतान्ध सिरफिरे व्यक्ति के हाथों हुई।

हमारे विचार में यदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अपने ही बलबूते पर महात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की बलिदान अर्धशताब्दी मनाती, तो वर्तमान समारोह से कई गुना अच्छी मनाई जाती।

जो आर्यसमाज अंग्रेजी शासन के आगे नहीं झुका, जिसने हैदराबाद के तानाशाही नवाब को केवल अपने बलबूते पर नाकों चने चबा दिये, वह आर्य समाज इस समय इतना निस्तेज क्यों हो गया है? सहस्रों आर्यवीरों का बलिदान उसके रक्त को गरम रखने में असमर्थ क्यों हो गया? यह आर्य समाज के सामने एक विचारणीय प्रश्न बन गया है।

उक्त निर्बलता का कारण

हमें तो इसका एकमात्र कारण यह दिखाई पड़ता है कि आर्यसमाज के नेता कहलाने वाले व्यक्ति राजनीति के दुश्चक्र में इतने फंस गये हैं कि उन्हें अपनी मेम्बरी को सही सलामत बनाये रखने के लिये उसके रहने से ही फुर्सत नहीं। इतना ही नहीं, ये नेता वस्तुतः आर्यत्व से सर्वथा विहीन हो गये हैं, नहीं तो तीन-तीन चार-चार बार दल बदलने वाले दूसरे शब्दों में वेश्या के समान अपनी आत्मा वा शरीर को बेचने वाले नेता नामधारी शर्म के मारे कभी के चुल्लू भर पानी में डूब मरते।
इसमें आय जनता का भी दोष कम नहीं है। वह भी आर्यत्व से प्रायः विहीन हो गयी है, अन्यथा इन राजनीति के चक्र में गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले तथा कथित नेताओं को कान से पकड़कर आय समाज से बाहर कर देती। जो थोड़े बहुत दयानन्द के सच्चे अनुयायी आर्य हैं, उनकी संख्या स्वल्प होने के कारण उनकी चलती नहीं। अतः वे प्रायः वर्तमान आर्य समाज के अस्थिपञ्जर ढांचे को देखकर उदासीन से हो गये हैं।

दयानन्द का स्वप्न समाप्त हो गया है। आयेंगे खत अरब से, जिनमें लिखा यह होगा, गुरुकुल का ब्रह्मचारी

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

—लक्ष्मीदत्त दीक्षित

सामयिक विचार

धर्मनिरपेक्षता के नाम पर

सन् १९४९ में भारतीय संसद में हिन्दू कोड बिल के नाम से हिन्दुओं के लिए एक व्यवहार संहिता बनाने के लिए विधेयक प्रस्तुत किया गया था। हिन्दुओं की ओर से प्रबल विरोध होने पर उसे वापिस ले लिया गया। कालान्तर में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने उसके कई भाग करके धीरे-धीरे स्वीकार करा लिया। विरोध में सबसे बड़ा तर्क यह था कि सामाजिक व्यवहार के लिए धर्म अथवा जाति के आधार पर कानून बनाना न केवल धर्मनिरपेक्षता की दृष्टि से अनुचित है बल्कि देश के संविधान के भी विरुद्ध है। संविधान के निर्देशक सिद्धांतों में स्पष्ट कहा गया है कि देश में प्रत्येक भारतीय के लिए समान व्यवहार संहिता होगी। इस समय स्थिति यह है कि हिन्दुओं के लिये तो मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति की बजाय सरकार द्वारा बनाये गये कानून लागू हैं किन्तु मुसलमानों ईसाइयों आदि पर उनके अपने-अपने धर्मग्रन्थों के नियम लागू होते हैं। उदाहरण के तौर पर एक हिन्दू एक समय में एक से अधिक विवाह नहीं कर सकता किंतु मुसलमान को चार तक विवाह करने की छूट है क्योंकि उस पर सरकारी कानून लागू नहीं होता। इन्दिरा शासन ने सामाजिक कल्याण के लिए अनेक क्रांतिकारी पग उठाये हैं। क्या वह बिना किसी प्रकार के भेद-भाव के सारे देशवासियों के लिए समान व्यवहार संहिता बनाने का साहस नहीं कर सकती। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक न उसकी धर्मनिरपेक्षता पूर्ण कही जा सकती है और न सबके देश की मुख्य धारा के अंग बनने की भावना को बल मिल सकता है।

जान-बूझ कर हानि पहुँचाना

सरकारी आदेशानुसार सिगरेटों के पैकटों पर छपा रहता है—'सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' तथा "Cigraette Smoking is injurious to health." यह भी अब निर्विवाद है कि सिगरेट पीने से स्वास्थ्य को मामूली हानि नहीं होती बल्कि वह बहुत हद तक कैंसर और टी. बी. के लिए जिम्मेदार है जिनके इलाज पर सरकार करोड़ों रुपये खर्च करती है। जानबूझ कर बीमारी को पैदा करना और फिर उसके इलाज पर करोड़ों रुपये खर्च करना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? चोरी, डाका, बेईमानी, रिश्वतखोरी, जालसाजी, चोरबाजारी और अब दहेज लेना-देना आदि समाज और व्यक्ति के लिए हानिकर हैं तो उनकी रोकथाम के लिए पोस्टर छाप देना मात्र काफी नहीं समझा जाता। उन्हें अपराध मानकर दंडनीय घोषित किया जाता है। इसलिए यदि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए सचमुच हानिकारक है तो वैसा करने वाले के लिए समुचित दण्ड की व्यवस्था की जानी चाहिए। यदि सरकार को उसमें करोड़ों रुपये टैक्स के रूप में मिलते हैं तो लोगों की स्वास्थ्य रक्षा पर भी तो करोड़ों नहीं अरबों खर्च भी करने पड़ते हैं। फिर जानबूझ कर लोगों के स्वास्थ्य को खराब कर पैसा कमाना किसी कल्याणकारी राज्य के लिए कहाँ तक ठीक है? हमारी सम्मति में तो—

Necessities should be free, luxuries should be taxed and vice should be prohibited.

बुराई को तो जड़मूल से मिटा देना भी श्रेयस्कर है। सरकार हानिकारक लिख-लिख कर पिलाती रहे और लोग हानिकारक पढ़-पढ़ कर पीते रहें—इससे क्या लाभ होगा?

साधुओं से अपील

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कुम्भ के अवसर पर मेले में आयोजित साधु सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए साधुओं से अपील की है कि वे देश में फैले अन्धविश्वासों को दूर करने का यत्न करें। हम प्रधान मन्त्री के कुम्भ के अवसर पर इलाहाबाद जाने या साधुओं के सम्मेलन में भाषण देने के विरुद्ध नहीं हैं। लेकिन यदि वह सचमुच देश में प्रचलित अंधविश्वासों को दूर करना चाहती हैं तो उन्हें वहाँ जाकर पाखण्ड खण्डनी पताका लहरानी चाहिए थी और उनका भाषण कुछ इस प्रकार का होना चाहिए था, "कुम्भ के नाम पर जिस भावना से आप लोग यहाँ पर आये हैं वह स्वयं में एक बहुत बड़ा अंधविश्वास है। मनुष्य को हर हालत में अपने किए हुए कर्मों का फल भोगना पड़ता है। नदियों में स्नान करके पापों से छुटकारा नहीं मिल सकता। शुभ कर्म करने से ही मुक्ति मिलती है। अपने दुर्गुणों को दूर करके सद्गुणों को ग्रहण करना चाहिए। हर किसी को भगवान मान लेना, अपने हृदय की बजाय जहाँ वहाँ भगवान को ढूंढने के लिए ठोकरें खाते फिरना, जीते माता-पिता की सेवा न करके मरने के बाद उनके नाम पर हट्टे-कट्टे निकम्मे अनपढ़ ब्राह्मणों को भोजन वस्त्रों का दान करते रहना, चमत्कारों पर विश्वास करना, देवी-देवताओं को खुश करने के लिए मूक प्राणियों

की बलि देना आदि सब अन्धविश्वास हैं। और इन अंध-विश्वासों को फैलाने में सबसे बड़ा हाथ आप साधुओं का है। इसलिए मैं आपसे कहने आई हूँ कि स्वयं इन पाखंडों को छोड़ें और जनता को इनके चंगुल से छुड़ायें। मुझे प्रसन्नता होगी यदि अगले १२ वर्ष के बाद होने वाले कुम्भ के मेले में जब मैं यहाँ आऊँ तो मुझे यहाँ कोई दिखाई न पड़े।

काश, वे कह सकती ?
क्या हम विदेशी हैं ?

स्वराज्य आंदोलन का आधार था अंग्रेजों का विदेशी होना और हमारा इस देश पर जन्मसिद्ध अधिकार होना। परन्तु आधुनिक परम्परागत इतिहास के आधार पर प्रचलित मान्यताओं के आधार पर हम उतने ही विदेशी हैं जितने अंग्रेज। गाँव की छोटी से छोटी पाठशाला से लेकर बड़ी-से बड़ी यूनिवर्सिटी तक में यही पढ़ाया जाता है कि "पहले इस देश में कुछ जंगली लोग बसते थे। कुछ समय बाद आर्यों ने इस देश पर आक्रमण किया और यहाँ के आदिवासियों को जीतकर देश पर अधिकार जमा बैठे। इन्हीं आक्रान्ताओं की सन्तान हम हैं।" आर्य लोग कब कहाँ से आये और पहले यहाँ कौन लोग बसते थे—इसमें मतभेद हो सकता है। किन्तु वे बाहर से आये और उनके आने से पहले यहाँ कोई और लोग बसते थे, इस विषय में सभी एकमत हैं। देश के बड़े-बड़े नेता और शासक भी ऐसा ही मानते हैं। विचारपूर्वक देखा जाये तो इस सिद्धांत के मानते ही हमारे लिए भी "भारत छोड़ो" उतना भी आवश्यक हो जाता है जितना अंग्रेजों के लिए। इस देश में ऐसे लोग और राजनैतिक दल हैं जो सचमुच ऐसी माँग करने लग गये हैं। वास्तव में महर्षि दयानन्द ही ऐसा व्यक्ति हुआ जिसकी पैनी दृष्टि ने इस गम्भीर खतरे को देखा और सत्यार्थप्रकाश में लिखा—"इस (आर्यावर्त्त) से पहले ही इस देश का कोई भी नाम नहीं था और न कोई आर्यों से पूर्व इस देश में कोई बसते थे। आर्य लोग सृष्टि के आदि में कुछ काल के पश्चात् तिब्बत से सीधे इसी देश में आकर बसे थे। किसी संस्कृत के ग्रन्थ या इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों को लड़ कर, जय पा के, निकाल इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है।" आदिवासी नाम से पुकारे जाने वाले लोगों को सरकार वनवासी या पिछड़े वर्ग के नाम से सुविधायें दे सकती है। उन्हें आदिवासी नाम देकर अलगाव की भावना को जागृत करना राष्ट्र के हित में नहीं है।

(शेष पृष्ठ ३० का)

है। दीक्षित जी ने आर्य कालेज में हिन्दी का जिस रूप से प्रचार किया उतना शायद ही किसी प्रिंसिपल ने किया हो। वे तो अधिकांशतः अंग्रेजी में छपे निमन्त्रण पत्रों को भी स्वीकार नहीं करते थे।

जब यह कालेज खुला था, उस समय थोड़े से विद्यार्थियों से ही प्रारम्भ हुआ था और बढ़ते-बढ़ते विद्यार्थी-संख्या सन् १९६८ में १२५० तक पहुँच गई। प्रथम इसके पास कोई ग्राउन्ड नहीं था, शायद कुल जमीन ५ बीघा थी और अब १०५ बीघा है, जिसके लिये कालेज की प्रबन्धकर्त्री सभा ने डेढ़ लाख रुपया दिया। प्रथम इस के पास कोई होस्टल नहीं था, अब एक होस्टल है। इसी कॉलेज ने लड़कियों के लिए पृथक् विंग बनाकर शिक्षण का प्रबन्ध किया। ये सब उपलब्धियाँ श्री दीक्षित जी के काल की हैं।

आर्य शिक्षण संस्थाओं की सबसे बड़ी विशेषता है भारतीय संस्कृति की रक्षा। शिक्षा के साथ विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि जगाना इनका मुख्य लक्ष्य है। भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ ही भारत दूसरों को दे सकता है; लेकिन जिसके प्रति हमारी आँख ही मुँदी हैं। आँख ही नहीं मुँदी हुई अपितु आज के नवयुवक को हास्यास्पद प्रतीत होती है और यह एक निश्चित सत्य है कि इस संस्कृति का उत्थान विद्यालयों और महाविद्यालयों की बैंचों से ही हो सकता है। प्रत्येक संस्था का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि वह आने वाली सन्तति में इस संस्कृति की ज्योति प्रज्ज्वलित करे। आर्य कालेज की यही सबसे बड़ी विशेषता है।

(शेष पृष्ठ ३५ का)

हलचल मचा रहा है। निर्मल हो गया है। सरकारी सहायता की मृगमरीचिका के पीछे भागने से बड़े गुरुकुलों का गुरुकुलत्व समाप्त हो गया है। बहुत से गुरुकुल हाई स्कूल वा कालेजों में परिणत हो गये हैं, पर नाम गुरुकुल ही रखे हुए हैं जो साधारण गुरुकुल बने हैं, उनमें भी सरकारी परिक्षा के कुचक्र के कारण परीक्षाओं के सहायक केन्द्र मात्र बन गये हैं। गुरुकुलों की गरिमा सर्वत्र नष्ट हो गई है।

आर्य समाज तभी पनप सकता, है जब आर्यसमाज की उन समस्त संस्थाओं को बन्द कर दिया जाये, जिन में राजकीय शिक्षा पद्धति के अनुसार शिक्षा दीक्षा दी जाती है।' उनके स्थान में ऋषि दयानन्द के निर्देश के अनुसार आर्ष शिक्षा पद्धति के अनुसार वेद-वेदांगों के प्रौढ़ विद्वान् तैयार करने की योजना बनानी चाहिए।

भिलाई में श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी

—आर्यसमाज भिलाई नगर की ओर से गत मास २६ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धशताब्दी तथा वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विश्व शांति यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द, पं० रामदयालु शास्त्री एवम् पं० मदन मोहन शास्त्री आदि के भाषण एवम् प्रवचन हुए।

गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर (तिलहर) का महोत्सव

—गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर, तिलहर शाहजहाँपुर का महोत्सव ११ से १३ फरवरी तक आयोजित किया गया है। ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार १२ फरवरी को प्रातः होगा तथा नवीन ब्रह्मचारियों को भी प्रवेश दिया गया।

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर (कानपुर) का निर्वाचन

—आर्य समाज हरजेन्द्र नगर (कानपुर) के चुनाव में श्री गिरधारी लाल प्रधान, श्री सीताराम व श्री मुन्नी लाल आर्य उपप्रधान एवम् श्री रामजी आर्य मंत्री तथा श्री देवेन्द्र देव कोषाध्यक्ष चुने गए। आर्यवीर दल के अधिष्ठाता श्री दुर्गादास निर्वाचित हुए!

आर्य समाज उज्जैन द्वारा साहित्य वितरण

—आर्य समाज उज्जैन द्वारा २ जनवरी को जिला-चिकित्सालय में १२५ रोगियों को फल तथा आर्य समाज सम्बन्धी साहित्य भी बांटा गया।

६ फरवरी को पुनः ऐसा ही कार्यक्रम आयोजित होगा।

२ जनवरी को ही आर्य समाज की ओर से वन भोज कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। जिसमें लगभग ६० परिवारों ने भाग लिया। इस अवसर पर भजन व कविता पाठ भी हुआ।

आर्य सभा मधुपुर

—संथाल परगना जिला आर्य सभा का वार्षिकोत्सव एवम् चुनाव ३० जनवरी को नये विधान के अनुसार सम्पन्न हो रहा है।

आर्य समाज हावड़ा

—आर्य समाज हावड़ा का ५५ वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। नए वर्ष के लिए श्री पुस्कर लाल आर्य प्रधान, श्री गंगा प्रसाद उपप्रधान, श्रीसतीश चन्द मंत्री एवम् श्री नन्द किशोर सिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

सीतापुर आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव

—सीतापुर-यहाँ आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव विविध कार्यक्रमों के आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ।

उत्सव ६ जनवरी को प्रातः साढ़े सात बजे ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ। इस चार दिवसीय उत्सव में नगर कीर्तन, शोभायात्रा, भजन, प्रवचन, उपदेश, यज्ञ, संध्या एवं सांस्कृतिक आदि विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इन आयोजनों में आर्य भिक्षु, पं० युधिष्ठिर मीमांसक, श्री ओम प्रकाश शास्त्री एवं आचार्य श्री धर्मानन्द आदि विद्वानों के प्रवचनों से नगर की जनता लाभान्वित हुई।

इसी अवसर पर गत वर्ष कई मास से स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में चल रहे संस्कृत परीक्षण का दीक्षांत समारोह पुरातत्व राज्य संग्रहालय लखनऊ के निदेशक डा० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। दीक्षांत समारोह में १२० प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

ज्ञातव्य है कि आर्य समाज के इस वार्षिक समारोह का उद्घाटन उ० प्र० के खाद्य राज्य मंत्री सरदार कुलतार सिंह द्वारा किया गया था।

स्थानीय आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश अग्रवाल एवं मन्त्री श्री राम प्रसाद वर्मा ने समारोह की अति उत्तम व्यवस्था की थी।

वैदिक धर्म में प्रवेश

आवंला। यहाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धशताब्दी के अवसर पर जलीसा बेगम नामक एक युवती को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर उसका नाम सुशीला जानकी देवी रखा गया। उसका विवाह भी श्री बिहारी लाल मौर्य नामक एक उत्साही युवक से भारतीय शुद्धि सभा के श्री राम प्रसाद मिश्र (बरेली) ने सम्पन्न कराया।

स्वराज्य एवं महर्षि दयानन्द

— सुमेधा

सामान्यतः यह समझा जाता है कि ब्रिटिश राज्यसत्ता के विरुद्ध 'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' की घोषणा कर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने स्वदेश में स्वराज्य के मंत्र का उद्घोष ब्रिटिश शासन काल में सर्व-प्रथम किया था, किन्तु यदि आज से सौ वर्ष पूर्व के इतिहास पर तनिक गहन दृष्टिपात किया जाए तो यह तथ्य सुस्पष्ट हो जाता है महर्षि दयानन्द ही ब्रिटिश राज्य सत्ता के विरुद्ध स्वातन्त्र्य का शंखनाद करने वाले प्रथम महामानव महर्षि दयानन्द ही थे। उन्होंने आर्य जाति के लिए 'वेद' के समान ही स्वराज्य की भी महत्ता प्रतिपादित की थी। यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगी कि उनकी दृष्टि में 'स्वराज्य' की कीमत भी किसी भी अंश में वेद से कम न थी।

जन-जन में मातृभूमि भारत के प्रति श्रद्धा की भावना को जागृत करने के लिए ही उन्होंने सत्यार्थप्रकाश ११वें समुल्लास में लिखा था कि "यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है, क्यों यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है।"

इसी भाँति उन्होंने स्वदेश की पराधीनता पर भी अपनी मानसिक कथा-व्यथा को इन शब्दों में व्यक्त किया था "विदेशियों के आर्यावर्त में राज्य होने का कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्यान पढ़ना-पढ़ाना—बाल्वावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषण आदि कुलक्षण, वेद विद्या का प्रचार आदि कुकर्म हैं।" उन्होंने यह भी लिखा था कि "जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

स्वामी दयानन्द ने एक शताब्दी पूर्व ही जिस स्वराज्य की चर्चा की थी उसका स्वरूप भी अत्यन्त सरल, सीधे-सादे और सुस्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया था और उन्होंने कहा था कि कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, आप स्वयं दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" ज्ञातव्य है कि लोकमान्य तिलक ने स्वराज्य के जन्मसिद्ध अधिकार होने का दावा १९१६ में लखनऊ-कांग्रेस में किया था।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि वस्तुतः स्वामी दयानन्द ही स्वदेश में ब्रिटिश राज्यसत्ता के विरुद्ध स्वातन्त्र्य समर के प्रथम उद्घोषक एवं स्वराज्य के मंत्र द्रष्टा थे।

आज अनेक तथाकथित सुशिक्षित जन यह रट लगाने में भी पीछे नहीं रहते कि इस देश में राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय एकता तथा राजनीतिक चेतना का जागरण तथा स्वराज्य प्राप्ति की आकांक्षा विदेशी शिक्षा-दीक्षा का ही परिणाम है। किन्तु महर्षि दयानन्द का यह सौभाग्य था कि महर्षि दयानन्द अंग्रेजी भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ थे तथा संस्कृत का अध्ययन एवं संस्कृत ग्रंथों का स्वाध्याय ही उनकी अगाध विद्वता का आधार था। उन्होंने लन्दन के किसी विश्वविद्यालय से बैरिस्टरी की सनद नहीं ली थी न ही वह किसी विश्वविद्यालय के पी. एच. डी. अथवा डी. लिट् थे। किन्तु केवल संस्कृत के अध्ययन से अपनी ज्ञान गागर को भरने वाले इस तमः पूत महामानव के जीवन एवं दर्शन तथा चिंतन पर शोध कर अब तक अनेकों मेधावी जन उपरोक्त डिग्रियों का उपार्जन कर बैठे हैं।

स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रवाद की शिक्षा दीक्षा ऋषि-मुनियों के आप्त वचनों से प्राप्त की थी। उन्होंने अथर्व-वेद के एक मन्त्र "यदजः प्रथमं सवभूव, सह स्वत्स्वराज्य-मियाय। सस्मन्नान्यत्परमस्ति भूतम" का अर्थ इन शब्दों में किया था। जबकि कर्मयोगी प्रजागण सबसे प्रथम संगठित होता है, तब वह स्वराज्य प्राप्त करता है, जिससे श्रेष्ठ कोई दूसरा राज्य नहीं है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने एक शताब्दी पूर्व ही लोकमान्य तिलक की स्वराज्य घोषणा से कई वर्ष पहले यह सुस्पष्ट कर दिया था कि स्वराज्य के लिए सर्वप्रथम संगठन अपेक्षित है। इसके साथ ही उन्होंने इस तथ्य को भी दासता की शृंखला में जकड़ी भारतीय जनता के समक्ष यह तथ्य भी सुस्पष्ट कर दिया था कि 'सुराज्य' से स्व-

(शेष पृष्ठ ४२ पर)

देश विदेश की राजनीतिक गति-विधि

—"दिव्यचक्षु"

जगजीवनराम का कांग्रेस विद्रोह

२ फरवरी को भारत सरकार के वरिष्ठतम मंत्री श्री जगजीवनराम ने न केवल सरकार से त्यागपत्र दिया बल्कि कांग्रेस की सदस्यता भी छोड़ दी तथा लोकसभा के आगामी चुनाव में अलग से चुनाव लड़ने की घोषणा की। उन्होंने उस दिन पत्रकारों को जो संयुक्त वक्तव्य दिया गया, उस पर दो भूतपूर्व मुख्यमन्त्रियों—श्री हेमवती-नन्दन बहुगुणा एवं श्रीमती नन्दिनी सत्पथी तथा सर्वश्री के० आर० गणेश, द्वारिका नाथ तिवारी एवं राजमंगल पाण्डे के हस्ताक्षर थे। श्री जगजीवनराम के इस विद्रोह की खबर देश भर में आग की तरह फैल गई। कई समाचार पत्रों ने विशेष संस्करण प्रकाशित किए। कांग्रेसी नेताओं एवं कार्यकर्ताओं, विरोधी दलों के नेताओं, सर्व साधारण जनता की ओर से बधाइयों का तांता लग गया। इतनी लम्बी अवधि से जो घुटन सभी अनुभव कर रहे थे, उसे अभिव्यक्ति मिली। जगजीवन बाबू के घर पर बधाई देने वालों की भीड़ लगने लगी। उन्हें समर्थन देने के लिए ट्रकों पर लाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। सभी के हृदयों से उनकी आंखों से, उनके मुख से एक ही आवाज थी— नादिरशाही अधिनायकवाद से मुक्ति की मांग थी।

जगजीवन बाबू ने ६ फरवरी की महती सभा में अपने त्याग पत्र के सम्बन्ध में जनता के मन में उठने वाले प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा कि अगर उन्होंने १८ जनवरी के पहले त्यागपत्र दिया होता तो चुनाव की घोषणा ही नहीं होती और अगर २ फरवरी को निश्चित समय के दो मिनिट पहले भी प्रधानमंत्री को इसका पता चल जाता तो उनका क्या हश्र होता, इसकी कल्पना की जा सकती है।

जगजीवन बाबू के साथ यद्यपि कांग्रेस का बहुत बड़ा वर्ग निकलकर नहीं आया है फिर भी उनके प्रति जो सहानुभूति के भाव लोगों के हृदयों में जागृत हुआ है, उससे सत्तारूढ़ दल में बेचैनी हो गयी है। पूर्व घोषणा के विपरीत वे लोकसभा के सदस्यों में से अधिकांश को पुनः टिकट दे रहे हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्रियों एवं कांग्रेस अध्यक्षों को पुनः सम्मान का स्थान मिल गया है और यह दिखाने की पूरी चेष्टा हो रही है कि केन्द्रीय चुनाव समिति ही टिकट देती है, न कि एक व्यक्ति।

× ×

जनता पार्टी का चुनाव अभियान

१८ जनवरी को प्रधानमंत्री श्री मती गांधी ने चुनाव की घोषणा तथा १९ महीनों से जेलों में बन्द नेता धीरे-धीरे छोड़े जाने लगे। एक सप्ताह के ही भीतर चार प्रमुख विरोधी दलों ने मिलकर संयुक्त रूप से चुनाव लडने के लिए जनता पार्टी का गठन कर लिया। न नाम के लिए झगड़ा हुआ और न झंडे के लिए और न चुनाव चिह्न के लिए। सभी के सामने एक ही प्रश्न था—कांग्रेस के विरोध में एक ही उम्मीदवार रहे ताकि वोट बंट न जाये और उसे पराजित किया जा सके। दूसरे सप्ताह से देश भर में राज्य समितियां बन गयीं तथा ३० जनवरी को दिल्ली, कानपुर, पटना, जयपुर, बम्बई में चुनाव अभियान भी प्रारम्भ हो गया। सत्तारूढ़ दल के पास साधनों की कमी नहीं थी। उन्हें नया दल नहीं बनाना था फिर भी वे पिछड़ गये और एक सप्ताह बाद दिल्ली में चुनाव प्रारम्भ कर सके—अन्य प्रदेशों में अभी बाकी ही है।

जनता पार्टी को जनसमर्थन कितना प्राप्त हुआ है, इसका प्रमाण उस समय मिला जब ३० जनवरी की सभा के बाद स्वयंसेवकों ने उपस्थित जनसमूह से सहायता की मांग की। लगभग ४०,०००/-वापस जाती हुई जनता ने प्रसन्नतापूर्वक दे दिया। जिन प्रदेशों में चारों दलों में किसी का भी प्रभावी कार्य नहीं था, वहां के भी क्षेत्रीय दल जनता पार्टी की सहयोग की कामना करने लगे। जनता पार्टी को जो देशव्यापी समथन मिला है, उसे देख कर कांग्रेसी टिकटों के प्रत्याशियों में एक सिहरन दौड़ गयी है और वे अब पहले की तरह अपनी सीटों को सुरक्षित नहीं समझते हैं। अभी जो उत्साह की लहर चल पड़ी है, उसे अगर ठीक ढंग से संभालकर रखा गया तथा दृढ़तापूर्वक सुनियोजित ढंग से काम हुआ, तो चुनाव में प्रभावी परिणाम हो सकेंगे।

× ×

कम्युनिस्ट पार्टी—कांग्रेस अपवित्र गठबंधन

२३ दिसम्बर को प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की जितनी तीव्र आलोचना की थी और बाद में कांग्रेसी छुटभैयों ने कम्युनिस्ट नेताओं को देशद्रोही, अंग्रेजों का जासूस आदि उपाधियों से विभूषित

किया था, उसके बाद भी कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस का हाथ पकड़ कर चुनाव लड़ेगी, इसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता था। विदेश के इशारे पर चलने वाली पार्टी का यही श्रेय होता है। इतनी दुलत्तियाँ खाने के बाद भी वे कांग्रेस से विभिन्न प्रदेशों में कुछ अधिक सीटों की याचना कर रहे हैं। केरल में तो पहले से संयुक्त मोर्चा कायम ही था परन्तु बंगाल में लोकसभा की ८ सीटें उनके लिए कांग्रेस ने छोड़ दी है तथा बिहार एवं पंजाब में कुछ सीटें उन्हें मिल जायेंगी, यह निश्चित है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी कितनी सिद्धान्तविहीन पार्टी है, इसका पता इसी बात से चलता है कि २ फरवरी को जब जगजीवनराम जी ने कांग्रेस छोड़कर नई पार्टी बनाने की घोषणा की तो उन्होंने उसका स्वागत किया और हर प्रकार से सहयोग की बात कही। परन्तु जैसे ही कांग्रेस की ओर से दो टुकड़े फेंके गए, वह उस पर टूट पड़ी और जगजीवनराम की नई पार्टी को प्रतिक्रियावाद की भंवरजाल में फंसी हुई घोषित कर दिया।

कम्युनिस्ट पार्टी का एक वर्ग अभी भी कांग्रेस का सहारा नहीं लेना चाहता है परन्तु विदेशी आकाओं के आदेश की अवहेलना करने की हिम्मत किसमें है?

× ×

राजधानी में चुनाव अभियान

विभिन्न दलों की ओर से अभी तक प्रत्याशियों की अधिकृत घोषणा नहीं होने के कारण चुनाव अभियान में वह गर्मी नहीं आई है फिर भी ५ एवं ६ फरवरी को रामलीला मैदान में सत्तारूढ़ दल एवं जनता पार्टी की ओर से जो दो सभायें आयोजित की गई, उसकी सर्वत्र चर्चा है। ५ जनवरी की सभा को दिल्ली प्रदेश कांग्रेस ने आयोजित किया था तथा चुनाव अभियान का उद्घाटन युवक कांग्रेस के नेता संजय गांधी करने वाले थे। एक दिन पूर्व अचानक यह निश्चित हुआ कि श्रीसंजय गांधी के स्थान पर प्रधानमंत्री स्वयं चुनाव अभियान का श्रीगणेश करेंगी। दुकानदार संघों, व्यापारी एसोसियेशनों की ओर से कारोबार को बन्द करने की घोषणा की गई। दिल्ली के विभिन्न उपनगरों से ही नहीं बल्कि मेरठ, गुड़गाँव, रोहतक आदि से भी श्रोताओं को मुफ्त लाने की व्यवस्था की गई। विशाल सभा हुई परन्तु भीड़ तो भीड़ ही ठहरी—दर्शन के लिए आई थी और दर्शन कर वापिस जाने के लिए उतावली सी हो गई। प्रधानमंत्री के भाषण प्रारम्भ करने के काफी पहले ही दो-तीन बार भीड़ ने घेरा तोड़कर बाहर जाने की चेष्टा की। विदेश मंत्री चव्हाण साहब को ४ मिनिट में ही अपना भाषण समाप्त करना पड़ा। प्रधानमंत्री भी ३० मिनट ही बोल सकीं और कांग्रेस अध्यक्ष बोल ही नहीं पाये क्योंकि प्रधानमंत्री के भाषण के बाद जनता रुकने के लिए तैयार नहीं थी। इतना ही नहीं कि उपस्थित भीड़ की सभा में बातें नहीं आने के कारण वह अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त नहीं कर पाती थी और मंच पर ताली बजाने के बाद भी समुचित उत्तर नहीं मिलता था।

६ जनवरी की सभा में जनता को लाने के लिए ट्रकों की कोई व्यवस्था नहीं थी। चारों ओर से जनता समुद्र की लहरों की तरह, रामलीला मैदान की ओर बढ़ रही थी। पूरा मैदान भर गया तब दोनों ओर की सड़कों पर लोग इकट्ठे होने लगे। इतनी अधिक उपस्थिति आज तक रामलीला मैदान में कभी नहीं देखी गई। इतना ही नहीं उपस्थित जनसमूह नेताओं के भाषणों में इतना समरस हो गया कि उनकी हर एक वाक्य पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती थी। सभा छोड़ किसी के बाहर जाने का प्रश्न ही नहीं था। सभा समाप्त होते-होते तक तो टोलियाँ बनाकर मीलों पैदल चलकर लोग आते ही जा रहे थे। सभी के मुख पर एक ही आवाज थी—जनता पार्टी जिंदाबाद। १९ महीनों तक घुटन को जनता तोड़कर फेंक देना चाहती थी। खुली हवा में सांस लेना चाहती थी। जनता पार्टी के नेताओं की अपील पर उसने उस यज्ञ में अपने सामर्थ्य के अनुसार समिधा १,०७,००० समर्पित कर दी।

इन दोनों चुनाव सभाओं का देश-विदेश सभी में व्यापक प्रभाव हुआ है और इसे भविष्य का संकेत मानने लगे हैं। ★

भारत के राष्ट्रपति श्री फखरूद्दीन अली अहमद का देहान्त

११ फरवरी प्रातः ८-५२ पर अचानक भारत के राष्ट्रपति का देहान्त हो गया। परमात्मा उनके परिवार को शांति प्रदान करे। —सम्पादक

घोषणा : चुनाव पर

आर्यसमाज का किसी भी राजनैतिक दल से सम्बन्ध नहीं। प्रत्येक आर्य सभासद को अपनी पसन्द के प्रत्याशी को मत देने का अधिकार है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मन्त्री महाशय भरतसिंह जी ने अपने प्रेस वक्तव्य में कहा है कि सारे भारत-वर्ष में मार्च में जो लोकसभा के चुनाव हो रहे हैं, उसके लिए प्रत्येक आर्य सभासद को अपनी-अपनी पसन्द के प्रत्याशी को अपना मत देने का अधिकार है, क्योंकि आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रस्तावानुसार आर्यसमाज का किसी भी राजनैतिक दल से कोई सम्बन्ध नहीं है। आर्यसमाज एक धार्मिक संस्था है। विभिन्न राजनैतिक विचारधारा रखने वाले प्रत्येक भाई-बहन के लिए समाज के द्वार खुले हैं।

आपने हरियाणा के आर्य समाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा है कि वर्तमान चुनाव में किसी भी राजनैतिक दल को आर्यसमाज मन्दिरों तथा शिक्षण संस्थाओं को राजनैतिक अखाड़ा न बनने दिया जाये। आर्यसमाजों के उत्सवों पर किसी भी राजनैतिक दल के प्रत्याशी के पक्ष तथा विरोध में व्याख्यान न कराये जायें। वैदिक सिद्धान्तों तथा सामाजिक सुधार पर ही व्याख्यान तथा भजन होने चाहिएँ।

१६ फरवरी को शिवरात्रि का पर्व आ रहा है। अतः आर्यसमाजों को इस पर्व पर ऋषि बोधोत्सव के रूप में उत्साहपूर्वक मनाते हुए ऋषि दयानन्द की जीवनी तथा आर्य समाज के सिद्धांतों पर व्याख्यान कराये जावें तथा आर्य समाज के साहित्य का वितरण किया जावे। प्रातः प्रभात फेरी तथा सामूहिक यज्ञ का भी आयोजन करें।

आर्य कभी गुलाम नहीं रहे

जो लोग ऐसा कहते हैं कि भारत के आर्यों ने सात सौ साल मुगलों की और दो सौ साल अंग्रेजों की गुलामी की है और हमारा देश गुलाम था—उन लोगों का यह कहना असत्य है। आर्यों ने कभी भी अंग्रेजों की गुलामी को स्वीकार न कर अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया—संघर्ष करना क्या गुलामी का द्योतक है—यदि हम अंग्रेजों से उस समय पर संघर्ष न करते तो हम मान सकते थे कि हम गुलाम थे। पहला संग्राम महर्षि दयानन्द ने अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए किया। १६ बार इस देश की रक्षा के लिये जहर पिया और सारे देश को आवाहन करते हुए कहा—कि माता की तरह प्यार करने वाला विदेशी राजा भी अच्छा नहीं होता, इनके पश्चात् इन्हीं की प्रेरणा से प्रभावित होकर स्वामी श्रद्धानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह, पं० लेखराम लाला लाजपतराय आदि ने इस महान् यज्ञ में अपने शरीरों की आहुति दी और कुछ वीरों को आजीवन देश निकाला मिला। वर्तमान युग में यह जागृति महर्षि स्वामी दयानन्द की थी और इसी जागृति तथा स्वतन्त्रता का श्रेय महर्षि स्वामी दयानन्द को है।—**ओमप्रकाश उपाध्याय**

(शेष पृष्ठ ३९ का)

राज्य अधिक श्रेष्ठ है।

उल्लेखनीय है कि कांग्रेस उस समय यह वादे जता रहे थे कि उनका राज्य मत-मतान्तरों के आग्रह से रहित है और उसमें अपने पराए का किसी प्रकार का पक्षपात भी नहीं बरता जाता। अपने न्यायालयों में किए जाने वाले न्याय की दुहाई भी ब्रिटिश राज्याधिकारी प्रायः दिया करते थे। इतना ही नहीं उनका तो यह भी कथन था कि ब्रिटिश शासन प्रजा का माता-पिता के तुल्य पोषण कर रहा है। किन्तु महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम यह उद्घोष किया था कि विदेशी राज्य चाहे कितना भी सुखदायक हो किन्तु स्वदेशीय राज्य अर्थात् स्वराज्य ही सर्वोपरि एवम् उत्तम है। वस्तुतः महर्षि दयानन्द ने उज्जवल राष्ट्रवाद को जन-जन में प्रसारित करने का प्रयास किया था और उन्होंने अपने अनुयायियों में यह भावना जगाई थी कि उनका कोई भी विदेशी राज्य का भक्त न हो सके।

उन्होंने स्वदेशवासियों में दासता के प्रति तीव्र घृणा के भावों को जगाने का एक ठोस प्रयास किया था और उनके सम्पर्क में आने वाले अनेक मनीषियों ने उनके श्री चरणों में बैठकर स्वराज्य के मंत्र का पाठ किया था तो सत्यार्थप्रकाश का पारायण करने वाले अनेक ऋषि भक्त भी स्वराज्य आंदोलन के सूत्रधार बने थे। उन्हीं के पटु शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने क्रांतिकारी को दिशा दान दिया था, तो आर्य समाज के अनन्य नेता लाला लाजपतराय, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द एवं क्रान्ति यज्ञ के प्रबल पुरोधा भाई परमानन्द एवं अमर हुतात्मा राम प्रसाद बिस्मिल भी स्वराज्य के लिए अपने शीश हथेली पर धर कर समरांगण में उतरे थे और बिस्मिल सरीखे क्रांतिकारी आर्य युवक के सम्पर्क में आकर ही अमर शहीद अशफाकुल्ला ने भी स्वराज्य के लिए आत्माहुति की प्रेरणा पाई थी।

वस्तुतः महर्षि दयानन्द ही ब्रिटिश राज्य सत्ता के विरुद्ध स्वातन्त्र्य समर के प्रथम उद्घोषक थे।

३०१) भेजकर "जन-ज्ञान" के आजीवन सदस्य बनिए

२८-२-७७ तक सदस्य बनने वालों को १५०) का साहित्य मुफ्त और जीवन भर अंक मिलता रहेगा।

---

३ वर्ष का शुल्क ६०) एक साथ भेजकर सामवेद भाष्य उपहार में लें।

शिवरात्रि पर भारी संख्या में मँगाएँ

१—महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र		मूल्य २)
२—संक्षिप्त जीवनी		,, २० पैसे
३—श्रीमद्दयानन्द प्रकाश		सजिल्द मूल्य ८)
(स्वामी [illegible]नन्द कृत)		
४—बाल सत्यार्थ प्रकाश		मूल्य २)५०
५ वेदांजलि		सजिल्द मूल्य १५)
६—गीता का योग परक भाष्य पं० आर्यमुनिकृत		सजिल्द मूल्य १५)
७—सामवेद आध्यात्मिक भाष्य—पं० विश्वनाथ जी कृत		सजिल्द ,, १५)
८—वेदामृत	श्री सातवलेकर जी	,, ,, ८)
९—वेद-ज्योति	चारों वेदों के शतक	,, ,, ६)
१०—दयानन्द चित्र दर्शन		,, ,, २०)
११—डायरी १९७७		,, ,, ६)

१००) से अधिक का माल मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन व डाक-व्यय माफ। ३००) से अधिक का माल मंगाने पर ३३ प्रतिशत कमीशन दैनिक डाक-व्यय माफ १/४ धन अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें —

अध्यक्ष—दयानन्द संस्थान वेद मंदिर

नई दिल्ली-५

मुद्रक—प्रकाशक—सम्पादक—पं० राकेश रानी द्वारा भाटिया प्रेस में छपा।

जन-ज्ञान (साप्ताहिक)
ाव मन्दिर, १५६७ हरध्यानसिंह मार्ग
ई दिल्ली-११०००५ । दूरभाष : ५६६६३६/२०१५८४

रविवार
शिवरात्रि
१९७७

रजि० न०
D (C) 619

जन ज्ञान (मराठी) मासिक के विमोचन समारोह में संस्थान के कार्यकर्ता व विद्वान श्री क्षेमचन्द्र सुमन, पं० भारतेन्द्र नाथ, प्रो० रत्नसिंह, आचार्य उदयवीर शास्त्री, डा० रघुवीर, कु० आभा-सुमेधा -

नीचे बठे हैं श्री रमेश, श्री राजेन्द्र कुमार, श्री जयप्रकाश, श्री नन्दकिशोर व श्री रामाधार